

॥ श्री ॥

श्री नीयेनेमभावा

स्तवन संग्रह.

अनेक ग्रन्थों में संग्रह करके रचित किया है ।

जिमें—

रतलाम (मालवा) निजामी श्रीमान् दानवीर राय
बहादुर श्रेष्ठवर्य श्रीकेशरीसिन्हाजी साहब
की आज्ञामें

प्रसिद्धकर्ता—

श्रीजगन्मयुग प्रधान श्रीजिनदत्तमूरी आनन्दचंद्र पाठशाला
के मेम्बर श्री मुनीम पद्मालालजी दामोदर व सेक्रेटरी
श्रीहसरामजी लालन ने

श्री जेन प्रभाकर प्रेम रतलाम में छपाकर प्रगट की

— # २५ # —

धीर स्वाम २४२५ विक्रम समत् १९७६

प्रथमवार
१०००,

निहारावल
III)

चूमिका-

यह "स्तवनमंग्रह" नाम का ग्रन्थ अतिपरिश्रम से भगवद्भक्तजनों के उपकार के लिए अनेक ग्रन्थ समुद्रों से सार सार एकत्र कर-संचेपरूप में रचित किया गया है। उन स्तोत्रों का नाम-निर्देश संचेपरूप तथा फल, उस तरह है-श्रीजैनधर्म का प्रधान "नवकारमन्त्र" जो सर्व मंगल देनेवाला है। तथा-"नवग्रहस्तोत्र" कर्मानुसार जगत्के सुखदुःख के नियम कर्ता ऐसे रेखर (नवग्रह) जिनभगवान्‌रूप है उन्हीं के स्तुतिपूजन से सकल शान्ति होती है ऐसा पञ्चमश्रुतकेवली भद्रबाहुस्वामी ने कथन किया है। तथा-"धम्मो मंगल" स्वाध्याय इस का फल-जिस मनुष्य का मन सदा धर्म में रहता है उस पुरुष का देवता भी नमस्कार करते हैं। तथा-"जिनपञ्जरस्तवन" का फल-श्रंगो की रक्षा जैसे करके कर्ता है ऐसेही प्रत्येक श्रंगो में जिन भगवानों के नाम उच्चारणकर रक्षा करने पर सकल बाधा शान्त होती है। सपूर्ण लङ्कमी का वह पुरुष आश्रय होजाता है सतानों की वृद्धि होती है। तथा-"लघुजिनमहस्रनामस्तवन" अति शान्तिदायक है पठन कर्ता इन्द्रदेव से वन्दनीय होजाता है। तथा-"श्रीशीतलजिनस्तोत्र" नामोच्चारणही से शान्ति देने वाला है। तथा-"श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र" की महिमा स्तोत्र पाठ करने से ही मालूम होगी। तथा-"श्रीपरमात्मस्तोत्र" चिदानन्दरूपवीतराग भगवान् की महिमा का प्रतिपादक किमको पाठकरने में प्यारा नहीं मालूम होगा। तथा-"नमस्कारस्तोत्र" मद्गलरूप है। तथा-अन्तिमतीर्थकर श्रीभगवान् महावीर जिन का छंद-गान करने में अतिप्रिय है। तथा-नवकारमन्त्र के दोहे अत्यन्त मनभावन है। तथा-"श्रीनवकारमन्त्र आत्मरक्षास्तोत्र"

संपूर्ण व्याधि नाशक है । “ श्रीवृहत्शान्ति ” सर्वसाधारण मनुष्य को अत्यन्त रोज करना उचित है । सर्वस्तोत्रों का माहात्म्य लिखने में भूमिका बड़ी होजायगी-इस्से संक्षेप में समाप्त करदी है । महाशय लोग दयाकर क्षमा करेंगे ।

“ स्वामेभि सव्वे जीवा, सव्वे जीवा स्वमन्तु मे ।

मिच्छी मे सव्व भूएसु,वेरं मज्झ न केण वि ॥ १ ॥ ”



॥ सूचिपत्रम् ॥

	पृष्ठ
णवकारमंत्र-‘णमो अरिहताणं,	१
जगद्गुरुनवग्रहस्तोत्र-‘जगद्गुरुं नमस्कृत्य,	१
धम्मो मंगलस्त्राध्याय-‘धम्मो मंगलमुक्किट्ठ,	३
जिनपञ्जरस्तोत्र-‘ॐ ह्रीं श्रीं अर्हं अर्हद्भ्यो नमो नमः,	३
लघुजिनमहस्त्रनाम-‘नमस्त्रिलोकनाथाय,	६
श्रीशीतलजिनस्तोत्र-‘सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं,	१०
श्रीपार्श्वजिनस्तोत्र-‘विशद्गुणविचित्रं सच्चरित्रं दधानो,	११
श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तोत्र-‘यस्य ज्ञानदयासिन्धो,	१२
श्रीविनिधयमरुयुक्तश्रीपार्श्वजिनस्तोत्र-‘लक्ष्मीनिदान,	१३
श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनस्तोत्र-‘गौडीग्रामे स्तम्भने चास्तुतीर्थे,	१४
श्रीपार्श्वजिस्तोत्र-‘विशद्गुणराजिविराजितं,	१५
श्रीपरमात्मस्तोत्र-‘शिवं बुद्धबुद्ध परं विश्वनाथ,	१५
नमस्कारस्तोत्र-‘दर्शनं देवदेवस्य,	१७
श्रीमहावीरजिनछन्द-‘सेवो वीरने चित्तमां नित्यधारो,	१८
णवकारनो छन्द-‘वद्धितपूरे विविधपरं,	२१
पुनः णवकार छन्द-‘सुखकारणं भवियणं समरुं श्रीनवकार,	२४
श्रीणवकारमन्त्र आत्मरक्षा-‘ॐ परमेष्ठी नमस्कार,	२५
श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिनछन्द-‘सेवो पाशं शस्त्रेसरो मनशुद्धे,	२६
श्रीगौतमाष्टक छन्द-‘वीरं जिणेषरकेरो शीशं,	२८
श्रीशोलसती नो छन्द-‘आदिनाथ आदे जिनवर वंदी,	२६
श्रीतीर्थमालास्तवन-‘शेजुजय ऋषभ समोसरया,	३१

	पृष्ठ
श्रीवृद्धशान्ति-‘भो भो भव्याः शृणुत वचन प्रस्तुतं सर्वमेतत्,	३३
सकलतीर्थवन्दना-‘सकल तीर्थ वंदू करजोड,	४०
शिवकारस्तवन-‘श्रीनवकार जपो मनरंगे,	४२
श्रीगौतमस्वामी अष्टक-‘प्रह उठी गौतम प्रणमीजे,	४३
श्रीचिन्तामणिपार्श्वनाथ स्तवन-‘आणी मनसूधी आसता,	४४
श्रीमङ्गलचार-‘सिद्धार्थ भूपति शोहे कृत्रियकुण्डे,	४५
श्रीभीडभञ्जन पार्श्वनाथ छन्द-‘भीडभंजन प्रभु भीडभंजन सदा,	४८
श्रीगौतमगुरुप्रभात छन्द-‘जयो जयो गौतम गणधार,	४९
श्रीपार्श्वनाथ छन्द-सकल सार सुरतरु जगजाणं,	४९
श्रीगोडीपार्श्वनाथ छन्द-‘धवलधींग गोडीधणी,	५१
श्रीचोत्रीसअतिशयनो छन्द-‘श्रीसुमतिदायक दुरितघायक,	५३
श्रीशिखामणनो छन्द-‘वरदायक माय सलाम करी,	५५
श्रीएकादश गणधरना नाम-‘एकादश गणधरना नाम,	५७
श्रीगौतम प्रभाति स्तवन-मातपृथ्वी सुत प्रात उठी,	५८
श्रीदोधक बावनी-‘ॐ यह अक्षर सार है,	५९
ज्वर (ताव) छन्द-‘ॐ नमो आनन्द पुर नगरे.	६५
क्रोधमान माया लोभनो छन्द-‘पहेला सरस्वतीनुं लीजे नाम,	६७
सरस्वती अष्टक-‘बुद्धि विमलकर नावबुधवर,	७१
श्रीमङ्गलाष्टक-‘मङ्गलं भगवान् वीरो,	७३
श्रीभीडभञ्जन पार्श्वनाथ छन्द-‘वारुविश्वमाँ देश काशीविराजे,	७५
श्रीआदिजिनेशरको पारणो-‘आदिजिनेशर कियो पारणो,	७६
श्रीमहावीरस्वामीको पारणो-‘श्रीअरिहंत अनंतगुण,	७६
श्रीपञ्चावती आलोयणसज्जाय-‘दिवे राणी पदमावती,	८३

	पृष्ठ
श्रीमर्वपापादिक आलांयणस्तवन-‘वेकरजोडी विनवू जी,	८७
क्रोधनी सज्भाय-‘कडवा फल छे क्रोधना,	९१
श्रीमाननी सज्भाय-‘रे जीव ! मान न कीजिए,	९२
श्रीमायानी सज्भाय-‘समकित नुँ मूल जाणियेजी,	९२
श्रीलोभनी सज्भाय-‘तुमे लक्षण जो ज्यो लोभनारे,	९३
श्रीगोडीपार्श्वनाथ जिनस्तवन-‘श्रीजिनवदन निवासना,	९४
ढाल १-‘देसां श्रीहर देश छे काशी,	९५
ढाल २-‘श्रीसंखेसर पामजिनेसर,	९६
ढाल ३-‘इणीयज भरत सुक्षत्रमे,	९७
ढाल ४-‘तुरफाने दामटिया पांचसो,	९६
ढाल ५-‘एकं दिन काजल भाखे मेघने,	१०२
ढाल ६-‘सुणो सुगुण सनेहा सेठजी,	१०४
ढाल ७-‘काजल सहू लोकानी सारें,	१०५
श्रीसिद्धगिरिस्तवन-‘ते दिन क्यारे आवसी हे,	११०
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘आज आपे चालो सहियो,	१११
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘श्रीचदा प्रभु पाहुणो रे,	११२
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘अंगडभावो मोने अतिघणो,	११४
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘जात्रा निनाणुं करिए विमलगिरी,	११५
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘आज बगई म्हारे रगवधार्द,	११६
पुनः सिद्धगिरिस्तवन-‘भावधर धन्यदिन आज सफलो,	११८
वैराग्यपद-‘ऊठाने मेरा आनमराम,	११८
श्रीअष्टपभजिनस्तवन-‘भज मन ! नाभिनन्दनदेव,	११९
वैराग्यपद-‘घडी २ पल २ छिन २ निशादिन,	१२०

वैराग्यपद—‘रसना सफल भई,	१२०
वैराग्यपद—‘सोई सोई सारी रेन गुमाई,	१२१
पुनः वैराग्यपद—‘कहा कीनो नर भव पाके,	१२१
पुनः वैराग्यपद—‘रे मन क्युँ जिननाम विसारयो,	१२२
कुमतिमुखवज्रचपेटका । अथवा-ननवमुख—‘कुमति हट तजो,	१२३
श्रीअजितजिनस्तवन—‘अजित जिन लगन लगी सो लगी,	१२६
श्रीगौडीपार्श्वजिनस्तवन—‘श्रीमत गवडी पार्श्वजिनेश्वर,	१२६
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘शान्ति जिनंदा मुभविनी,	१२७
श्रीऋषभजिनस्तवन—‘रिषभ जिन तुम सम नाँही,	१२८
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘अहो सुखकंद पार्श्वजिनचंद,	१२६
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘एक अरज अवधारियेरे,	१३०
श्रीसिद्धगिरिस्तवन—‘सेत्रुंजा नो वासी प्यारो लागे म्हारा,	१३१
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘चित्त चावो सेवा चरणकी,	१३२
श्रीशान्तिजिनस्तवन—‘अष्टा षट्को जपरलो प्रसादके,	१३२
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘सामि सोभागी साँभलो,	१३३
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘भिर गिर वरमे अहेहो लाल,	१३५
श्रीचिन्तामणिपार्श्वजिनस्तवन—‘आज आशंद घन उमड्यो रे,	१३७
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘अश्वसेखजीरा छावा हो अलवेसर,	१३७
श्रीपार्श्वजिनस्तवन—‘प्रभु पास जिणंद की शोभारे चालो,	१३६
वैराग्यपद—‘पिउड़ा जिन चरणरी सेवा मीठी मानु लागे,	१४०
वैराग्यपद—‘चेतनं तू क्या फिरे भूला,	१४१
श्रीशत्रुंजयरास—‘श्रीरिसहेसर पायनमी,	१४१
ढाल ?—‘शत्रुंजयने श्रीपुंडरीक,	१४२

	पृष्ठ
ढाल २-‘केवलज्ञानी प्रथम तीर्थकर,	१४३
ढाल ३-‘शत्रुजाना कहँ शोलउद्वार,	१४५
ढाल ४-‘भरत तणे पाट आठमें,	१४७
ढाल ५-‘शत्रुंजे गया पापछूटिये,	१५१
ढाल ६-‘सप्रति काले सोलमो ए,	१५२
श्रीगौतमरास-‘वीरजियोसर चरण कमल कमला कयवासो,	१५५
गौतमस्वामी की प्रभाती-‘राग प्रभाती जे करे,	१६५
वैराग्यपद-‘समभ्र नर जीवन थोरो,	१६५
महावीरस्वामी स्तवन-‘मगध देश सुहावनो रे,	१६६
चारसरणा-‘मुझने चार सरणा होय जो,	१६८
आलोयण स्तवन-‘लाख चोरासी जीव समावीए,	१६६
आलोयण स्तवन-‘पाप अठारे जीव ! परिहरो,	१६६
वैराग्यपद-‘धन धन तेह दिन मुज्झ कटी होमे,	१७०
अजितनाथ लावणी-‘अजित नाथ महाराज गरीव निवाज,	१७०
धूलिभद्रऋषिनवरमा-‘सुखसंपत्तिदायक सदा,	१७१
ढाल १-‘मने मारा वाप ना समझो,	१७२
ढाल २-‘आव्यो आसाढो मासरे,	१७६
ढाल ३-‘म्हारा मन माहीं लागे मीठो रे,	१७८
ढाल ४-‘म्हेतो जोग तुम्हारो जाण्यो रे,	१८१
ढाल ५-‘मेहसुँ माट्यो वाद माननी तरसेरे,	१८२
ढाल ६-‘तु स्याने करे छे चालारे,	१८४
ढाल ७-‘सांभली ताहरा वयण,	१८६
ढाल ८-‘मे परणी सजमनारी रे,	१८८

- ढाल ६-‘पामिने प्रतिबोध, कोश्यारे कोश्यान्नत उचरे रे, १६१
- शीयलनववाड-‘श्रीनेमिश्चर चरण जुग, १७२
- ढाल १-‘शीलसुतस्वर सेविये, १६३
- ढाल २-‘भावधरि नित्य पालिये, १६४
- ढाल ३-‘जाति रूप कुल देशनी रे, १६५
- ढाल ४-‘तीजी वाडी हिवे चित्तविचारो, १७७
- ढाल ५-‘मनहर इन्द्री नारीना दीठा वाधे विकार, १६८
- ढाल ६-‘वाडी हिवे सुणी पां वमीरे शीलतणी रखवाल, १६९
- ढाल ७-‘भर जोवन धनसामग्रीलही, २०१
- ढाल ८-‘ब्रम्हचारी सांभली वातडी, २०२
- ढाल ९-‘पुरुष कवल वत्रीस भोजन विधि कही, २०३
- ढाल १०-‘शोभा न करे देहनी न करे तणसिणगार, २०४
- ढाल ११-‘श्रीवीर दोइ दस परपदा मे, २०५
- श्रीआलोग्यणस्तवन-‘आदिश्वरपहिलो अरिहंत, २०६
- ढाल १-‘खाडण पीसण रांधणो रे सोवण जीमण ठाम, २०८
- ढाल २-‘गाम मुकाते मेलिया अकराकर कीध, २०९
- ढाल ४ (३)-‘इम अनरथ दंड लगायारे, २११
- भक्तिमार्ग नो कंटक-‘माया डांकरण दूरे भागी, २१३
- भक्ति रहितो नो उपालंभ-‘जिन मुख से प्रभु नाम न, २१४



॥ * ॥ श्री ॥ * ॥

॥ * ॥ श्रीवीतरागायनमः ॥ * ॥

॥ श्रीजिनदत्तसूरिसद्गुरुभ्यो नमः ॥

॥ अथ एवकार मंत्र ॥

॥ एमो अरिहंताणं ॥ १ ॥ एमोसिद्धाणं

॥ २ ॥ एमो आयरियाणं ॥ ३ ॥ एमो उवझा

याण ॥ ४ ॥ एमो लोएं सबसाहूणं ॥ ५ ॥ ए

सो पंच एमुकारो ॥ ६ ॥ सव्वपावप्पणासणो ॥

॥ ७ ॥ मंगलाणं च सबेसिं ॥ ८ ॥ पढंमं हवइ

मंगलं ॥ ए ॥ इति ॥ १ ॥

॥ अथ जगद्गुरु नव गृहस्तोत्र ॥

जगद्गुरु नमस्कृत्य । श्रुत्वा सद्गुरुजापितं ॥

ग्रहशांतिं प्रविख्यामि । लोकानां सुखहेतवे ॥ १ ॥

जिनेन्द्राः खेचराज्ञेया । पूजनीया विधिक्रमात् ॥

पुष्पैर्विलेपने धूपैः । नैवेद्यैः स्तुष्टिहेतवे ॥ २ ॥ पद्मप्रभ-

स्यमार्तण्डः । चन्द्र श्रृङ्गप्रजस्यच ॥ वासुपूज्योऽचूमिपु-

त्रो । बुधोऽप्यष्टजिनेश्वराः ॥ ३ ॥ विमलानंतधर्माणां ।

शांति कुंथुर्नमि स्तथा ॥ वर्धमानो जिनेन्द्राणां । पादप-
 द्मे बुध्न्यसेत् ॥ ४ ॥ ऋषन्नाजितसुपार्श्वा । श्चाग्निन्द-
 नशीतलौ ॥ सुमतिःसंभवःस्वामी । श्रेयांसश्चब्रह्मस्प-
 तिः ॥ ५ ॥ सुविधेःकथितःशुक्रः । सुव्रतश्चशनैश्वरः ॥
 नेमिनाथोऽजवेद्राहुः । केतुः श्रीमद्विपार्श्वयोः ॥ ६ ॥
 जन्मलयेचराशौच । यदा पीडंति खेचराः ॥ तदा
 संपूजयेद्धीमान् । खेचरैः सहितान् जिनान् ॥ ७ ॥
 पुष्पैर्गन्धादिभिर्धूपै । नैवेद्यैः फलसयुतैः ॥ वर्णसद्भ्रश
 दानैश्च । वासौर्निर्दक्षिणान्वितैः ॥ ८ ॥ ॐ आदित्य-
 सोम मङ्गल । बुधगुरुशुक्र शनैश्वरोराहु ॥ केतु प्रमुखा
 खेटा । जिनपतिपुरतोवतिष्टंतु ॥ ९ ॥ जिननामकृ-
 तोच्चार । देशनक्षत्रवर्णकै ॥ स्तुताश्चपूजिताऽक्तया ।
 गृहाः संतुसुखावहा ॥ १० ॥ जिनाना मगृतः स्थि-
 त्वा । ग्रहाणांतुष्टिहेतवे ॥ नमस्कार शतंभक्त्या ।
 जपेदष्टोत्तरं नरं ॥ ११ ॥ ऋषबाहु रुवाचेदं ।
 पंचमः श्रुतकेवली ॥ विद्याप्रवादतः पूर्वाद् । ग्रह-
 शांतिर्विनिर्मितः ॥ १२ ॥ इति श्रीनवग्रहशांतिका-
 रकजिनस्तोत्रं ॥ १ ॥

॥❀॥ अथ धम्मो मंगल स्वाध्याय ॥❀॥

॥❀॥ धम्मो मंगलमुक्किठं । अहिंसा संजमो तवो ॥
 देवावि तं नमंसंति । जस्स धम्मेसयामणो ॥ १ ॥
 जहा दुम्मस्सपुप्फेसु । जमरो आविअइरसं ॥ नय
 पुप्फ कित्तमेइ । सोअपीणेइअप्पयं ॥ २ ॥ एमेए
 समणावुत्ता । जेलो ए सति साहुणो ॥ विहंगमाव
 पुप्फेसु । ढाणत्तेसणेरया ॥ ३ ॥ वयंच वित्तिंल-
 व्जामो । नयकोईउवहम्मइ ॥ अहागरु सूरियंते ।
 पुप्फेसुजमरो जहा ॥ ४ ॥ महकारसमावुद्धा । जे
 जवंति अणिस्सिआ ॥ णाणापिंरयादंता । तेण
 वुच्चंती साहुणोत्तिवेमि ॥ ५ ॥ दुमपुप्फियानाम-
 झयणंसम्मत्तं ॥ ❀ ॥ इति ॥ ३ ॥



॥ अथ जिनपंजरस्तोत्र ॥

॥❀॥ ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं अर्द्धद्व्योनमोनमः ।
 ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं सिद्धेच्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं
 आचार्येन्योनमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं उपाध्याये-
 च्यो नमोनमः । ॐ ह्रीं श्रीं अर्द्धं श्रीगोतमस्वामि

प्रमुख सर्वसाधुज्यो नमोनमः ॥ १ ॥ एषः पंचनम
 स्कारः । सर्वपापह्यंकरः ॥ मंगलानांचसर्वेषां । प्रथ
 मं जवतिमंगलं ॥ २ ॥ ॐ ह्रीं श्रीं जएविजए । अर्ह
 परमात्मनेनमः ॥ कमलप्रजसूरिंद्रो । ज्ञाषते जिन
 पंजरं ॥ ३ ॥ एक जक्तोपवासेन । त्रिकालंयः पठे
 दिदं ॥ मनोभिलषितंसर्व । फलंसलभतेध्रुवं ॥ ४ ॥
 जूशय्या ब्रह्मचर्येण । क्रोधलोभविवर्जितः ॥
 देवताग्रेपवित्रात्मा । षण्मासैर्लजतेफलं ॥ ५ ॥
 अर्द्धतंस्थापयेन्मुर्द्धनि । सिद्धंचद्गुर्ललाटके ॥
 आचार्यं श्रोत्रयोर्मध्ये । उपाध्यायंतुघ्राणके ॥ ६ ॥
 साधुवृंदंमुखस्याग्रे । मनः शुद्धंविधायच ॥ सूर्य
 चंद्र निरोधेन । सुधिः सर्वार्थसिद्धये ॥ ७ ॥
 दक्षिणे मदनद्वेषी । वामपार्श्वे स्थितो जिनः ॥ अं-
 गसंधिषु सर्वज्ञः । परमेष्ठिशिवंकरः ॥ ८ ॥ पूर्वा-
 शांश्रीजिनोरद्वे । दाश्रेयिंविजितेद्रियः ॥ दक्षिणा
 शांपरंब्रह्म । नैऋतिंच त्रिकालवित् ॥ ९ ॥ प-
 श्चिमाशां जगन्नाथो । वायवींपरमेश्वरः ॥ उत्तरांतीर्थ
 कृतसर्वा । मीशानींचनिरंजनः ॥ १० ॥ पातालं-
 जगवा नर्ह । नाकाशं पुरुषोत्तमः ॥ रोहिणी प्रमुखा

देव्यो । रक्षन्तु सकलंकुलं ॥ ११ ॥ ऋष्योमस्तकंर-
 क्षे । दक्षितोपि विलोचने ॥ संचत्र. कर्णयुगलं ।
 नाशिकां चातिनंदनः ॥ १२ ॥ उष्टौश्रीसुमती
 रक्षेत् । दत्तान्पद्मप्रभोविभुः ॥ जिह्वां सुपार्श्व
 देवोयं । तालु चंद्रप्रभोविभुः ॥ १३ ॥ कठ
 श्रासुविधीरक्षेत् । हृदयं श्रीसुशीतलः ॥ श्रेयांसो वा-
 ह्युगले । वासुपूज्य. करद्वयं ॥ १४ ॥ अंगुली विम-
 लोरक्षे । दन्तनोसोस्तनावपि ॥ सुधर्मोप्युदरा स्थी-
 नि । श्रीशातिर्नाभिमंरुद्रं ॥ १५ ॥ श्रीकुंत्युर्गुह्यकंर-
 क्षे । दरोरोमकटीतटं ॥ मद्धिरूरूपृष्टिवंशं । जंघे-
 चमुनि सुवृत्तः ॥ १६ ॥ पादांगुलीर्निमीरक्षेत् ।
 श्रीनेत्रिश्ररणद्वयं ॥ श्रीपार्श्वनाथ.सर्वांगं । वर्द्ध-
 मानश्चिदात्मकं ॥ १७ ॥ पृथिवि जलतेजस्क ।
 वायवाकास मयंजगत् ॥ रक्षे दशेपपापेभ्यो ।
 पीतरागोतिरंजनः ॥ १८ ॥ राजद्वारेश्मशानेवा ।
 संग्रामेशत्रुसंकटे ॥ व्यावृत्तोरग्निपपादि । नृत्तप्रेत-
 जयाश्रिते ॥ १९ ॥ अकालमरणेप्राप्ते । दान्त्रिया
 परसमाश्रिते ॥ अपुत्रत्वेमहादोषे । मूर्खत्वेरोगपी-
 ग्निने ॥ २० ॥ नाकिनी शाकिनी गृध्ने । महा प्रद-
 गणार्दिने ॥ नयुत्तारे ध्यवैषम्ये । व्यसनेचापदि-

स्मरेत् ॥ ११ ॥ प्रातरेव समुत्थाय । यःस्मरेज्जिन
पंजरं ॥ तस्य किञ्चिद्भयं नास्ति । लक्ष्यते सुखसंपदं
॥ १२ ॥ जिनपंजरनामेदं । यःस्मरत्यनुवासरं ॥ कम-
लप्रजराजेन्द्रः । श्रियंसलक्षतेनरः ॥ १३ ॥ प्रातः—
समुत्थायपठेत्कृतज्ञो । यस्तोत्रमेतज्जिनपंजराख्यं ॥
आसादयेत्सः कमलप्रज्जाख्यं । लक्ष्मीं मनोवाञ्छितपू-
रणाय ॥ १४ ॥ श्रीरुद्रपल्लीयवरेण्यगहे । देवप्रजाचा-
र्य्यपदाब्जहंसः ॥ वादीन्द्रबूडामण्डिरेषजैनो । जी-
याद् गुरुः श्रीकमलप्रभाख्यः ॥ १५ ॥

॥ ❁ ॥ इति श्रीजिनपंजरस्तोत्र संपूर्णम् ॥ ❁ ॥ ४ ॥

॥ अथ लघु जिनसहस्रनाम ॥

॥ नमस्त्रिलोकनाथाय । सर्वज्ञाय महात्मने ॥
ब्रह्मे तस्यैव नामानि । मोक्षयसौख्याजिलाषया ॥ १ ॥
निर्मलः शाश्वतो शुद्धः । निर्विकल्पोनिरामयः ॥
निःशरीरो निरातंको । सिद्धः सूक्ष्मो निरंजनः ॥ २ ॥
निष्कलंको निरालंबो । निमोहो निर्मलोत्तमः ॥
निर्जयो निरहंकारो । निर्विकारोऽथनिष्क्रियः ॥ ३ ॥
निर्दोषो निरुजः शांतः । निर्जेद्यो निर्ममः शिवः ॥
निस्तरंगो निराकारो । निष्कर्षो निष्कलप्रभुः ॥ ४ ॥

निर्वादो निरुपज्ञानः । निरागो निरघोजिनः ॥
 निःशब्दःप्रतिमश्लेषः । उत्कृष्टो ज्ञानगोचरः ॥ ५ ॥
 निःसंगात् प्राप्तकैवल्यो । नैष्टकः शब्दवर्जितः ॥
 अर्निद्यो महापूतात्मा । जगत्शिखर शेखरः ॥ ६ ॥
 निःशब्दो गुणसंपन्न । पापताप प्रणाशनः ॥ सोपि
 योगात् शुभप्राप्तः । कर्मद्योतिबलावहः ॥ ७ ॥ अ-
 जरो अमरः सिद्धः । अर्चिनः अक्षयो विभुः ॥ अमूर्-
 त्तः अच्युतोब्रह्म । विष्णुरीश प्रजापतिः ॥ ८ ॥ अ-
 र्निद्यो विश्वनाथश्च । अजो अनुपमोजवः ॥ अप्र-
 मेयो जगन्नाथ । बोधरूपो जिनात्मकः ॥ ९ ॥ अ-
 व्ययः सकलाराध्यो । निष्पन्नो ज्ञानलोचनः ॥ अठे
 द्योनिर्मतो नित्यः । सर्वशक्यविवर्जितः ॥ १० ॥ अ-
 जेयः सर्वतोन्नतः । निष्कपायो चक्रांतकः ॥ विश्व-
 नाथः स्वयंबुद्धः । वीतरागो जिनेश्वरः ॥ ११ ॥
 अंतको सहजानन्दः । अवाङ्मानसगोचरः ॥ असा-
 ध्यःशुद्धश्चेतन्यः । कर्मनोकर्मवर्जितः ॥ १२ ॥ अनं-
 तो विमल ज्ञानी । स्पृहीश्च निष्प्रकाशः ॥ कर्मा
 जितो महात्मानः । लोकत्रयशिरोमणीः ॥ १३ ॥
 अद्यावाधो वरःशंभुः । विश्व वेदी पितामहः ॥ सर्वज्ञ-
 नदितोदयः सर्वलोकशरण्यकः ॥ १४ ॥ आनन्द-

रूपवैतन्यो । जगवां स्त्रिजगद्गुरुः ॥ अनन्तानंत-
 धीशक्तिः । सत्यदयक्तव्ययात्मकः ॥ १५ ॥ अपृक-
 र्मत्रिनिर्मुक्तः । सप्तधातुविवर्जित ॥ गौरवादित्र-
 यादूरः । सर्वज्ञानादिसंयुतः ॥ १६ ॥ अत्रयः प्राप्त-
 कैवलयः । निर्माणो निरपेक्षकः ॥ निष्कलं केवल-
 ज्ञानी । मुक्तिसौख्यप्रदायकः ॥ १७ ॥ अनामयो
 महाराध्यो । वरदो ज्ञानपात्रकः ॥ सर्वेशःसत्सुखा-
 वासः । जिनेन्द्रो मुनिसंस्तुतः ॥ १८ ॥ अन्यूनपरमज्ञा-
 नी । विश्वतत्त्वप्रकाशकः ॥ प्रबुद्धो जगवान्नाथः । प्र-
 स्तुतः पुण्यकारकः ॥ १९ ॥ शंकरः मुगतो रौद्रः ।
 सर्वज्ञो मदनान्तकः ॥ ईश्वरो ज्ञुवभाधीशः । सचित्तः
 पुरुषोत्तमः ॥ २० ॥ सदोजातमहात्मानं । विमुक्तो मु-
 क्तिवह्नयः ॥ योगिन्द्रो नादिसंसिद्धः । निरीहो
 ज्ञान गोचरः ॥ २१ ॥ सदा शिवां चतुर्वक्रः ।
 सत्सौख्य त्रिपुरांतकः ॥ त्रिनेत्रः त्रिजगत्पूज्यः ।
 कट्याणकोष्टमूर्तिकः ॥ २२ ॥ सर्वसाधुजनैर्व्यः ।
 सर्वपापविवर्जित ॥ सर्वदेवाधिकोदेवोः । सर्वभूत
 हितंकरः ॥ २३ ॥ स्वयंविद्यो महात्मानं । प्रसिद्धः
 पापनाशनः ॥ तनुमात्रश्चिदानंदः । चैतन्यश्चैत्य-
 वैभवः ॥ २४ ॥ सकलातिशयोदेव । मुक्तिस्थोम-

इतांमहः ॥ मुक्तिकार्यायसंतुष्टो । निरागः पर-
 मेश्वरः ॥ १५ ॥ महादेवो महावीरो । महामोह-
 विनाशकः ॥ महाज्ञावो महादर्शः । महामुक्तिप्रदा-
 यकः ॥ १६ ॥ महाज्ञानी महायोगी । महातपो
 महात्मकः ॥ महार्द्धको महावीर्यो । महांतिकपद-
 स्थितः ॥ १७ ॥ महापूज्यो महान्त्यो । महाविघ्न-
 विनाशकः ॥ महासौख्यो महापुंसो । महामहिमश्च-
 च्युतः ॥ १८ ॥ मुक्ता मुक्तिजसंबोधः । एकानंकवि-
 निश्चलः ॥ सर्वबंध विनिर्मुक्तो । सर्वलोकप्रधानकः
 ॥ १९ ॥ महागुरो महाधीरो । महादुःखविनाशकः ॥
 महामुक्तिप्रदोधोरो । महाहृद्यो महागुरुः ॥ २० ॥
 निर्मारोमारविध्वंसी । निष्कामोविपयाच्युतः ॥ जग-
 वंतो महाशांतो । शांतिकट्याणकारकः ॥ २१ ॥
 परमात्मा परंज्योतिः । परमेष्टो परमेश्वरः ॥ परमा-
 त्मापरानदोः । परंपरम आत्मकः ॥ २२ ॥ प्रस्तुतानं-
 तविज्ञानी । सख्यानिर्वाणसंयुतः ॥ नाकृतिं नाहरो-
 वर्णी । व्योमरूपो जितात्मकः ॥ २३ ॥ व्यक्ताव्यक्त-
 जसंबोधः । संसारत्रेदकारणः ॥ निरवद्योमहा राध्यः ।
 कर्भजिर्द्धर्मनायकः ॥ २४ ॥ बोधसत्सु जगद्ध्वो ।
 विश्वात्मा नरकांतकः ॥ स्वयंनू पापहृत्पूज्यः । पुनी-

तोविचित्रः स्तुतः ॥ ३५ ॥ वर्णातीतो महातीनो । रू-
पातीतो निरंजनः ॥ अनंतज्ञानसंपूर्णो । देवदेवेश-
नायकः ॥ ३६ ॥ वरेण्योच्चत्रविध्वंसी । योगिनांज्ञान-
गोचरः ॥ जन्ममृत्युजरातीतः । सर्वविघ्नहरोहरः ॥ ३७ ॥
विश्वदृक्त्रयसंबन्धः । पवित्रोगुणसागरः ॥ प्रसन्नः
परमा राध्यः । लोकालोकप्रकाशकः ॥ ३८ ॥ रत्नगर्भो
जगत्स्वामी । इंद्रवंद्यः सुरर्चितः ॥ निष्प्रपंचोनि-
रातंको । निः शेष क्लेशनाशकः ॥ ३९ ॥ लोकेशो
लोकसंसेव्यो । लोकालोक विलोकनः ॥ लोकोत्तमो
त्रिलोकेशो । लोकाग्र शिखरस्थितः ॥ ४० ॥ नामाष्ट-
कसहस्राणि । येषठन्तिपुनःपुनः ॥ ते निर्वाणपदंयां-
ति । मुच्यतेनात्र संशयः ॥ ४१ ॥ ॥ ❁ ॥ ❁ ॥

॥ इति लघु जिनसहस्रनाम संपूर्णम् ॥ ५ ॥

॥ अथ श्रीशीतलजिन स्तोत्रम् ॥

॥ सकलमङ्गलकेलिनिवेशनं । सहृदयं हृदयं
गमदेशनं ॥ अजिनतोत्तम ऋक्तिसुरेश्वरं । नमत
शीतलनाथ जिनेश्वरं ॥ १ ॥ सहजसुन्दर सद्गुण
मन्दिरं । विमल केवल बोधविकस्वरं ॥ अतिसुवर्ण
सुवर्ण समद्युतं । प्रवरबंधुरलक्षणसंयुतं ॥ २ ॥

(युग्मं) यदीयजक्ति र्जविनां जवे भवे । जवेदजी-
 प्यार्थनिदानमद्भुतं ॥ सएव नन्दात्म समुद्भवो जिनः ।
 समर्चनीयः खलुशीतलः प्रच्युः ॥ ३ ॥ कर्माजित-
 तान् जविनः सुशीतलान् । कुर्वन्मुदावाक् सुधया
 दयापरः ॥ सदेव देवो जवतात्मदैव मे । सदिष्ट
 सिद्धये जिनराजशीतलः ॥ ४ ॥ अधिगतशि-
 वगर्मा वीतमोहाडिकर्मा । दृढरथ तनुजन्मा सर्वतः
 साधुधर्मा ॥ त्रिदशमहित मूर्तिः स्फूर्तिमत्पुण्यकी-
 र्तिः । जयतु गतजवार्तिः शीतलः सौम्यमूर्तिः
 ॥ ५ ॥ इति श्रीशीतलजिनः स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्र ॥

विशदगुण विचित्रं सञ्चरित्रं दधानो । दलित
 दुरतराशि विश्वविश्वा वटानः ॥ प्रकट महिमरम्यो
 दुर्मतीनामगम्यो । जयतु जिनपतिः श्रीपार्श्व
 चिंतामणीशः ॥ १ ॥ कमठ कुमतीवल्ली मूल सुन्मू-
 लयन्ती । पटमकृतपटावजे यस्यत्रङ्गीवपद्मा ॥ अवि-
 कृतमति कायोत्सर्गमुद्रान्वितोसौ । जगतिवहुमतो-
 स्मान् पातुवामांगजन्मा ॥ २ ॥ अविचलमणित्रि-
 च्रत सत्फणानां सहस्रं । बहुलविम लज्जास्व द्क्षूपणो

झासिगात्रः ॥ गुरुतर वरभक्त्या सक्तचित्ताङ्गजाजां ।
 जवतु शिवसम्रद्धये चाश्वसेनिर्जिनेन्द्रः ॥ ३ ॥
 कुपितकरिमृगेश व्यालदावानलाब्धिः । प्रहरणग-
 दगुह्यातंकशंकापहर्ता ॥ विकसितमुखपद्मः सत्पु-
 रेसूरताख्ये । जयतु नृजगलक्ष्मीत्राजमानोजिनेन्द्रः
 ॥ ४ ॥ इति श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्वजिन

स्तोत्र ॥

॥ यस्य ज्ञानदयासिन्धो । दर्शनं श्रेयसे
 ध्रुवं ॥ सश्रीमानपार्श्वतीर्थेशौ । निषेव्यः सततं सतां
 ॥ १ ॥ वामासूनोर्यशः पुंजै । रगाधस्यानघागुणाः ।
 स्मर्यते येन सस्मार्यो । जवेत् प्राचीनत्रिंषां ॥ २ ॥
 विहाय विषयासक्तान् । संसारीक सुरासुरान् । से-
 व्यता मद्दयोधीराः । पार्श्व देवो परः प्रभुः ॥ ३ ॥
 जिनाः सर्वार्थदानेन । येन कटपद्रुमाअपि ॥ जवे
 दज्यर्चितो लोके । सश्रियेचाम्रताय च ॥ ४ ॥ संस्तु-
 तो मधुरश्लोकैः । जैनलाजप्रदायकः ॥ कट्याणका-
 रको जूयात् । श्रीमान्शंखेश्वरः प्रभुः ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीसमस्यामयीशंखेश्वरपार्श्व-
जिन स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ७ ॥

॥ अथ श्रीविविधयमकयुक्त श्रीपा-
श्वर्वाजिन स्तोत्र ॥

॥ लक्ष्मीनिदानं गुरुकर्मदानं । सऋर्मदानं जगतेद-
दानं ॥ यद्देशपार्श्वं शितपादपार्श्वं । नुवामि पार्श्वेऽ-
वचेदपार्श्वं ॥ १ ॥ स्मेगनसोसूनसमप्रजावा । समप्रजा
वाऽत्रदीयमूर्तिः ॥ विजाती वामांप्रजत्र त्रिलोके । जत्र
त्रि लोकेन समर्चनीय ॥ २ ॥ तत्रेशपत्यं कजमादरेण ।
हृद्यादधाना जनतादरेण ॥ मुक्तात्रवेदेकपदे पराया ।
निर्वेशवन्सौख्यपरंपरायाः ॥ ३ ॥ निः शेषचूवर्षि
तदानवारी । र्यन्मानसे त्वं ध्रियसे सदैव ॥ सएव
गव्युत्तम दानवारी । प्रोच्चारि तोहामयशाः सदैवः
॥ ४ ॥ देवाधि देवाधिहर स्त्वमेव । सुज्ञान
सुज्ञानत्रि बुद्धरूपः ॥ सारांग सारांग वितीर्णचूयः ।
कट्याण कट्याणकृदंगभाजां ॥ ५ ॥ यैरर्च्यसेत्वं
वरवैद्यराज । मनोजिरामैः सुमनोजिरामै ॥
कर्मात्रिधैरुश्चितचूघनास्ते । विसारिलोकेश विसारि
लोके ॥ ६ ॥ इत्यं ते जनपुङ्गवस्य जगवन् प्रोहाम

धामान्वितं । पादाब्जं परभागत्रत्त्रिभुवन—
स्तुत्यंस्तुवन्तोनिशं ॥ दक्षं कर्मविपक्ष पक्षदल-
ने चव्या चवंतु क्षमाः । कट्याणाश्रय मुक्तिमामु-
मखिलं तीर्त्वा चवांचोनिधिं ॥ ७ ॥

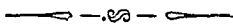
॥ इति श्रीविविधयमकयुक्तश्रीपार्श्वजिन-
स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ ६ ॥

॥ अथ श्रीशंखेश्वरपार्श्व जिन स्तोत्र ॥

॥ शालिनीढन्दः ॥ गौरीग्रामे स्तंजने चारुतीर्थे ।
जीरावट्यां पत्तने लोड्रवाख्ये ॥ वाणारस्यांचापि
विख्यातकीर्ति । श्रीपार्श्वेशं नौमि शंखे श्वरस्थं ॥ १ ॥
इष्टार्थानां स्पर्शने पारिजातं । वामादेव्यानन्दनं देव
वंद्यं ॥ स्वर्गेऽमौ नागलोके प्रसिद्धं ॥ श्रीपा० ॥ २ ॥
भित्वाजेद्यं कर्मजालं विशालं । प्राप्यानन्तं ज्ञान-
रत्नंचिरत्नं ॥ लब्धामंदानंद निर्व्वरणसौख्यं ॥ श्री-
पा० ॥ ३ ॥ विश्वाधीशंविश्वलोके पवित्रं । पापागम्यं
मोक्षलक्ष्मीकलत्रं ॥ अंभोजाक्षं सर्वदा सुप्रसन्नं ॥
श्रीपा० ॥ ४ ॥ वर्षे रम्येखंगदोर्नागचंद्र । संख्येमा-
से माधवे कृष्णपक्षे ॥ प्राप्तं पुण्यै दर्शनं यस्य तंच ॥
श्रीपा० ॥ ५ ॥ * ॥ ॥ * इति श्रीशंखेश्वरपार्श्व-
जिनस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १० ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तोत्र ॥

॥ ❀ ॥ विशदसद्गुण राजि विराजितं । घनघ-
 ना घननाद विजाजितं ॥ जजत जक्तिजरेण रमे-
 श्वरं । जगति पार्श्वजिनेश मनेश्वरं ॥ १ ॥ विवि-
 धवर्णं विचूपितविग्रहाः । विहितपुर्दमदर्पकनिम्न-
 हाः ॥ वमुयुगार्कमिताः सुकृताकराः । जिनवराः प्रज-
 वंतु शिवंकरा ॥ २ ॥ रुचिरवर्णं निवद्धमनिन्दितं ।
 मुमनसां प्रकरैरज्जिवंदितं ॥ निखिलसाधुजनाः
 खलुनिर्मिदं । जिनमतं नमतां चितशर्मदं ॥ ३ ॥
 सकलजव्य सरोजविकाशिका । कुमृतिसंत मसोच्च-
 यनाशिका ॥ जिनवरानन पद्मगतोन्मुदा । जवतु
 वाग्जिनलाज शुचार्यदा ॥ ४ ॥ ❀ ॥
 इति श्रीपार्श्वजिनस्तोत्रम् सपूर्णम् ॥ ११ ॥ ❀ ॥

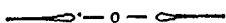


॥ ❀ ॥ अथ श्रीपरमात्मास्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ शिवं शुद्धं वुद्धं परं विश्वनाथं । नदेवं नवंधु
 र्नकर्म नकर्ता ॥ नश्रग नसंग नङ्घा नकामं । चि-
 दानन्दरूपं नमोवीतरागं ॥ १ ॥ नवंधो नमोद्धो
 नरागादिद्लोकं । नजोग नजोगं नव्याधि र्नशोक ॥

नक्रोधं नमानं नमाया नलोचं । चिदा० ॥ १ ॥
 नहस्तौ नपादौ नघ्राणं नजिह्वा । नचक्षुर्नकर्णं
 नवक्त्रं ननिद्रा ॥ नस्वादं नखेदं नवर्णं नमुद्रा ।
 चिदा० ॥ ३ ॥ नजन्मं नमृत्युं नमोदं नचिंता । न-
 कुलृट् नभीतं नक्रष्यं नतुंदा ॥ नस्वामी नत्रत्यं नदे-
 वो नमर्त्या । चिदा० ॥ ४ ॥ त्रिदंडे त्रिखंडे हरे विश्वव्या-
 पं । ऋषीकेश विद्वंशकर्म्मरिजालं ॥ नपुण्यं नपापं
 नअद्या नप्राणं । चिदा० ॥ ५ ॥ नवाढ्यं नवृद्धं
 नविद्धि न्नमूढा । नछेद्यं नचेद्यं नमूर्तिं नमीहा ॥
 नकृष्णं नशुक्लं नमोहं नतंद्रा । चिदा० ॥ ६ ॥
 नआद्यं नमध्यं नमंत्यं नमन्या । नद्रव्यं नक्षेत्रं
 नदृष्टो नज्ञव्या ॥ नगुर्वो नशिष्यो नआद्यो नदीनं ।
 चिदा० ॥ ७ ॥ इदंज्ञानरूपं स्वयंतत्ववेदी । न-
 पूर्णां नशून्यं सचैतन्यरूपं ॥ अन्योभिर्जिह्वां नपर-
 मार्थमेकं । चिदा० ॥ ८ ॥ आत्मारामगुणाकरं
 गुणनिधिं श्रैतन्यरत्नाकरं । सर्वेच्चूतगतागते सुख-
 दुःखं ज्ञातात्वया सर्वगं ॥ त्रैलोक्याधिपति स्वयंस्व-
 मनसाध्यायंति योगेश्वराः । वंदे तंहरिवंशं हर्षहृद-
 यं श्रीमान् चूदच्युतः ॥ ए ॥

॥ इति श्रीपरमात्मास्तोत्रं संपूर्णम् ॥ १२ ॥

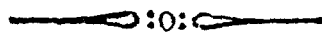


॥ ❀ ॥ अथ नमस्कार स्तोत्र ॥ ❀ ॥

॥ दर्शनं देवदेवस्य । दर्शनं पापनाशनं ॥ दर्शनं
स्वर्गसोपानं । दर्शनं मोक्षसाधनं ॥ १ ॥ दर्शनेन
जिनेन्द्राणां । साधूनां वंदनेनच ॥ नतिष्ठतिचिरं पापं ।
द्विद्रहस्ते यथोदकं ॥ २ ॥ दर्शनं जिनसूर्यस्य ।
संसारध्वांतनाशनं ॥ बोधनचित्तपद्मस्य । समस्तार्थ-
प्रकाशकं ॥ ३ ॥ दर्शनंजिनचन्द्रस्य । सद्ग-
र्भाम्रतवर्षणं ॥ जन्मदाघविनाशाय । वृंहणंसुख-
वारिधेः ॥ ४ ॥ जिनेजक्ति जिनेजक्ति । जिनेजक्ति
दिनेदिने ॥ सदामेस्तु सदामेस्तु । सदामेस्तु जवे
जवे ॥ ५ ॥ नहित्राता नहित्राता । नहित्राता
जगत्रये ॥ वीतरागसमोदेवो । न जूनो न जविष्य-
ति ॥ ६ ॥ अन्यथाशरणं नास्ति । त्वमेवशरणं
मम ॥ तस्मात् सर्वप्रयत्नेन । रक्षरक्षाजिनेश्वर
॥ ७ ॥ वीतरागमुखंहृष्टा । पद्मरागसमप्रज्ञ ॥
नैकजन्म कृतंपापं । दर्शनेन विनश्यति ॥ ८ ॥
अहंतो मंगलं नित्यं । सिद्धाजगतिमगलं ॥ मंगलं-

साधवोमुख्यं । धर्मःसर्वत्रमंगलं ॥ ए ॥ लोकोत्त-
माश्हार्हतः । सिद्धालोकोत्तमाः सदा ॥ लोको त्तमो
यतीशानां । धर्मोलोको त्तमोर्हतां ॥ १० ॥ शरणं
सर्वदार्हतः । सिद्धाशरणमंगलां ॥ साधवः शरणं
लोके । धर्मशरणमर्हतां ॥ ११ ॥

॥ इति श्रीनमस्कारस्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १३ ॥



॥ अथ श्रीमहावीरजिन छंद ॥

॥ सेवो वीरने चित्तमां नित्यधारो । अरिक्रोध-
ने मन्नथी दूरवारो ॥ संतोष वृत्ती धरो चित्तमांहिं
राग द्वेषथी दूर थाओ उच्चाहिं ॥ १ ॥ पड्या मोह
ना पासमां जेह प्राणी । शुद्ध तत्त्वनी वात तेणें न
जाणी ॥ मनु जन्म पामी वृथा कां गमोठो । जैन
मार्गंढनी चूलां कां चमो ठो ॥ २ ॥ अलोत्री
अमानी निरागी तजोठो । सलोत्री समानी सरागी
चजो ठो ॥ हरि हरादि अन्यथी शुं रमोठो । नदी
गंग मूकी गलीमां पकोछो ॥ ३ ॥ केइ देव हाथे असि
चक्र धारा । केइ देव घाले गले रुंरु भाला ॥ के-

इ देव उत्संगे राखे ठे वामा । केइ देव साथे रमे वृ-
 द रामा ॥ ४ ॥ केइ देव जपे लेई जपमाला । केइ
 मांसचक्षी महाविक्रमाला ॥ केइ योगिणी जोगिणी
 जोगरागे । केइ रुद्रणी व्यागनो होम मांगे ॥ ५ ॥
 इसा देव देवी तणी आश राखे । तदा मुक्ति
 नां सुःखने केम चाखे ॥ जदा लोचना थोकनो
 पार नाव्यो । यदा मधनो विंडुओ मन्नजाव्यो
 ॥ ६ ॥ जेह देवला आपणी आश राखे । तेह
 पिंरुने मन्नशुं लेअ चाखे ॥ दीन हीननी जीरु ते
 केम जाजे । फुटो ढोल होये कहो केम वाजे
 ॥ ७ ॥ अरे मूढ ज्ञाता जजो मोक्ष दाता । अलो-
 ची प्रजुने जजो विश्वख्याता ॥ रत्न चिंता मणि
 सारिखो एइ साचो । कलंकी काचना पिंडशुं मत
 राचो ॥ ८ ॥ मंद बुद्धि जेह प्राणी कहे छे ।
 सवि धर्म एकत्व चूलो जमे ठे ॥ कीहां सर्पवाने
 कीहां मेरु धीरं । कीहां कायराने कीहां शूरवीरं
 ॥ ९ ॥ कीहां स्वर्णथालं कीहां कुंजखरं । कीहां
 कोइवानां कीहां खीरमं ॥ कीहां खीरसिंधु

कीहां क्षारनीरं । कीहां कामधेनु कीहां छागखीरं

॥ १० ॥ कीहां सत्यवाचा कीहां कृत्रवाणी । कीहां

रंकनारी कीहां रायराणी ॥ कीहां नारकी ने कीहां

देवन्नोगी । कीहां इंद्र देही कीहां कुष्ट रोगी

॥ ११ ॥ कीहां कर्म घाती कीहां कर्मधारो ।

नमो वीरस्वामी नजो अन्यवारी ॥ जिसी सेजमां

स्वप्नथी राज्यपामी । राचे मंदबुद्धि हरि जेह

स्वामी ॥ १२ ॥ अधिर सुख संसारमां मन्न

माचे । जना मूढमां श्रेष्ठशुं इष्ट वाजे ॥ तजो

मोह माया हरो दंजरोशी । सजो पुण्य पोसी

नजो ते अरोशी ॥ १३ ॥ गति चार संसार अपार

पामी । आव्या आश धारी प्रचु पाय स्वामी ॥

तुंहीं तुंहीं तुंहीं प्रचु परम रागी । भव फेरनो शृंख-

ला मोह जागी ॥ १४ ॥ मानिये वीरजी अर्ज ठे

एक मोरी । दीजे दासकुंसेवना चरण तोरी ॥ पुण्य

उदय हुओ गुरु आज मेरो । विवेके लह्यो मे प्रचु

दर्श तेरो ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीमहावीरजिन ठंढ संपूर्णम् ॥ १४ ॥

॥ * ॥ अथ णवकारनो छंद ॥ * ॥

॥ दोहा ॥

॥ वंछित पूरे विविध परें । श्री जिन शासन
सार ॥ निश्चे थीनवकार नित । जपतां जय जय
कार ॥ १ ॥ अडशठ अक्षर अधिक फल । नव
पद नवे निधान ॥ वीतराग श्रीमुख वदे । पंच
परमेष्टि प्रधान ॥ २ ॥ एकज अक्षर एक चित्त ।
समरथां संपत्ति थाय ॥ संचित सागर सातना ।
पातक दूरपुलाय ॥ ३ ॥ संकल मंत्र शिर मुकुट
मणि । सद्गुरु ज्ञापित सार ॥ सो भवियां मन
शुद्धशुं । नित जपिये नवकार ॥ ४ ॥

(छंद हाटकी)

नवकार थकी श्रीपाल नरेशर पाम्यो राज्य
प्रनिद्ध । शमशान त्रिपे शिव नाम कुमरनें सोवन
पुरिसो सिद्ध ॥ नवलाखजपंता नरक निवारे
पामें भवनो पार । सो जत्रियां जत्तें चोखें चित्तें
नित जपियें नवकार ॥ ५ ॥ वांधी वरुशाखा
ठीके वेसी हेठल कुड हुताश । तस्करनें मंत्र
समर्प्यो श्रावकें उड्यो ते आकाश ॥ विधि रीतें

जप्यां विषधर विष टाले ढाले अमृत धार ॥ सो० ॥
 ॥ ६ ॥ बीजोरा कारण राय महाबल व्यंतर
 दुष्टविरोध । जेणे नवकारें हत्या टाली पाम्यो यद्द
 प्रतिबोध ॥ नवलाख जपंतां थाये जिनवर इस्योठे
 अधिकार ॥ सो० ॥ ७ ॥ पद्द्वीपति शीख्यो मुनिव-
 र पासें महा मंत्र मन शुद्ध । परजव ते राजसिंह
 पृथिवीपति पाम्यो परिगल रिद्ध ॥ ८ ॥ मंत्रशकी
 अमरापुर पोहतो चारुदत्त सुविचार ॥ सो० ॥
 ॥ ७ ॥ संन्यासी काशी तप साधंतो पंचाग्नि
 परजाळे । दीठो श्रीपास कुमारें पन्नग अधबलतो
 ते टाले ॥ संजलाव्यो श्रीनवकार स्वयंमुख इंद्रजु-
 वन अवतार ॥ सो० ॥ ९ ॥ मनशुद्धें जपतां-
 मयणासुन्दरी पामी प्रिय संयोग । इण ध्याने कुष्ट
 टड्युं उंबरनुं रगत पित्तनो रोग ॥ निश्चेंशुं जपतां
 नवनिध थाये धर्म तणो आधार ॥ सो० ॥ १० ॥
 घटमांहिकृष्ण जुजंगम घाटयोघरणी करवा घात ।
 परमेष्ठि प्रजावें हारफूलनो वसुधा मांहि विख्यात ॥
 कमलावतीयें पिंगल कीधो पाप तणो परिहार ॥ सो० ॥
 ॥ ११ ॥ गयणांगण जाती राखी गिहिणी पामी

वाण प्रहार । पद पंच मुणंता पांडुपति घर ते थइ
 कुंतानार ॥ ए मंत्र अमूलक महिमां मंदिर नवदुः-
 ख नजण हार ॥ सो० ॥ १२ ॥ कंवल संवले
 कादव काढ्यां शकट पांचसे माल । दीधे नव-
 कारें गया देवलोके विलसे अमर विमान ॥ ए
 मंत्रथकी संपत्ति वसुधामां लही विलसे जैन
 विहार ॥ सो० ॥ १३ ॥ आगे चौवीशी हुड अनं-
 ती होसे वार अनंत । नवकार तणी केइ
 आदन जाणे एम जाले अरिहंन ॥ पूरव दिशो
 चारे आदि प्रपंचें समरथांसपत्तिसार ॥ सो० ॥
 ॥ १४ ॥ परमेष्टी सुरपद ते पण पामे जे कृत
 कर्म कठोर । पुंरुगिरी ऊपर प्रत्यक्ष पेरुघो
 मणिधरनें एरुमोर ॥ सह गुरु सन्मुख विधियें स
 मरतां सफल जन्म संसार ॥ सो० ॥ १५ ॥ मूली
 कारोपण तस्कर कीधो लोहखरो परसिद्ध । तिहां
 शेटें नवकार मुणाव्यो पाम्प्रोश्चमरनी रुद्ध ॥ शेटने
 घर थावी विघ्न निवारथो सुरें करी मनोहार ॥ सो० ॥
 ॥ १६ ॥ पंचपरमेष्टि ज्ञानज पंचह पंचदान चारित्र ।
 पंच निज्जाय महारुत पंचहु पंच नुनति सम-
 कित्त ॥ पंच प्रमाद त्रिपय तजो पंचह पाखो पंचा-

घार ॥ सो० ॥ १७ ॥

॥ कलश (उप्पय) ॥

नित्यजपिये नवकार सार संपति सुख दायक ।
सिद्ध मंत्र ए शाश्वतो एम जंपेश्रीजगनायक ॥
श्रीअरिहंत सुसिद्ध शुद्ध आचार्य भणीजे । श्री-
उवज्जाय सुसाधु पंच परमेष्टि शुणीजे ॥ नवकार
सार संसार छे कुशल लाभवाचक कहे । एक
चित्ते आराधतां विधि रुद्धि वंछित लहे
॥ १७ ॥ * ॥

॥ * ॥ इति श्रीणवकार नो ठंड संपूर्णम् ॥ * ॥ १५ ॥

॥ * ॥ पुनः णवकार छंद ॥ * ॥

॥ सुख कारण जवियण समरुं श्री नवकार ।
जिन शासन आगम चउदे पूरवसार ॥ इण मंत्रनी
महिमा कहितां नलहुं पार । सुरतरु जिम चिंतित
वांछित फल दातार ॥ १ ॥ सुर दानव मानव
सेव करे कर जोरु । जुइमंरुल विचरे तारे जवियण
कोरु ॥ सुरठंदे विलसे अतिशय जास अनंत ।
पहिले पद नमिये अरिगंजन अरिहंत ॥ २ ॥
जे पनरे जेदे सिद्ध थया जगवंत । पंचमि गति

पुहता अष्ट करम करिहंत ॥ कल अकल सरूपी-
 पंचा नंतक जेह । जिनवर पाय प्रणमुं वीजेपद
 वलि एह ॥ ३ ॥ गह्व जार धुरंधर सुंदर ससिहर
 सोम । करि सारणवारण गुणछतीसे थोम ॥ श्रुत
 जाण शिरोमणि सागर जेम गंजीर । तीजे पद
 नमिये आचारज गुणधीर ॥ ४ ॥ श्रुनधर गुण
 आगम सूत्र ज्ञणावेसार । तप विध संयोगे ज्ञापे
 अरथ विचार ॥ मुनिवर गुण युक्ता ते कहिये जव-
 जाय । चौथे पद नमिये अह निश तेहना पाय
 ॥ ५ ॥ पंचाश्रव टाले पाले पंचाचार । तपशी गुण
 धारी वारी विषय विकार ॥ तस थावर पीहर
 लोक मांहे जे साध । त्रिविधे ते प्रणमुं परमारथ
 गुण लाध ॥ ६ ॥ अरि करि हरि सायण कायण
 जूत वेत्ताल । सवि पापपणासे धास्ये मंगल माल ॥
 इण समरपां संकट दूरटले तत्काल । जंणे जिण
 गुण इम सुरवर सीस रसाल ॥ ७ ॥

॥ इति णवकार छंद संपूर्णम् ॥ २६ ॥

॥ अथ श्रीणवकार मंत्र आत्मरक्षा ॥

॥ • ॥ ॐ परमष्टी नमस्कारं । सारं नव पदात्म

कं ॥ आत्मरक्षा करं वज्र । पंजराजं स्मराम्यहं
 ॥ १ ॥ ॐ नमो अरिहंताणं । शिरस्कं शिरसि
 स्थितं ॥ ॐ नमो सब सिद्धाणं । मुखे मुख पटवरं
 ॥ २ ॥ ॐ नमो आयरियाणं । अंगरख्या तिशाघिनी ॥
 ॐ नमो उवझायाणं । आयुधं हस्तयो दृढं ॥ ३ ॥ ॐ न
 मोलोए सबसाहूणं । मोचके पादयो शुभे ॥ एतो पंच
 नमुक्कारो । शिलावज्रमईतले ॥ ४ ॥ सव्व पाव प्पणा
 सणो । वप्रो वज्र मयोवही ॥ मंगलाणंच सबेसिं । खादि
 रंगार घातका ॥ ५ ॥ स्वाहां तंच पदं ग्येयं । पढनं हवइ
 मंगलं ॥ वप्रो परि वज्रमयं । पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥
 महाप्रजावा रक्षेयं । कुद्रोपद्रव नाशनी ॥ परमेष्ठी
 पदोद्धूता । कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥ यश्चैवं कुरुते
 रक्षां । परमेष्ठी पदै सदा ॥ तस्यनस्या झयं व्याधी ।
 राधिश्चापि कदाचनः ॥ ८ ॥

॥ इति आत्मरक्षा स्तोत्रम् संपूर्णम् ॥ १७ ॥

॥ अथ श्री शंखेश्वर पार्श्वजिनबंद ॥

॥ ॐ ॥ सेवो पाश शंखेसरो मन शुद्धे ।
 नमो नाथ निश्चै करी एक बुद्धे ॥ देवी देवता
 अन्यनें शुं नमो वो । अहो जव्यलोको जुला कां

जमो छो ॥ १ ॥ त्रैलोक ना नाथ ने शुं तजो
 छो । पढ्या पाशमां चूत ने कां जजोछो ॥ सुरऊनु
 छंडी अजा शुं अजो छो । महा पंथ मूकी
 कुपंथे ब्रजो ठो ॥ २ ॥ तजे कोण चिंतामणी
 काचमाटे । ग्रहे कोण रासजने हस्ति साटे ॥ सुर-
 डुम उपाक कुण आक वावे । महा मूढ ते आकु-
 ला अंत पावे ॥ ३ ॥ किहां कांकरो ने किहां मे-
 रुगंग । किहां केशरीने किहां ते कुरंगं ॥ किहां वि-
 श्वनाथं किहां अन्य देवा । करो एकचित्ते प्रनु
 पाश सेवा ॥ ४ ॥ पूजो देव प्रभावती प्राणनाथं ।
 सह जीवने जे करे ठे सनाथं ॥ महा तत्व जाणी
 सदा जेह ध्यावे । तेहनां दुःख दारिद्र दूरें गमावे
 ॥ ५ ॥ पामी मानुषोने वृथा कां गमो छो ॥ कुशीलें
 करी देहने कां दमो छो ॥ नहीं मुक्तिवासं विना
 वीतरागं । जजो जगवंतं तजो दृष्टिरागं ॥ ६ ॥
 उदयरत्न ज्ञाखे सदा हेत आणी । दयाजात्र कीजे
 मोहे दास जाणी ॥ मोरेआज मोतीयके मेह वृथा ।
 प्रनु पाश शंखेश्वरो आपतृगा ॥ ७ ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीशंखेश्वर पार्श्वजिन उट संपूर्णम् ॥ १७ ॥

॥ अथ श्रीगौतमाष्टक बंद ॥

॥ बीर जिणेंसर केरो शीश । गौतम नाम जपो
 निशदीश ॥ जोकीजें गौतमनुं ध्यान । तो घर वि-
 लशे नवे निधान ॥ १ ॥ गौतम नामें गिरिवर चढे ।
 मनवंछित लीला संपजे ॥ गौतम नामे नावे रोग ।
 गौतम नामें सर्व संजोग ॥ २ ॥ जे वैरी विरुआ
 वंकडा । तस नामें नावे ढूकरा ॥ चूत प्रेत नवि-
 मंके प्राण । ते गौतमनां करुं वखाण ॥ ३ ॥ गौतम
 नामें निर्मल काय । गौतम नामें वाधे आय ॥ गौतम
 जिनशाशन शणगार । गौतम नामें जय जयकार
 ॥ ४ ॥ शाल दाल सुरहा घृत गोल । मनवंठित
 कापरु तंबोल ॥ घरेसुघरणी निर्मल चित्त । गौतम
 नामें पुत्र विनीत्त ॥ ५ ॥ गौतम उदयो अविचल
 चाण । गौतम नाम जपो जग जाण ॥ मोहोटा मं-
 दिर मेरुसमान । गौतम नामें सफल विहाण ॥ ६ ॥
 घर मयगल घोडानी जोरु । वारु विलशे वंठित कोरु ॥
 महीयल मानें मोहोटाराय । जो तूठे गौतमना पाय
 ॥ ७ ॥ गौतम प्रणम्यां पातिक टले । उत्तम नरनी
 संगत मले ॥ गौतम नामें निर्मल ज्ञान । गौतम

नामैं बाधे वान ॥ ७ ॥ पुण्यवंत श्रवधारो सहु ।
गुरु गौतमना गुण छे बहु ॥ कहे लावण्य समय
कर जोड । गौतम तूठे संपत्ति कोरु ॥ ए ॥

॥ इति श्रीगौतमाष्टक ठंड संपूर्णम् ॥ १ए ॥

॥ अथ श्री शोल सतीनो छंद ॥

॥ आदि नाथ आदें जिनवर वंदी । सफल म-
नोरथ कीजिये ए ॥ प्रभातें जठी मंगलिक कामें ।
शोल सतीनां नाम लीजिये ए ॥ १ ॥ घाल कुमा-
री जग हितकारी । ब्राह्मी भरतनी वेहेनकी ए ॥
घट घट व्यापक श्रद्धर रूपें । शोल सतीमांदि
जे वडी ए ॥ २ ॥ बाहुवल जगिनी सतीय शिरो-
मणि । सुंदरी नामें रिपभ सुता ए ॥ अंग स्वरूपी
त्रिजुवन मांहे । जेह अनोपम गुणजुत्ता ए ॥ ३ ॥
चंदनवाला बालपणार्थी । शीयलवती शुद्ध श्रावि
का ए ॥ अडदना बाकुला वीर प्रतिबान्या ।
केवल लही व्रत जाविका ए ॥ ४ ॥ उग्रसेन धुआ
धारिणी नदनी । राजिमती नेम बह्व्रजा ए ॥ जोव
न वेशें कामनें जीत्यो । संजम लेइ देव डुल्लभा ए
॥ ५ ॥ पंच भर तारी पांरुव नारी । डुपद तनया

चखाणीयें ए ॥ एक शो आठे चीर पूराणां । शीयल
 महिमा तस जाणीयें ए ॥ ६ ॥ दशथ नृपनी-
 नारी निरुपम । कौशल्या कुलचंद्रिका ए ॥ शीयल
 सद्गुणी राम जनेता । पुण्य तणी प्रनालि का ए
 ॥ ७ ॥ कौशंधिक ठामें शतानिक नामें । राज्य करे
 रंग राजीयो ए ॥ तस घर घरणी सृगावती सती ।
 सुरश्रुवनें जश गाजीयो ए ॥ ८ ॥ सुलसा साची
 शीयलें न काची । राची नहीं विषयारसें ए ॥ मुख-
 ङुं जोतां पाप पुढाए । नाम लेतां मन उद्वसे ए
 ॥ ९ ॥ राम रघुवंशी तेहनी कामनी । जनकसुता
 सीता सती ए ॥ जग सहु जाखे धीज करंता ।
 अनल शीतल थयो शीयलथी ए ॥ १० ॥ काचे
 तांतणे चालणी बांधी । कुवाथकी जल काढीयुं ए ॥
 कलंक उतारवा सतीय सुनद्रा । चंपा बार उघा-
 नीयुं ए ॥ ११ ॥ सुरनर वंदित शीयल अखंडित ।
 शिवा शिवपद गामिनी ए ॥ जेहने नामें निर्मल
 अश्यें । बलिहारी तस नामनी ए ॥ १२ ॥ हस्ति-
 नागपुरे पांडुगयनी । कुंतानामें कामिनी ए ॥ पांडव
 माता दशे दशारनी । बहेन पतिव्रता पद्मनी ए
 ॥ १३ ॥ शीयलावती नामें शीलव्रत धारिणी । त्रि-

विधे नेहने वंदीये ए ॥ नाम जपतां पातिक जाए ।
 दरिशाण दुरित निकंटिये ए ॥ १४ ॥ निपधा
 नगरी नलइनरिंदनी । दमदंती तल गंहिनी ए ॥
 संकट पडतां शीयलज राख्युं । त्रिनुवन कीर्ति
 जेहनी ए ॥ १५ ॥ अनंग अजीताजग जन पूजित ।
 पुष्पचूला नें प्रजावती ए ॥ विश्व विख्याता कामित
 दाता । शोलमीसती पदमावती ए ॥ १६ ॥ वीरें
 जाखी शाखें साखी । उदयरतन भाखें मुदा ए ॥
 बाहाणुं वातां जे नर जणशे । ते लेशे सुख संपदा
 ए ॥ १७ ॥

॥ इति श्री शोलमतीनो ठंड संपूर्णम् ॥ १० ॥

॥ अथ श्री तीर्थमाला स्तवन ॥

॥ ७ ॥ शत्रुजय कृपण ममोसरया । जला गुण
 भर्यारे ॥ सीधा नाधु अनंत । तीरथ ते नमुंग ॥
 तीन कल्याणक निहां थया । मुगनें गयारे ॥ ने
 मीसर गिरनार ॥ ती० ॥ १ ॥ अष्टापद एरु देहरो ।
 गिरि सेहरोरे ॥ जगतें जगव्या त्रिव ॥ ती० ॥ आचू
 चामुग्य अतिजलां । त्रिनुवन तिलोरे ॥ विमल वमड
 वस्तुषाळ ॥ ती० ॥ २ ॥ समेत शिखर सोहामणो ।

रक्षीयामणोरे ॥ सीधा तीर्थकर वीश ॥ ती० ॥
 नयरी चंपा निरखीये । हीये हरखीयेरे ॥ सीधा
 श्री वासुपूज्य ॥ ती० ॥ ३ ॥ पूर्वदिशें पावापुरी ।
 रुद्धें जरीरे ॥ मुक्ति गया महावीर ॥ ती० ॥ जेशल-
 मेर जुहारीये । दुःखवारीयेरे ॥ अरिहंत विंव
 अनेक ॥ ती० ॥ ४ ॥ बीकानेरज वंदीये । चिर-
 नंदीयेरे ॥ अरिहंत देहरा आठ ॥ ती० ॥ सोरिसरो
 शंखेश्वरो । पंचासरोरे ॥ फलोधी थंभणपाश ॥ ती०
 ॥ ५ ॥ अंतरीक अंजावरो । अमीऊरोरे ॥ जीरावदो
 जगनाथ ॥ ती० ॥ त्रैलोक्य दीपक देहरो । जात्रा
 करोरे ॥ राणपुरें रिसहेस ॥ ती० ॥ ६ ॥ श्रीना-
 मोलाई जादवो । गोमी स्तवोरे ॥ श्रीवरकाणो पाश
 ॥ ती० ॥ नंदीश्वरनां देहरा । बावन जलारे ॥ रुचक
 कुंडले चार चार ॥ ती० ॥ ७ ॥ शाश्वती अशाश्व-
 ती । प्रतिमा ठत्तीरे ॥ स्वर्ग मृत्यु पाताळ ॥ ती० ॥
 तीरथ जात्रा फल तिहां ॥ होजो मुज इहांरे ॥
 समयसुंदर कहे एम ॥ ती० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीतीर्थमाला स्तवन संपूर्णम् ॥ ३१ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्री वृषशांति ॥ ❀ ॥

॥ ❀ ॥ जो जो जव्याः शृणुतवचनं प्रस्तुतं सर्व-
मेतत् । ये यात्रायां त्रिचुवनगुरोराहतां चक्तिजाजः ॥
तेषां शान्तिर्जवतु भवतामर्हदादिप्रजात्रा । दारोग्य
श्री धृति मतिकरी क्लेश विध्वंसहेतुः ॥ १ ॥ जोजो-
जव्यलोकाइहहि चरते रावत विदेहसंभवानां ।
समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकंपानन्तरं । श्रव-
धिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः । सुघोषाघंटाचाल-
नानन्तरं । सकलसुरासुरैः सह समागत्य सविन-
यमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा । गत्वा कनकाद्रिशृंगे । वि-
हितजन्माजिषेकः । शान्तिमुद्घोषयति । ततोहं
कृतानुकारमिति कृत्वा महाजनो येन गतम्स पंथाः ।
इति जव्य जनैः सहसमागत्य । स्नात्रपीठे स्नात्रं-
विधाय । शान्तिमुद्घोषयामि । तत्पूजा यात्रा स्ना-
त्रादि महोत्सवानन्तरं । इतिकृत्वा कर्णं दत्वा
निशम्यतां स्वाहा । ॐ पुण्याहं १ । प्रीयंतां २ ।
जगवंतोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिन । स्रैलोक्य-
नाथा । स्रैलोक्यमहिता । स्रैलोक्यपूज्या । स्रैलो-
क्येश्वरा । स्रैलोक्योद्योतकराः ॥ ॐ श्रीकेवलज्ञानी

॥ १ ॥ निर्वाणी ॥ २ ॥ सागर ॥ ३ ॥ महायश ॥ ४ ॥
 विमल ॥ ५ ॥ सर्वानुचूतिः ॥ ६ ॥ श्रीधर ॥ ७ ॥ दत्तः
 ॥ ८ ॥ दामोदरः ॥ ए ॥ सुतेजा ॥ १० ॥ स्वामी ॥ ११ ॥
 सुनिसुव्रतः ॥ १२ ॥ सुमतिः ॥ १३ ॥ शिवगतिः ॥ १४ ॥
 अस्तागः ॥ १५ ॥ नलीश्वरः ॥ १६ ॥ अनिलः ॥ १७ ॥
 यशोधरः ॥ १८ ॥ कृतार्थः ॥ १९ ॥ जिनेश्वरः ॥ २० ॥
 शुद्धमतिः ॥ २१ ॥ शिवकरः ॥ २२ ॥ स्यन्दन
 ॥ २३ ॥ संप्रतिः ॥ २४ ॥ * ॥ एते अतीतचतुर्विं
 शतित्थं कराः ॥ * ॥ ॐ श्रीऋषभः ॥ १ ॥
 अजितः ॥ २ ॥ संजवः ॥ ३ ॥ अभिनन्दनः
 ॥ ४ ॥ सुमतिः ॥ ५ ॥ पद्मप्रभः ॥ ६ ॥ सुपार्श्वः
 ॥ ७ ॥ चंद्रप्रभः ॥ ८ ॥ सुविधिः ॥ ए ॥ शीतलः
 ॥ १० ॥ श्रेयांसः ॥ ११ ॥ वासुपूज्यः ॥ १२ ॥
 विमलः ॥ १३ ॥ अनन्तः ॥ १४ ॥ धर्मः ॥ १५ ॥
 शान्तिः ॥ १६ ॥ कुंथुः ॥ १७ ॥ अरः ॥ १८ ॥ मद्धिः
 ॥ १९ ॥ सुनिसुव्रतः ॥ २० ॥ नमिः ॥ २१ ॥ नेमिः
 ॥ २२ ॥ पार्श्वः ॥ २३ ॥ वर्द्धमानः ॥ २४ ॥ प्रमुखावर्तमान-
 नजिनाः ॥ * ॥ ॐ श्रीपद्मनाभः ॥ १ ॥ सूरदेवः
 ॥ २ ॥ सुपार्श्वः ॥ ३ ॥ स्वयंप्रभः ॥ ४ ॥ सर्वानुचूतिः

॥ ५ ॥ देवश्रुतः ॥ ६ ॥ उदयः ॥ ७ ॥ पेढालः ॥ ८ ॥
 पोष्टिलः ॥ ९ ॥ शतकीर्त्तिः ॥ १० ॥ सुव्रतः ॥ ११ ॥
 अममः ॥ १२ ॥ निष्कयायः ॥ १३ ॥ निष्पुलाकः ॥ १४ ॥
 निर्ममः ॥ १५ ॥ चित्रगुप्तिः ॥ १६ ॥ समाधिः ॥ १७ ॥
 संवरः ॥ १८ ॥ यशोधरः ॥ १९ ॥ विजयः ॥ २० ॥
 मद्धिः ॥ २१ ॥ देवः ॥ २२ ॥ अनन्तवीर्यः ॥ २३ ॥
 चन्द्रंकरः ॥ २४ ॥ * ॥ एते चावितीर्थंकराजिनाः ॥

॥ शान्ताः शान्तिकराः चवंतु मुनयो मुनिप्रव
 रा । रिपुविजयदुर्जिह्वकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु रक्षंतु
 वो नित्यं ॥ ॐ ॥ ॐ श्री नाजिः ॥ १ ॥ जिनशत्रुः
 ॥ २ ॥ जितारिः ॥ ३ ॥ संवरः ॥ ४ ॥ मेघः ॥ ५ ॥
 धरः ॥ ६ ॥ प्रतिष्ठः ॥ ७ ॥ महसेननरेश्वरः ॥ ८ ॥
 सुग्रीवः ॥ ९ ॥ दृढरथः ॥ १० ॥ विष्णुः ॥ ११ ॥
 वसुपूज्यः ॥ १२ ॥ कृतवर्मः ॥ १३ ॥ मिहसेनः ॥ १४ ॥
 जानुः ॥ १५ ॥ विश्वसेनः ॥ १६ ॥ गूरुः ॥ १७ ॥
 सुदर्शनः ॥ १८ ॥ कुंजः ॥ १९ ॥ सुमित्रः ॥ २० ॥
 विजयः ॥ २१ ॥ समुद्रविजयः ॥ २२ ॥ अश्वसेन ॥ २३ ॥
 सिद्धार्थः ॥ २४ ॥ ॐ ॥ वर्तमान चतुर्विंशतिजिन-

जनकाः ॥ १ ॥ ॐ श्रीमरुदेवा ॥ २ ॥ विजया ॥ ३ ॥
 सेना ॥ ४ ॥ सिद्धार्था ॥ ५ ॥ सुमंगला ॥ ६ ॥
 सुसीमा ॥ ७ ॥ पृथिवीमाता ॥ ८ ॥ लक्ष्मणा
 ॥ ९ ॥ रामा ॥ १० ॥ नंदा ॥ ११ ॥ विष्णु ॥ १२ ॥
 जया ॥ १३ ॥ स्यामा ॥ १४ ॥ सुयशा ॥ १५ ॥
 सुवृता ॥ १६ ॥ अचिरा ॥ १७ ॥ श्रीः ॥ १८ ॥
 देवी ॥ १९ ॥ प्रजावती ॥ २० ॥ पद्मा ॥ २१ ॥
 वप्रा ॥ २२ ॥ शिवा ॥ २३ ॥ वामा ॥ २४ ॥ त्रिशला
 ॥ २५ ॥ ॐ ॥ वर्तमानजिनजनन्यः ॥ १ ॥ ॐ श्री
 गोमुखः ॥ २ ॥ महायक्षः ॥ ३ ॥ त्रिमुखः ॥ ४ ॥
 यक्षनायकः ॥ ५ ॥ तुंबरुः ॥ ६ ॥ कुसुमः ॥ ७ ॥
 मातंगः ॥ ८ ॥ विजयः ॥ ९ ॥ अजितः ॥ १० ॥
 ब्रह्माः ॥ ११ ॥ यक्षराजः ॥ १२ ॥ कुमारः ॥ १३ ॥
 षण्मुखः ॥ १४ ॥ पातालः ॥ १५ ॥ किन्नरः ॥ १६ ॥
 गरुडः ॥ १७ ॥ गंधर्वः ॥ १८ ॥ यक्षराजः ॥ १९ ॥
 कुबेरः ॥ २० ॥ वरुणः ॥ २१ ॥ ऋकुटिः ॥ २२ ॥
 गोमेधः ॥ २३ ॥ पार्श्वः ॥ २४ ॥ ब्रह्मशांतिः ॥ २५ ॥
 ॥ १ ॥ वर्तमानजिनयक्षाः ॥ १ ॥ ॐ चक्रेश्वरी
 ॥ २ ॥ अजितबाला ॥ ३ ॥ डुरितारि ॥ ४ ॥
 काली ॥ ५ ॥ महाकाली ॥ ६ ॥ श्यामा ॥ ७ ॥

शांता ॥ ७ ॥ चृगुटी ॥ ८ ॥ सुतारका ॥ ए ॥
 अशोका ॥ १० ॥ मानवी ॥ ११ ॥ चंडा ॥ १२ ॥
 विदिता ॥ १३ ॥ अंकुशा ॥ १४ ॥ कंटर्पा ॥ १५ ॥
 निर्वाणी ॥ १६ ॥ वला ॥ १७ ॥ धारणी ॥ १८ ॥
 धरणप्रिया ॥ १९ ॥ नरदत्ता ॥ २० ॥ गांधारी ॥
 २१ ॥ अंबिका ॥ २२ ॥ पद्मावती ॥ २३ ॥ सिद्धा-
 यिका ॥ २४ ॥ ॐ ॥ वर्तमान चतुर्विंशति तीर्थ-
 करशाशनदेव्यः ॥ ॐ ॥ ॐ ह्रीं श्रीधृति कीर्ति कांति
 बुद्धि लक्ष्मी मेधा विद्या साधन प्रवेशनिवेशनेषु ।
 सुगृहीतनामानो जयन्ति ते जिनेन्द्राः ॥ ॐ रोहिणी
 ॥ १ ॥ प्रज्ञप्ती ॥ २ ॥ वज्रशृंखला ॥ ३ ॥ वज्रां-
 कुशा ॥ ४ ॥ चक्रेश्वरी ॥ ५ ॥ पुरुषदत्ता ॥ ६ ॥
 काली ॥ ७ ॥ महाकाली ॥ ८ ॥ गौरी ॥ ए ॥
 गांधारी ॥ १० ॥ सर्वास्त्रमहाज्वाला ॥ ११ ॥ मान-
 वी ॥ १२ ॥ वैरोढ्या ॥ १३ ॥ अत्रुप्ता ॥ १४ ॥
 मानसी ॥ १५ ॥ महामानसी ॥ १६ ॥ एताः षोड-
 शविद्यादेव्यो रक्षन्तुमे स्वाहा । ॐ आचार्योपाध्या-
 याप्रज्ञातिचातुर्वर्णस्य श्रीश्रमणसघस्य शान्तिर्भवतु ।
 ॐ तुष्टिर्भवतु । पुष्टिर्भवतु । ॐ ब्रह्माश्वं द्र सूर्या
 भारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्वर राहु केतु सहि-

ताः सलोकपालाः सोम यम वरुण कुबेर वासवा-
 दित्य स्कन्द विनायक येचान्येपि ग्राम नगर क्षेत्र-
 देवतादय स्ते सर्वे प्रीयंतां २ अक्षीणकोस कोष्ठा
 गारा नरपतयश्च भवंतु स्वाहा । ॐ पुत्र मित्र त्रातृ
 कलत्र सुहृत स्वजनसंबन्धि बंधुवर्गसहिताः नित्यं-
 चामोदप्रमोदकारिणो ज्वंतु । अस्मिंश्च चूमंडले
 आयतननिवासिनां । साधु साध्वी श्रावक श्रावि-
 काणां । रोगोपसर्ग व्याधिदुःख दौर्मनस्योपशम-
 नाय शान्तिर्जवतु । ॐ तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि माङ्गल्यो-
 त्सवाः ज्वंतु । सदा प्रादुर्भूतानि दुरितानि पापानि
 शाम्यंतु । शत्रवः पराङ्मुखा ज्वंतु स्वहा ॥ श्रीमते
 शान्तिनाथाय । नमः शान्तिविधायिने ॥ त्रैलोक्य-
 स्यामराधीश । मुकुटाञ्चर्चितां व्रजे ॥ १ ॥ शान्तिः
 शान्तिकरः श्रीमान् । शान्तिं दिशतु मे गुरुः ॥
 शान्तिरेव सदातेषां । येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥ २ ॥
 ॐ उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट गृहगति दुः स्वप्नदुर्निमित्ता-
 दि संपादितहितसंपत् नामग्रहणं जयतु शान्तेः
 ॥ ३ ॥ श्रीसंघपौरजनपद राजाधिपराजसंनिवेशानां ।
 गोष्ठीपुरमुख्यानां । व्याहरणैर्व्याहरेद्वांति ॥ ४ ॥
 श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्जवतु । श्रीपौर लोकस्य

शांतिर्भवतु । श्रीजनपदानां शांतिर्भवतु । श्रीराजा
धिपानां शांतिर्भवतु । श्रीराजसनिवेशानां शांति
र्भवतु । श्रीगोष्टिकानां शांतिर्भवतु । ॐ स्वाहा १
॥ ॐ ह्रीं श्रीं पार्श्वनाथाय स्वाहा । एषा शांतिः
प्रतिष्ठा यात्रास्त्रात्रावसानेषु । शांतिकलशं गृहीत्वा ।
कुकुम चंदन कर्पूरा गुरुधूप वास कुमुमांजलिसमेतः ।
स्नात्रपीठे श्रीसंघसमेतः । शुचिः शुचि वस्त्र श्रंदना
चरणा लंकृतः । चंदनतिलकं विधाय पुष्पमाला कंठे
कृत्वा । शांतिमुद्घोषयित्वा । शांतिपानीयं मस्तके-
दातव्यमिति । नृत्यतिनृत्यं मणिपुष्पवर्षं । सृजंतिगा
यंतिचमंगलानि ॥ स्तोत्राणि गोत्राणि पठंति मंत्रान् ।
कृद्व्याणन्नाजोहि जिनाग्निपेठे ॥ १ ॥ अहं तित्थ-
यरमाया शिवादेवी । तुह्य नयरनिवासिनी ॥ अह्य
शिवं तुम्ह शिवं । असुहो वसमं शिवं भवतु स्वाहा
॥ २ ॥ शिवमस्तु सर्वजगतः । परहितनिरताभवंतु
चूतगणाः ॥ दोषाः प्रयांतु नाशं । सर्वत्र सुखी भवंतु
लोकः ॥ २ ॥ उपसर्गाः ह्ययं यांति । तिद्यंते विघ्नव-
ह्वयः ॥ मनः प्रसन्नतामेति । पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥३॥
॥ ७ ॥ इति श्रीबृहत्शान्तिः संपूर्णम् ॥ ७ ॥ २२ ॥

॥ अथ सकल तीर्थ वंदना ॥

॥ ॐ ॥ सकल तीर्थ वंदूं करजोरु । जिनवरनामें
मंगल कोरु ॥ पहेंलें स्वर्गे लाख वत्तीश । जिनवर
चैत्य नमुंनिशदीश ॥ १ ॥ बीजेलाख अष्टावीश
कह्या । त्रीजे वारलाख सर्दह्या ॥ चोथे स्वर्गे अरु
लख धार । पांचमे वंदूं लाखज चार ॥ २ ॥ ठठें
स्वर्गे सहस पचास । सातमें चाळीस सहस प्र-
साद ॥ आठमें स्वर्गे ठ हज्जार । नव दशमें वंदूं
शत चार ॥ ३ ॥ अग्यार वारमें त्रणशे सार । नव-
त्रैवेयके त्रणशें अठार ॥ पांच अनुत्तर सर्वे मली ।
लाख चौराशी अधिका वली ॥ ४ ॥ सहस सताणुं
त्रेवीस सार । जिनवर चुवन तणो अधिकार ॥
लांबा शो जोजन विरतार । पचास ऊंचा बोहोत्तर
धार ॥ ५ ॥ एकशो अशी बिंब परिमाण । सभा-
सहित एक चैत्ये जाण । शो कोरु बावन कोरु
संजाल । लाख चौराणुं सहस चौआल ॥ ६ ॥
सातशे ऊपर साठ विशाल । सवी बिंब प्रणमुं त्रण
काल ॥ सात कोरुने बोहोत्तर लाख । चुवनपती-
मां देवल जाल ॥ ७ ॥ एकशो अशी बिंब प्रमाण ।

एक एक चैत्यें संख्या जाण ॥ तेरशे कोड नि-
 व्यासी कोड । साठ लाख वंदूं करजोरु ॥ ७ ॥ व-
 त्रीशेनें योगणसाठ । तिर्ठांलोकमां चैत्यनो पाठ ॥
 त्रण लाख एकाणुं हज्जार । त्रणशे वीश ते विंव
 जुहार ॥ ८ ॥ व्यंतर योतिपीमां वली जेह । शा-
 श्वता जिनवर वंदूं तेह ॥ रिखज चद्राननवारिखे-
 ण । वर्द्धमान नामें गुणशेण ॥ १० ॥ समेत शि-
 खर वंदूं जितवीश । अष्टापद वंदूं चौवीश ॥ वि-
 मलाचल नें गढ गिरनार । आवूउपर जिनवर जु-
 हार ॥ ११ ॥ शंखेश्वर केशरीयो सार । तारगे श्री-
 अजित जुहार ॥ अंतरिक वरकाणो पाश । जीरा-
 वलोनें शंभण पाश ॥ १२ ॥ गाम नगर पुर पाटण
 जेह । जिनवर चैत्य नमु गुण गेह ॥ विहरमान
 वंदूं जिन वीश । सिद्ध अनंत नमु निशिडीश
 ॥ १३ ॥ अढी छीपमां जे अणगार । अठार सह-
 स शीलांगना धार । पंच महाव्रत सुमती सार ।
 पाले पलावे पंचाचार ॥ १४ ॥ वाह्य अर्पितर तप
 उजमाल । ते मुनि वंदूं गुणमाणि माल ॥ नित नित
 जठी कीर्ति करूं । जीव कहे जव सायर तरूं ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीसकल तीर्थ वंदना संपूर्णम् ॥ २३ ॥

॥ ❀ ॥ णवकार स्तवन ॥ ❀ ॥

—:0:—

श्री नवकार जपो मन रंगे । श्रीजिन शाशन
 साररी माई ॥ सर्व मंगल मांहे पहिलो मंगल । ज-
 पतां जयजय काररी माई ॥ श्री० ॥ १ ॥ पहिले पद
 त्रिचुवन जन पूजित । प्रणमुं श्री अरिहंतरी मा-
 ई ॥ अष्टकर्म बरजत बीजेपद । ध्यातुं सिद्ध अनं-
 तरी माई ॥ श्री० ॥ २ ॥ आचारिज तीजै पद स-
 मरुं । गुण छत्तीस निधानरी माई ॥ चौथे पद उव-
 जाय जपीजे । सूत्र सिद्धांत सुजाणरी माई ॥ श्री० ॥
 ॥ ३ ॥ सर्वसाधु पंचम पद प्रणमुं । पंच महा व्रत
 धाररी माई ॥ नवपद अष्ट इहां ठे संपद । अरुसठ
 वरण संचाररी माई ॥ श्री० ॥ ४ ॥ सातइहां
 गुरु अक्षर एहना । एकअक्षर उच्चाररी माई ॥
 सात सागर ना पातिक जावे । पद पंचास विचाररी
 माई ॥ श्री० ॥ ५ ॥ संपूरण पणसे सागरना । पाप
 पूलाये दूररी माई ॥ इह जव खेमकुशल मनवंठित ।
 पर भव सुख जरपूररी माई ॥ श्री० ॥ ६ ॥ ईरति
 सोवन पुरिसो सीधो । शिवकुमार इणध्यानरी मा-
 ई ॥ सर्पफीटि हुई फूल माला । श्रीमतिने परधानरी

माई ॥ श्री० ॥ ७ ॥ जह्नु उपद्रव करतो निवारथो ।
 परचो एह परसिद्धरी माई ॥ चोरचण्ड पिंगल ने
 हुंरुक । पामे सुर नर रिद्धरी माई ॥ श्री० ॥ ८ ॥
 पंच परमेष्ठी मंत्र जगउत्तम । चवदे पूरवसाररी
 माई ॥ गुण बोले श्रीपढमराज गुरु । महिमा जा-
 सु अपाररी माई ॥ श्री० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीणवकार स्तवन संपूर्णम् ॥ १४ ॥

॥ अथ श्रीगौतमस्वामी अष्टक ॥

प्रह उठी गौतम प्रणमोजे । मन वंछित फल
 नो दातार ॥ लविध निधान सकल गुणसागर । श्री
 वर्द्धमान प्रथम गण धार ॥ प्रह० ॥ १ ॥ गौतम
 गोत्र चवद विद्यानिधि । प्रथवी मात पिता वसु
 जूति ॥ जिनवर चांणि सुणी मनहरख्यो । बोलायो
 नामे इन्द्रजूति ॥ प्र० ॥ २ ॥ पंचमहाव्रत लेई
 प्रजुपासे । वैजिनवर त्रिपदी मनरंग ॥ श्रीगौतम
 गणधर तिहां गूथ्या । पूरव चवद पुत्रादश अंग
 ॥ प्र० ॥ ३ ॥ लघधई अष्टापदगिरचढीयो । चैत्य-
 वंदन जिनवर चौवीश ॥ पनरैसे तिमोतरतापस ।
 प्रतीबोधी कीधा निजसीस ॥ प्र० ॥ ४ ॥ अद्चुत

एह सुगुरुनो अतिशय । जसु दीखे तसु केवलज्ञान ॥
जावजीव ठठ २ तपपारणे । आपणै गोचरीये म-
ध्यान ॥ प्र० ॥ ५ ॥ कामधेनु सुतरु चिंतामणी ।
नाम मांहिजसु करेरे निवास ॥ ते सद् गुरुनो
नाम जपंता । लाजे लखमी लील विलास ॥ प्र० ॥
॥ ६ ॥ लाज घणो विणजे व्यापारे । आवे प्रह्वण
कुशले खेम ॥ ते सदगुरुनो ध्यान धरंता । पामे पुत्र
कलत्र बहुप्रेम ॥ प्र० ॥ ७ ॥ गौतमस्वामि तणा
गुणगातां । अष्ट महा सिद्ध नवरे निधान ॥ समय
सुंदर कहे सुगुरु प्रसादे । पुन्य उदय प्रगट्यौ प-
रधान ॥ प्र० ॥ ८ ॥

॥ इति श्रीगौतमाष्टक छंद संपूर्णम् ॥ १५ ॥

अथ श्रीचिंतामणी पार्श्वनाथ स्तवन

आणी मनसूधी आसता । देव जुहारुं सासता ॥
पार्श्वनाथ मनवंठित पूर । चिंतामण मोरी चिंता
चूर ॥ १ ॥ अणियाली तोरी आंखनी । जाणे कमल
तणी पांखनी ॥ मुख दीठा दुख जावे दूर ॥ चिंता ॥
॥ २ ॥ को केहने को कहेने नमें । म्हारे मनमे तूहिं
जगमे ॥ सदा जुहारुं जगे सूर ॥ चिंता ॥ ३ ॥ वी-

छडिया वाले सर मेल । वैरी दुसमण पाछा ठेल ॥
 तूछे ह्वारे हाजरा हजूर ॥ चिंता० ॥ ४ ॥ मुज मन
 लागी तुमसूं प्रीत । वीजो कोयन आवे चित्त ॥ करो
 मुज तेज प्रताप पंडूर ॥ चिंता० ॥ ५ ॥ येह स्तोत्र मनमें
 धरे । तेहना चिंत्या कारज सरे ॥ आधि व्याधि
 दुखजावे दूर ॥ चिंता० ॥ ६ ॥ जव भव देजो तुम
 पाय सेव । श्रीचिंतामणि अरिहंत देव ॥ समय सुंदर
 कहे सुख जरपूर ॥ चिंता० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणी पार्श्व नाथ स्तवन—

संपूर्णम् ॥ २६ ॥

॥ अथ श्री मंगल चार ॥

॥ सिद्धार्थ नूपति शोहे क्षत्रियकुण्डें, तस घेर
 त्रिशलाकामिनीए ॥ गजवर गामिनी पोढीय चा-
 मिनी, चउद सुपन लहे जामिनीए ॥ ऋटक ॥
 जामिनी मध्ये शोभतारें, सुपन देखे बाल ॥ मयगल
 रूपजने केसरी, कमला कुसुमनो माल ॥ इंदु दिनकर
 ध्वजा सुंदर, कलश मंगल रूप ॥ पद्मसर जलनिधि
 उत्तम, अमर विमान अनूप ॥ रत्ननो अंवार उ-
 ज्वल, बन्दिह निर्धूम ज्योत ॥ कल्याण मंगलकारी

महा, करत जग उद्योत ॥ चउद सुपन सूचित वि-
 श्व पूजित, सकल सुख दातार ॥ मंगल पहेलुं बो-
 ली एए, श्रीवीर जगदाधार ॥ १ ॥ मगध देशमां
 नयरी राजग्रही, श्रेणिक नामें नरेसरू ए ॥ धनवर
 गोवर गाम वसे तिहां, वसुजूति विप्र मनोहरू ए ॥
॥ त्रुटक ॥ मनोहरू तस मानिनि, पृथिवि नामे नार ॥
 इंद्र जूति आदेअ छे, त्रण पुत्र तेहने सार ॥ यज्ञ-
 कर्म तेणें आदरचुं, बहु विप्रने समुदाय ॥ तेणें
 समे तिहां समो सरथा, चौबीसमां जिनराय ॥ उ-
 पदेश तेहनो सांभली, लीधो संजमचार ॥ अगीयार
 गणधर आपीया, श्रीवीरें तेणी वार ॥ इन्द्रजूति गुरु
 जगते थयो, महा लब्धिनो जंकार ॥ मंगल बीजुं
 बोलीये, श्रीगौतम प्रथम गणधार ॥ २ ॥ नंद नरिं
 दनो पारुली पुरवरें, सकलाल नामें मंत्री सरूए ॥
 लाठलदे तसनारी अनूपम, शीयलवती बहु सुख
 करू ए ॥ **त्रुटक ॥** सुख करू संतान नव दोय,
 पुत्र पुत्री सात ॥ शीयलवन्तमां शिरोमणी, शू-
 लिजद्र जग विख्यात ॥ मोह वशें वेश्या मंदिर,
 वस्या वर्षजवार ॥ जोग जली पेरें जोगव्या, ते

जाणे सहु संसार ॥ शुद्ध संजम पामी विषयवामी,
 पामी गुरु आदेश ॥ कोश्या आवासे रह्यो निश्चल,
 रुग्यो नर्ही लवलेश ॥ शद्ध शीयल पाले विषय टाले,
 जगमां जे नर नार ॥ मंगल त्रीजुं वोलीए, श्री थू-
 लिज्जद्र अणगार ॥ ३ ॥ हेम मणि रूप मय धरित
 अनुपम, जडित कोशीसां ते जें ऊगेए ॥ सुरपति
 निर्मित त्रण गढ शोजित, मध्य सिंहासन ऊगम-
 गेए ॥ **त्रुटक** ॥ ऊगमगे जिन सिंहासनेए,
 वाजिन्न कोरुा कोरु ॥ चार निकायना देवता, ते
 सेवे वेहुकर जोरु ॥ प्रातिहारज आठशुं रे, चो-
 ग्रीश अतिशय वंत ॥ समर्वसरणे विश्वनायक,
 शोचे श्रीजगवन्त ॥ सुरनर किन्नर मानवी, वेठी
 ते पर्पदा वार ॥ उपदेश दे अरिहंतजी, धर्म ना
 चार प्रकार ॥ दान शीयल तप जावना रे, टाले
 सघला कर्म ॥ मंगल चौथुं वोलीयें, जगमांहे
 श्रीजिनधर्म ॥ ए चार मंगल गावशे जे, प्रजातें
 धरी प्रेम ॥ ते कोरुि मंगल पामशे, उदय रत्न
 भाखे एम ॥ ४ ॥

॥ इति श्री मंगलचार संपूर्णम् ॥ २७ ॥

॥ अथ श्री भीड चंजन पार्श्वना- थ छंद ॥

॥ ❀ ॥ जूलणा छंद प्रजाती ॥ ❀ ॥

भीरुचंजन प्रभु भीरुचंजन सदा, नहिं कदा
निष्फल थाय सेवा ॥ नविजन जावशुं नजन भां-
ही नजे, परम पद संपदा तखत लेवा ॥ १ ॥ का-
शी बणारसी जिन पद पुरे जयो, वामा अश्वसेन
सुत विश्व दीवो ॥ सेढीवेत्रक तटे खेटकपुर तपे,
कटपनी कोरु कृपाल जीवो ॥१॥ नीडनवभित्तीनय-
जावट्ट चंजणो, नक्ति जनरंजणो जावें नेढ्यो ॥ आज
जिनराज मुज काज सिद्धां सवे, मोह राजाननो मान
मेढ्यो ॥ ३ ॥ कोटिमन कामना सुजस बहु ठाम-
ना, शिव सुख धामना आज साध्यां ॥ मंगल मा-
लिका आज दीपालि का, मुज मन मंदिरें मोज
वाध्यां ॥ ४ ॥ पाठ केँ ठाठ में काति वद आठ में,
सतर अढ्योत्तरें पास गायो ॥ उदय निज दासनो
एह अरदास सुणि, हितधरी नाथजी हाथ सायो ॥५॥

॥ इति श्री भीरु चंजन पार्श्वनाथ छंद-
संपूर्णम् ॥ १७ ॥

॥ ❀ ॥ अथ श्रीगौतम गुरु- प्रज्ञात ठंड ॥ ❀ ॥

जयो जयो गौतम गणधार, मोटी लब्धितर्णों
 चंडार ॥ समरे वंठित सुख दातार, जयो जयो गौ-
 तम गणधार ॥ १ ॥ वीरवजीर बम्बो अणगार, चौ-
 दहजार मुनि सिरदार ॥ जपतां नाम होय जयकार ॥
 जयो० ॥२॥ गय गमणी रमणी जग सार, पुत्र कलत्र
 सज्जन परिवार ॥ आपे कनक कोरि विस्तार
 ॥ जयो० ॥३॥ घरे घोना पायक नहिं पार, सुखासन
 पालखी उदार ॥ वैरी विकट थाये विसराल ॥ जयो०
 ॥ ४ ॥ प्रह उठी जपिये गणधार, ऋद्धि सिद्धि
 कमला दातार ॥ रूप रेख मयण श्रवतार ॥ जयो०
 ॥ ५ ॥ कवि रूपचन्द गुरु केरो शिष्य, गौतम गुरु
 प्रणमो निगादिश ॥ कहे गुणचन्द एसमता गार-
 ॥ जयो० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री गौतम प्रज्ञात ठंड सम्पूर्णम् ॥ श्ल ॥

॥ अथ श्री पार्श्व नाथ ठंड ॥

॥ चौपाइ ॥

॥ सकल सार सुर तरु जगजाणं, जसु जस

वास जगत परिमाणं ॥ सकल देव शिर
मुगुट सुचंगं, नमो नमो जिनपति मन रंगं ॥ १ ॥

॥ पारुधी च्छंद ॥

जो जन मन रंगं, अकल अजंगं, तेज तुरंगं नीलंगं
॥ सवि शोभा संगं, दग्ध अनंगं, शीश जुजंगं
चतुरंगं ॥ बहुपुण्य प्रसंगं, नित्य उठरंगं, नव नव
रंगं नारंगं ॥ कीरति जल गंगं, देश डुरंगं,
सुरपति संगं सारंगं ॥ १ ॥ सारंगा वक्रं, पुण्य
पवित्रं, रुचिर चरित्रं जीवित्रं ॥ तेजो जित मित्रं,
पंकज पत्रं, निर्मल नेत्रं सावित्रं ॥ जग जीवनमित्रं,
तरु सत सत्रं, मित्रा मित्रं मावित्रं ॥ विश्वत्रय
चित्रं, चामर ठत्रं, शीश धरित्रं पावित्रं ॥१॥ पावित्रा
चरणं, त्रिभुवन शरणं, मुगुटा चरणं आचरणं ॥
सुर अर्चित चरणं, शिव सुख करणं, दारिद्र्य हरणं
आवरणं ॥ सुख संपत्ति भरणं, जवजल तरणं, अध
संहरणं उद्धरणं ॥ गोअमृत ऊरणं, जनमन
हरणं, वरणा वरणं आदरणं ॥३॥ आदरणा पालं,
जाक ऊमालं, नित नूपाल आयु पालं ॥ अष्टमी
शशि समभालं, देव दयालं, चैतन चालं सुकमालं ॥
त्रिभुवन रखवालं, महा डुकालं, महाविकरालं भय

टालं ॥ शृंगार रसालं, मह केमालं, हृदय विशालं
 नृपालं ॥ ४ ॥ कलश ॥ ठप्पय ॥ अकल रूप उ-
 दार, सार शिव संपत्ति कारक ॥ रोग सोग संताप,
 डुरिय डुह डुःख निवारक ॥ चिहुं दिश आण
 अखंरु, चंरुतप तेज दिणंदह ॥ अमर अपठर
 कोडि, गावे जस नमेनरिंदह ॥ श्री शंखेश्वर सुर-
 मणि, पाय अधिक मंगल नीलो ॥ मुनि मेघ
 राज कहे जिनवर जयो, श्री पार्श्वनाथ त्रिचुवन
 तिलो ॥ ५ ॥

इति श्री पार्श्वनाथ छंद सम्पूर्णम् ॥ ३० ॥

॥ अथ श्री गोरी पार्श्वनाथ छंद ॥

॥ दोहा ॥

धवलधींग गोडीधणी, सेवक जन साधार ॥

पंचम आरे पेखियें, साहिव जग आधार ॥ १ ॥

॥ चुजंग प्रयात वृत्तं ॥

तजोमान माया भजो जाव आणी, वामा नंदनें
 सेवियें सार जाणी ॥ जुवो नाग नागिणी नाथध्यानें,

पाम्या शक्रनी संपदा बोधि दाने ॥१॥ वश्या पाटणें
 काल केतो धरामा, पधारथा पठे प्रेमशुं पार करमां ॥
 थलीमां वली वास कीधो विचारी, पूरे लोकनी आश
 त्रैलोक्य धारी ॥३॥ धरी हाथमां लाल कव्वान रंगे,
 भिडी गातकी रातकी नील अंगे ॥ चकी नीलके
 तेजीये विघ्न वारे, अराध्या थका पथं चूलां सधारे
 ॥ ४ ॥ जेणे पाशगोमी तणां पाय पूज्या, शत्रु सर्व-
 दा तेहना सर्व धूज्या ॥ सर्व देव देवी थया आज
 ठोटा, प्रचु पार्श्वनाएक प्राक्रम मोहोटां ॥ ५ ॥
 गोमी आप जेरे नव खंड गाजे, जेहथी शाकिनी
 डाकिनी दूर चाजे ॥ पूरे कामना पार्श्व गोमी प्र-
 सिद्धो, हेलां मोहराज जेणें जेर कीधो ॥ ६ ॥ महा
 दुष्ट दुर्दंत जे चूत चूमा, प्रचु नाम पामे सर्वत्रास
 गुंमा ॥ जरा जन्मने रोगना मूल कापे, अराध्यो सदा
 संपदा सुख आपे ॥ ७ ॥ उदय रत्न जाखें नमो पार्श्व
 गोडी, नाखो नाथजी दुःखनी जाळ त्रोमी ॥ ८ ॥
 ॥ इति श्री गोमी पार्श्व नाथ छंद सम्पूर्णम् ॥३१॥

॥ अथ श्री चोत्रीस अतिशय नो ठंड ॥

॥ श्री सुमति दायक, डुरित घायक, ज्ञान
अनुभव श्रीवरी ॥ तस सुगुरु केरा, चरण प्रणमं,
जुगम करजोडी करी ॥ १ ॥ बहु भाव चकें, शुणु
जिनवर, चोत्रीसे अतिशयें करी ॥ जे सुगुरु मुख
थी, सुण्यां ते कहूं, आगमशास्त्रें अनुसरी ॥ २ ॥
तिहां प्रथम अतिशयें, श्री जिनकेरा, रोम नख
वाधे नहीं ॥ नीरोग निर्मल गात्र आस्ति, द्वितीय
अतिशय ए सही ॥ ३ ॥ गोडुग्ध सरिखो, मांस
लोही, तृतीय तेह वस्त्राणियें ॥ चोथो ते उत्पल
गंध सरिखो, श्वासोच्छ्वास सुजाणियें ॥ ४ ॥ आहार
ने नीहार प्रछन्न, एह अतिशय पांचमो ॥ आका
श गतधर्म चक्र ठठो, गगन ठत्र ए सातमो ॥ ५ ॥
रह्या अंबर श्वेत चामर, जुगम अष्टम ए कह्यो ॥
फटिक सिंहासन सुनिर्मल, नवम अतिशयए लह्यो
॥ ६ ॥ आकाशगत ध्वज सहसमंडित, इन्द्र ध्वज
आगे चले ॥ ए दशमो अतिशय कह्यो श्रुतमां,
देखी परमत खल भले ॥ ७ ॥ इग्यारमे जिहां

स्वामी उभा, रहे वली वेसे जिहां ॥ छाया शु-
धज देव तत्क्षण, अशोक तरुवर रचे तिहां
॥ ७ ॥ द्वादशम अतिशय प्रज्ञामंदल, पुट्टें
रविकर जीपए ॥ रमणिक सुंदर भोमी ज्ञागसो,
तेरमो एदीपए ॥ ८ ॥ अधोमुख होय सर्व कंटक,
चउद में अतिशय वली ॥ अनुकूल यज्ञने परिणमें
ऋतु, पंच दशमो सुख लली ॥ १० ॥ संवर्तक पवने
ज्ञोमी पूजे, जोजन लगें ए सोल में ॥ सुगन्ध वृष्टी
तिहां वरसे, प्रगट अतिशय सतर मे ॥ ११ ॥
जानु प्रमाणे बीट नीचो, पंच वरण सुहामणा ॥
जलने ते अल ना फूल वरसे, अढार में अतिशय
घणा ॥ १२ ॥ अमनोज्ञ शब्दादिकही नाशे, उंग-
णीस में अतिशयें वली ॥ वीशमें शुभिद आये;
एम कहेते केवली ॥ १३ ॥ एकवीशमे प्रचुतणी
देशना, जोजन लगे सविजन सुणे ॥ बाविश में
प्रचु अर्ध मागध, ज्ञाषायें जिनजी भणे ॥ १४ ॥
त्रेवीश मे जिनवाणी जनने, हेतु शिवभणी परि-
णमे ॥ चोवीश मे प्रचु चरण मूलें, वैर जंतुना उ-
पशमें ॥ १५ ॥ अन्यद्विंशी नमे जिननें, पंचविंश-
ति अतिशयें ॥ अन्य तीरथी मौन्य थाये, छवी-

समें प्रभु निश्चयें ॥ १६ ॥ पण वीश जोजन लगे
 जिनथी, इतने मारी नही ॥ स्वचक्रने परचक्रन
 होये, तीस अतिशय ए सही ॥ १७ ॥ अति वृष्टिने
 अना वृष्टि, दुर्निद्व त्रण ए नवि उपजे ॥ चोत्रीस
 मे प्रभु आधि पीडा, व्याधि दुःखन संपजे ॥ १८ ॥
 चोत्रीस अतिशय एह कहिया, सूत्र समवायांगमां ॥
 जे त्रणतां गुणतां हिये धरतां, रहे आतम
 रंगमां ॥ १९ ॥ निज शुद्ध आतम रूप प्रगटे, ज्ञा-
 वशुं जो ध्याइयें ॥ दर्शनादिक रत्न लहिये, परम
 सुख पद पाइयें ॥ २० ॥ अरिहंत जगवन्त तणा
 अतिशय, जणो आणी आसता ॥ बहु पुण्य करियें
 ध्यान धरियें, सुख लहियें सासता ॥ २१ ॥ श्री-
 सूरिविद्या उदाधि सेवक, शिष्य एणी परें संस्तवे ॥
 मुनि ज्ञान सागर कहे प्रभु पद, सेव मांगुं जवो
 जवे ॥ २२ ॥

॥ इति श्रीचोत्रीस अतिशय नो ठंड-
 संपूर्णम् ॥ ३२ ॥

॥ॐ॥ अथ श्रीशिखामण नो छंद ॥ॐ॥

॥ त्रोटक वृत्त ॥

॥ वरदायक माय सलाम करी, कहुं सार शिखा

मण एक खरी ॥ नर नारी सहु हियके धरियें, जिम
 आपद संकट उद्धरियें ॥ १ ॥ परजात समे गुरु
 देव नमो, जिमदारिद्र दोहग दूरें गमो ॥ भगवन्त
 सदा चरणा नजियें, कुलरीति कठूकबु नां तजियें
 ॥ २ ॥ लभियें नहिं माय नें बापथकी, बढियें नहिं
 कोय थी बाधी जकी ॥ विश्वास न कीजे नारि
 तणो, गुरु राज समीप थी ज्ञान जणो ॥ ३ ॥ द-
 रबार अलिकननां भखियें, घर नीतर अक्षर नहीं
 लखियें ॥ रखियें नहिं चारु पमोस सदा, तरियें नहिं
 नीर सजोर कदा ॥ ४ ॥ विवसाय सहू विधिसे
 करियें, ठग दाव रमी धन ना जरियें ॥ पर देश-
 मां गाफिल ना फरियें, नरपति थकी डरता रहियें
 ॥ ५ ॥ जुगटां व्यसनी परिना रमियें, ऋषि
 साध अनाथ कुं ना दमियें ॥ करियें नहिं आल
 अगन्नी तणी, बलि दीजियें सीख सुमित्त जणी
 ॥ ६ ॥ गुरुआसन उपरि नाधसियें, दुर्जनसे संगति
 ना बसियें ॥ बली धीज न की जियें जुठ किसी,
 घणीवार न कीजियें बात हंसी ॥ ७ ॥ वयणां
 मुख बोलह ते पलियें, सज्जन थी स्नेह धरी मलि
 यें ॥ परनारिनी संगति प्यार तजो, परमारथ कारज

नित्य ऋजो ॥ ८ ॥ सुख कार शिखामण एम कहे,
कवि उत्तम ते जयमाल लहे ॥ गुरु चार लहू अड
दीर्घ धरो, इम त्रोटक नामक छंद करो ॥ ९ ॥

॥ इति श्री शिखामण ठंद सपूर्णम् ॥ ३३ ॥

॥ अथ श्रीएकादश गणधरना नाम ॥

॥ एका दश गणधर ना नाम, प्रह उठीने करुं
प्रणाम ॥ इंद्रचूति पहिलो ते जाण, अग्निचूति
वीजो गुण खाण ॥ १ ॥ वायुचूति त्रीजो जग सार,
गणधर चोथो व्यक्त उदार ॥ शासन पति सुधर्मा
सार, मंरित नामे ठटोधार ॥ २ ॥ मौर्य पुत्र ते
सातमो जेह, अकंपित अष्टम गुणगेह ॥ मुनि
वर मांहे जे परधान, अचल ज्ञात नवमो ए नाम
॥३॥ नाम थकी होय कोकी कढ्याण, दशमो मेता-
रज अविरल वाण ॥ एकादशमो प्रभास कहेवाय,
सुख संपत्ति जस नामें थाय ॥ ४ ॥ गाया वीर तणा
गणधार, गुण मणि रयण तणा जंकार ॥ उत्तम विजय
गुरु नो शिष्य, रत्नविजय वंदे निश दिस ॥ ५ ॥

॥ इति श्री एकादश गणधर ना नाम

सम्पूर्णम् ॥ ३४ ॥

॥ अथ श्रीगौतम प्रज्ञाति स्तवन ॥

॥ राग प्रज्ञाति ॥

मात पृथ्वी सुत प्रात ऊठी, नमो गणधर गौतम
 नाम गेलें ॥ प्रहसमें प्रेमशुं जेह ध्यातां सदा,
 चढ़ती कला होय वंशबेले ॥ मात० ॥ १ ॥
 वसुधूपति नंदन विश्वजन वंदन, डुरित निकंदन
 नाम जेहनुं ॥ अज्ञेद बुद्धें करी जविजन जे भजे,
 पूर्ण पोहोचे सही ज्ञाग्य तेहनुं ॥ मात० ॥ २ ॥
 सुरमणि जेह चिंतामणि सुरतरु, कामित पूरण
 कामधेनु ॥ तेह गौतमनुं ध्यान हृदयें धरो, जेह
 थकी अधिक नहीं माहात्म्य केनुं ॥ मात० ॥ ३ ॥
 प्रणव आदें धरीमाया बीजें करी, स्वमुखें गौतम
 नाम ध्याये ॥ कोमि मन कामना सफल वेगें
 फलें, विघन बैरी सवे दूर जाये ॥ मात० ॥ ४ ॥
 ज्ञान बल तेज ने सकल सुख संपदा, गौतम नाम
 थी सिद्धि पामे ॥ अखंड प्रचंड प्रताप होय अब
 निमां, सुरनर जेह ने शीश नामे ॥ मात० ॥ ५ ॥
 दुष्ट दूरें टले स्वजन मेलो मले, आधि उपाधिनें
 व्याधि नासे ॥ जूतनां प्रेतनां जोर जांजे

वली, गौतम नाम जपतां उद्धासे ॥ मात० ॥ ६ ॥
 तीर्थ श्रष्टापदें आप लवधें जई, पन्नरसैं त्रणने दी-
 खदीधी ॥ अठमने पारणें तापस कारणें,
 क्षीर लवधें करी अखुट कीधी ॥ मात० ॥ ७ ॥
 वरस पञ्चास लगें गृहवासैं वस्या, वरस वली
 त्रीण करी वीर सेवा ॥ वार वरसां लगें केवल
 जोगव्युं, जक्ति जेहनी करे नित्य देवा ॥ मात० ॥ ८ ॥
 महियल गौतम गोत्र महिमा निधि, गुणनिधि ऋद्धि
 ने सिद्धि टाई ॥ उदय जस नाम थी अधिक लीला
 लहे, सुजस सौजाग्य दौलत सवाई ॥ मात० ॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री गौतम प्रजाति म्त्वन सम्पूर्णम् ॥ ३५ ॥

॥ अथ श्री दोधक वावनी ॥

उयह अक्षर सार है, ऐसा श्रवरन कोय ॥
 सिद्ध सरूप जगवान शिव, शिरसा वंदू सोय ॥ १ ॥
 नमियें देव जगत गुरु, नमियें सद गुरु पाय ॥
 दया युक्त नमियें धरम, शिव सुख लेय उपाय ॥ २ ॥
 मनकी ममता दूर कर, समता धर घट मांहीं ॥
 रमता राम पिठानके, शिव मुख ले क्युं नाहिं ॥ ३ ॥
 शिव मंठिरकी चाहधर, अधिर शंभ तजि दूर ॥

लपट रह्यो क्या कीच में अशुचि जिहां नरपूर ॥ ४ ॥
 धंधाहीमें पच रह्यो, आरंज किये अपार ॥ उठ
 चलेगो एकलो, शिर पर रहेगो भार ॥ ५ ॥ अ-
 न्यायी जन देत धन, बहुत रहित फल सोय ॥ दान-
 स्वल्प फल पिण बहुत, न्याय उपाजित होय ॥ ६ ॥
 आतम परहित आपकुं, क्या परकुं उपदेश ॥ निज
 आतम समज्यो नहीं, कीनो बहुत कलेश ॥ ७ ॥
 इतनाही में समजलें, क्या बहुत पढे सों ग्रन्थ ॥
 उपशम विवेक संवर लहें, याको शिव पुर पंथ
 ॥ ८ ॥ इति निति याथें गई, प्रगट नई सवरीत ॥
 गीत मार्ग पेदा कीउं, गाउं तिनके गीत ॥ ९ ॥ उदय
 नये रविके जसा, जावे सब अंधार ॥ त्यौं सद गुरु
 के बचनसें, मिटें मिथ्यात अपार ॥ १० ॥ ऊगत
 बीज सु खेत में, जसा सुजल संयोग ॥ त्यौंसद
 गुरु के बचन से, उपजत बोध प्रयोग ॥ ११ ॥ एक
 टेक धरी ए जसा, निर्गुण निर्मम देह ॥ दोष रोग
 जामें नहीं, करीयें ताकी सेव ॥ १२ ॥ ए विषम
 गति कर्म की, लिखी न काहु जात ॥ रंकनथें रा-
 जाकरें, राजा रंक दिखात ॥ १३ ॥ उस विंदु कुश-

अग्र्यें, परतन लग्गें वार ॥ आयु अथिर तेसैं जसा,
 कर कतु धर्म विचार ॥ १४ ॥ ऊपधन मिले मित्तज्युं,
 जायें मरें न कोय ॥ कर औपध एक धर्म को,
 जसा अमर तुं होय ॥ १५ ॥ अंध पंगु
 ज्यों एक हे, जरे न पावक मांहीं ॥ ग्यान
 सहित क्रिया करे, जसा अमर पुर जांहीं ॥ १६ ॥
 अमर जगत में को नही, मरे अमर सुर राज ॥ गढ
 मढ मंदिर ढह परे, अमर सुजस जसराज ॥ १७ ॥
 कंचन से पीतर गृहे, मूरख मूढ गिमार ॥ तजे
 धर्म मिथ्यामती, जजे अधर्म असार ॥ १८ ॥
 खल संगति तजियें जसा, विद्या शोजित तोय ॥
 पन्नग मणि संयुक्त सो, क्यों न जय कर होय ॥ १९ ॥
 गाज शरदकी कारिमी, करत हैं बहुत अवाज ॥
 तनक न वरसे दान ल्यों, कृपण नदें जसराज ॥ २० ॥
 घरटी के दो पुमविचे, कण चूरण ज्यों होय ॥
 ल्यों दो नारी विच पोड्यो, नर उगरे न कोय ॥ २१ ॥
 नही ग्यान जामें जसा, नही विवेक विचार ॥
 ताको संगन कीजिये, पर हरिय निरधार ॥ २२ ॥
 चपला कमला जानके, कतु खरचो कतु खाओ ॥
 शक दिन जोइ सुवो जसा, लांवा करकें पाओ ॥ २३ ॥

ठल कर बलकर बुधिकर, करकें जसा उपाय ॥
 आतम वसकर आपनो, डुरजन दूर तजाय ॥ १४ ॥
 जुवती सब युग वस किञ्चो, किसी न राखी मांम ॥
 तासों जो न्यारा रहे, ताको जसा प्रणाम ॥ १५ ॥
 जाजी बात न कीजिये, थोम्हाहीमें आन ॥ जसा
 बराबर लेखवो, आप प्रान पर प्रान ॥ १६ ॥ नग
 डुहिता पति आभरण, ताको अरि जसराज ॥
 तस पति नारी बिनु पुरुष, नवधें शोजा लाज ॥
 ॥ १७ ॥ टाणां टुंणा ठोरदें, याथें न सरें काज ॥
 चोखे चित जिन धर्मकर, ज्युं काज सरें जसराज
 ॥ १८ ॥ ठगसो जो पर मन ठगें, पर उपजावें
 रीऊ ॥ जास करें बस जगतको, साचा ठग सो—
 ईज ॥ १९ ॥ मरे कहा जस राज कहें, जो अपने
 मन साच ॥ क्षिण मे प्रगट होयगा, ज्यों प्रगटायो
 काच ॥ २० ॥ ढहे कोट अग्यान का, गोला ग्यान
 लगाय ॥ मोह राय को मारले, जसा लगे सब पांय
 ॥ २१ ॥ नदी नखी नारी तणो, नागन कुल जस—
 राज ॥ नर स्त्री नर पती निर्गुणिन, आठे करे अकाज
 ॥ २२ ॥ तारे ज्यों नरको जसा, जर सायर में पोत ॥
 त्यों गुरु तारे भव जलधि, करें ग्यान उद्योत ॥ २३ ॥

थोड़ा थोड़ा नहि जीउकों, जो लाख कोटि धन होत ॥
 समता जो आवे जसा, सुखी सदा मन पोत ॥ ३४ ॥
 दक्षिण उत्तर चार दिस, जसा जमें धन काज ॥
 प्रापति विना न पाईयें, कोनी करो सुउपाय ॥ ३५ ॥
 धन पाया खाया नही, दियाजी कतु नाहि ॥
 सो वागुरी होयें धनमें जसा, हुंढत है धन
 मांहि ॥ ३६ ॥ निर्गुन पतित नारी निलज, कूपक
 खारो नीर ॥ नीच मीत जस राज कहें, पांचो
 दहें शरीर ॥ ३७ ॥ परछपगारी जगतमें, अल्प
 पुरुष जसराज ॥ शीतल वचन दया मया, जाके
 मुख पर लाज ॥ ३८ ॥ फोज दिसो दिस मिल
 गई, जसा घुरे निसाण ॥ जुजें सन मुख जायनें,
 सूर गणे नहि प्राण ॥ ३९ ॥ बुंव परे सब दोर हे,
 लेले आयुध हाथ ॥ वदन मलिन कर हैं जसा, जब
 जाचें कोय अनाथ ॥ ४० ॥ जगति जलि जगवंत की,
 संगति भलि सुसाध ॥ शोरन की संगति जसा, आठो
 पहर अपाध ॥ ४१ ॥ मूरख मरण न देख कें, करत
 बहुत आरंभ ॥ सात विसन सेवें जसा, करे धर्म विच
 दंज ॥ ४२ ॥ याग करें प्राणी हणें, जापे धर्म उलंठ ॥
 देखो ग्यान विचार के, क्यों पावे वैकुंठ ॥ ४३ ॥

रीस त्याग वैराग धर, होय जोगी श्रवधृत ॥ शि-
 व नगरी पावे जसा, कर ऐसी कर तूत ॥ ४४ ॥
 लहेणा देणा कठु नही, मुहकी मिठी वात ॥
 हृदय कपट धर हे जसा, ताके शिरपर खात
 ॥ ४५ ॥ वरसें वारिधि श्रहो निशें, खाख रती नुंपान
 ॥ जाग्य विना पावे नहीं, याचक दाता दान
 ॥ ४६ ॥ शंख शरीखां उजला, नर फूटरा फरक ॥
 जसा न शोचे दान विण, तुटी कान धरक ॥ ४७ ॥
 परो पंथ हें सूरको, रणविच मुंरु विहंरु ॥ पाठा
 पाथ्रो धरे नहीं, जो होई शत खंड ॥ ४८ ॥ साय
 र मोती नीपजें, हीरा हीरा खाण ॥ ग्यान ध्यान
 त्यानिपजे, जसा सुगुरु की वाण ॥ ४९ ॥ हस्त
 को मंरुण दान है, घर मंरुण वर नार ॥ कुल मंरुण
 श्रंगज जसा, धन मंडण संसार ॥ ५० ॥ लंछन
 निस पति श्याम रुचि, सूरज लंछन ताप
 ॥ दाता लंछन धन विना, सबहु देत सराप
 ॥ ५१ ॥ द्वांत दांत समता रति, हणे नहीं षट
 काय ॥ जसा ग्यांन किरिया गमन, सोसाधु कहें
 वाय ॥ ५२ ॥ सतरसें तीसें समें, नवमी शुकल

आषाढ ॥ दोधकवावनी जसमुनि, पूरन करी
अगाध ॥ ५३ ॥

॥ इति श्री दोधक वावनी संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

॥ अथ ज्वर (ताव) छंद ॥

॥ दोहा ॥

॥ ॐ नमो आनन्द पुर नगरे, अजयपाल राजान ॥
माता अजया जनमियो, ज्वर तुं कृपा निधान ॥ १ ॥
सात रूप शक्ति हुओ, करवा खेल जगत्त ॥
नाम धरावे जूजुवा, पसरथो तुं इत्त उत्त ॥ २ ॥
एकांतरो वेयां तेरो, त्रश्यो चोथो ताम ॥
शीत उष्ण विषम ज्वरो, ए साते तुज नाम ॥ ३ ॥

॥ छन्द ॥

ए साते तुज नाम सुरंगा, जपता पूरे कोमि उ-
संगा ॥ ते नाम्या जे जालिम जूगां, जगमां व्यापी
तुज जस गंगा ॥ ४ ॥ तुज आगे चूपति सवरंका,
त्रिचुवनमां वाजे तुज डंका ॥ माने नहिं तुं केहनि
शंका, तूठो आपे सोवन टंका ॥ ५ ॥ साधक
सिद्ध तणा मदमोके, असुर सुरा तुज आगल

दोमे ॥ डुठ धीठना कंधर तोमे, नमिचाले तेहने
 तुं ठोडे ॥ ६ ॥ आवंतो थरहर कंपावे, माह्याने
 जिम तिम बह कावे ॥ पहिलो तुं केरुमा थी आवे,
 सात शिरख पण शीत न जावे ॥ ७ ॥ हीं हीं हुं
 हुं कार करावे, पांशलियां हामां करु मावे ॥ उनाले
 पण अमल जगावे, तापें पहिरणमां मुतरावे ॥ ८ ॥
 आशो कार्तिकमा तुज जोरो, हठ्यो न माने धागो
 दोरो ॥ देश विदेश परावे शोरो, करे सर्व तुं तातो
 तोरो ॥ ९ ॥ तुं हाथीनां हामां भंजे, पापीने तामे
 कर पंजे ॥ चक्ति वत्सल चावें जो रंजे, तो सेवक
 ने कोय न गंजे ॥ १० ॥ फोरुक तोरुक डमरु
 काकं, सुरपति सरिखा माने हाकं ॥ धमके धुंसरु
 धांसड धाकं, चढतो चाले चंचल चाकं ॥ ११ ॥
 पिशुन पछारुण नहीको तोथी, तुज जस चीट्या
 जाय न कोथी ॥ शी अणखील करो ए थोथी,
 मेहर करी अलगा रहो मोथी ॥ १२ ॥ चक्त थकी
 एवरी कां खेरो, अवल अमिनां ठांटां रेरो ॥
 लाखा चक्तनो ए निवेरो, महाराज मूको मुज
 केरो ॥ १३ ॥ लाजवसोमां अजया राणी, गुरु
 आण मानो गुण खाणी ॥ घरे सिधावो करुणा आणी,

कहुंतुं नाके छींटी ताणी ॥ १४ ॥ मंत्र सहित ए छंद
जे पढ़शे, तेहने ताव कदी नव चढ़शे ॥ कांति वाल
देही नीरोगं, लेहेशे लखमी लीला जोगं ॥ १५ ॥

ॐ नमो धरि आदि, बीज गुरु नाम वदीजें ॥
आनंदपुर अवनरीश, अजयपाल आखीजें ॥ अजया
जात अढार, वांचिये साते वेटा ॥ जपता एहिज
जाप, जक्तसुं न करे खेटा ॥ उत्तरे अंग चढियो
पलक में, तारा वयणे मुदा ॥ कहें कांति रोग नावे
कदि, सार मंत्र गणिये सदा ॥ १६ ॥

यह छंद सात वार, अथवा इक्कीश वार, सुणे
पढे तो ज्वर जाता रहे ॥

॥ इति श्री ज्वर छंद संपूर्णम् ॥ ३७ ॥

॥ अथ क्रोध मान माया-

लोभ नो छंद ॥

॥ चौपाइ ॥

पहेलां सरस्वतीनु लीजे नाम, चौबीश जिनने
करुं प्रणाम ॥ क्रोध मान माया ने लोभ, भाखु

अर्थ करी थिर थोज ॥ १ ॥ क्रोधें तप कीधों पर
 जले, क्रोधें कर्म घणेर फले ॥ क्रोधें करणी रूडी जाय
 क्रोधें समता रस सूकाय ॥ २ ॥ क्रोध तणे वश
 कांइ नवि गणे, मात पिता गुरुने अवगणे ॥ क्रोधें
 पंचेन्द्रिय मूजाय, क्रोधें जेर घणेरोथाय ॥ ३ ॥ क्रोधें
 विकथा वाधें घणी, क्रोधें कर्म निका चित जणी ॥
 क्रोधें बे बन्धव आफले, क्रोधें जरत बाहुबल लमे
 ॥ ४ ॥ क्रोधें अचंकारी जटा, क्रोधें परशुं करे खटपटा ॥
 क्रोधें अर्जुन माली नाम, महावीर स्वामी क्रोधों सु-
 ठाम ॥ ५ ॥ क्रोधें कूरु कपट केलवे, क्रोधें जुंमि गति
 मेलवे ॥ क्रोधें फरसराम फरसी फेरवे, क्रोधें सुनुम
 दल मेलवे ॥ ६ ॥ क्रोधें ब्रह्मदत्त थयो कठोर, ब्राह्मण
 मोला काढ्या जोर ॥ क्रोधें सासु थइ नणंद, सुजद्रा
 सती शिर कीधो फंद ॥ ७ ॥ क्रोधें काया कर्मनो
 बंध, क्रोधें घरमां पेसे धंध ॥ क्रोधें चेमोते महाराय,
 हल विहल मामा घर जाय ॥ ८ ॥ क्रोधें कोणिक
 कटकी करे, जांगी विशाला पाठो फरे ॥ क्रोधें
 लक्ष्मण नें वालिराम, क्रोधें रावण टाढ्यो ठाम ॥ ९ ॥
 क्रोधतणी छे खोटी वात, कोई न करसो एहनी तात ॥

क्रोधें कर्म घणा बंधाय, क्रोधें दुर्गति परुवा जाय
 ॥ १० ॥ तेह चणी सहु छमो क्रोध,सुख निर्वाध ल
 हो वलि बोध ॥ मान तणी हवे सुणजो वात, मान
 तजे ते सबल सुजात ॥ ११ ॥ माने मान तुरंगें चणे,
 माने मोह जाल मां पणे ॥ माने नीच कुलें अवतरे,
 माने विनय मूल नवि जरे ॥ १२ ॥ माने चौगतिने
 अनुसरे, माने जवुळ जव माहें फिरे ॥ शांव प्रद्युम्न
 कह्यो विचार, माने शियाल तणो अवतार ॥ १३ ॥
 माने वलि राजा निरधार, ब्राह्मण रूप धरयो मोरार ॥
 मान गयद तणो ठे जोर, वाहुवले छांड्यो एक
 ठोर ॥ १४ ॥ मान तणी ठे बधती वेल, माने
 नमियां दुखनी रेल ॥ माने वीरमती ते नार, चंदने
 कीधो कुर्कट सार ॥ १५ ॥ प्रेमला लच्छी हाथें चनी,
 सूरज कुणे कीधो नर फरी ॥ माने दुर्योधन दुःख-
 लहे, माने सर्पनी उपमा कहे ॥ १६ ॥ माने धर्म न-
 पामे कटा, माने कर्म बंधाये सदा ॥ माने मान बंध-
 तो होय, माने जीव फरे सहु कोय ॥ १७ ॥ माने
 धुळु गलें नर सोय, मान तजे ते सुखियो होय ॥
 माने गज असवारी करे, माने जीव अगोचर फिरे
 ॥ १८ ॥ मान तणी ते ए गति कही, धर्मी नर ते

सुणजो सही ॥ हवे मायानो कहुं विचार, माया नरक
 तणो ठे ठार ॥ १९ ॥ माया मोह तणो ठे दाप, माया
 कर्म तणो ठे पोष ॥ माया कपटें मद्धिनाथ, मायामोह
 तणो ठे साथ ॥ २० ॥ माया यें कूड कपट केदवे,
 मायायें चुंकी गति मेलवे ॥ माया मानव जूठो
 लवे, माया नर नारी शोषवे ॥ २१ ॥ माया
 आखारु चूति मुण्डिंद, मायायें लारु वोहोरथा
 फंद ॥ माया मोहोंटो छे मकरंद, माया प-
 रिया सूरज चंद ॥ २२ ॥ माया फंद तणी जे
 जाल, माया सिंह तणी ठे फाल ॥ माया अधिक
 करे उफंड, माया कर्म तणो ठे कुंड ॥ २३ ॥
 माया मांहे धर्म न थाय, माया पुण्य करे अंतराय ॥
 ठोटो मोहटो मायाधरे, माया सबल संसारे फिरे
 ॥ २४ ॥ माया जाले बांध्यो जीव, मायाये प्राणी
 करतो रीव ॥ अर्थ कह्यो माया नो सार, लोच
 तणो हवे कहुं विस्तार ॥ २५ ॥ लोभे लक्षण जाये
 सहु, लोभे परिया दाणव बहु ॥ लोभे लाज
 घणरो थाय, लोभे नर नारी उजाय ॥ २६ ॥ लोभे
 गांभो घेलो होय, लोभे धर्म न जाणे कोय ॥
 लोभे सागर दत्त जलमां पड्यो, लोच सुचुम चक्री

ने नह्यो ॥ २७ ॥ लोचने संचय धननो करे, माखी
 जिम महु आलें फिरे ॥ लोचने धन नवि खर्वे धणी,
 वागुल जत्र पामशे कां फणी ॥ २८ ॥ लोचने देश
 विदेशें जाय, लोचने नरनारी अफलाय ॥ पुण्य होय
 तो पामें वली, वेठा धर्म करो मन रली ॥ २९ ॥
 क्रोध लोचनो ठांको पास, श्रावक धर्म करी उद्धास ॥
 लोचने नाना मोटो जीव, लोचने अकार्य करे सदीव
 ॥ ३० ॥ लोचन तणी गति ठांको सार, तीर्थ यात्रा क-
 रो उदार ॥ अढार पांत्रीमा वर्ष मजार, वागरु देश
 वको डुमार ॥ ३१ ॥ देव दर्शन करो सुखकार, पामो
 जिम जत्र सायर पार ॥ क्रोध मान माया नो संग,
 वलि ठांको लोचन प्रसंग ॥ ३२ ॥ कहे कवि सुणो पं-
 कित राय, कांति विजय हरखे गुण गाय ॥ ३३ ॥

॥ इति श्री क्रोध मान माया लोचन नो
 ठंड संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

॥ अथ सरस्वती अष्टक ॥

॥ हरिगीत छन्द ॥

वृद्धि विमलकर नाववुधवर, निरूप रमनी, निर
 खिये । वर देय न वाला, पद प्रवाला, मत्रमाला

हरस्विये ॥ स्थिर थानंज्ञा, अति अचंभा, रूपरम्भा
 चलकती ॥ नजिये नवानी, जगतजानी, राजरानी
 सरस्वती ॥ १ ॥ सुरराज सेवित, देख दैवत, प-
 द्यपेखत, आसनं । सुखदाय सूरति, मायमूरति, दुः-
 ख दुरति, निवारनं ॥ त्रिहुलोक नारक, विघ्नवारक,
 धराधारक, धरपती ॥ नजिये ॥ २ ॥ केविधां को
 पित, लोज लोपित, अवनि ओपित, ईश्वरी । संतोष
 धारन, विघन वारन, मदन मारन, महेश्वरी ॥ खल
 दह्यां खण्णन, छिद्र छंणन, दुष्ट दंणन, नरपती ॥
 नजिये ॥ ३ ॥ शिव शक्ति साची, रंग राची, अज
 अजाची, योगिनी । मद करन मत्ता, तरन तत्ता,
 धत्तधत्ता, ध्वंगिनी ॥ जिन आण पंति, मनरमंति,
 धवलदंति, वरमती ॥ नजिये ॥ ४ ॥ जल थल ज-
 नानी, पवन पानी, मति बखानी, वीजली । गिर
 वरां गहन, वाघवाहन, सर्पसाहन, शीतली ॥ ह-
 दहांक धारी, हत हजारी, धनुष धारी, नगवती
 ॥ नजिये ॥ ५ ॥ ऊणणाट ऊद्धरि, धिधिम धपवरि,
 रिरिरिधर, खल्लिये । धिधिधौं किधौं, गरुदि घिधिक
 धिरतं, धिधिकधौं गडदी, गल्लिये ॥ ऊंकि ड्रौं ड्रौं
 रुरुमतिड्रां, त्तत्तकि त्रां त्रां, दमकती ॥ नजिये ॥

॥ ६ ॥ रिरि रमकि, रमि रिमि, जिजिमि
जिमि जिमि, ठमकि ठम पग, रच्चिये । घ-
म घमकि, घम घम, ग्रहाणिक गृहाणि, गमअति
अमग, नृत्ति मच्चिये ॥ तत थेइय तानन, मात मानन,
अचल आनन, दरसती ॥ जजिये ० ॥ ७ ॥ चव
चक्र चालन, ऊटिक ऊालन, गर्वगालन, गंजनी ।
विरदां विदारन, महिष मारन, दलिद्र दारन जं-
जनी ॥ चरचिये चमी, खलांखंमी, मदन मंमी,
मलकनी ॥ जजिये ० ॥ ८ ॥ कविकरे अष्टक, टले
कष्टक, विसन पृष्टक, कश्चिये । माणिमौजि मंडित, पढे
पंडित, एअखंमित, पेखिये ॥ दयासुर देवी, सुरां
सेवी, नितनसेवी, जगपती ॥ जजिये ० ॥ ९ ॥

॥ इति श्री सरस्वती अष्टक सपूर्णम् ॥ ३९ ॥

॥ अथ श्री मंगलाष्टक ॥

मंगलं जगवान् वीरो । मंगलं गौतमः प्रभुः ॥
मंगलं शूलि जद्राद्या । जैन धर्मो स्तुमंगलं ॥ १ ॥
नात्नेयाद्याः जिनाः सर्वे । भरताद्याश्च चक्रिणः ॥

कुर्वंतु मंगलं सर्वे । विष्णवः प्रति विष्णवः ॥ २ ॥
 नाभि सिद्धार्थ चूपाद्या । जिनानां पितरः समे
 पालिता खंरु साम्राज्या । जनयन्तु जयंमम ॥ ३ ॥
 मरुदेवी त्रिशलाद्या । विख्याता जिन मातरः ॥
 त्रिजगज्जानिता नंदा । मंगलाय भवन्तु मे ॥ ४ ॥
 श्रीपुंरुरीकेंद्रचूति । प्रमुखा गण धारिणः ॥ श्रुत
 केवल्लि नो पीड । मंगलानि दिशंतु मे ॥ ५ ॥ ब्रा-
 म्ही चन्दन बालाद्या । महासत्यो महत्तरा ॥
 अखंड शील लीलाद्या । यच्छंतु मममंगलं ॥ ६ ॥ च-
 केश्वरी सिद्धायिका । मुख्य शासन देवताः ॥ स-
 म्यगृहशां विघ्नहरा । रचयंतुजयस्त्रियं ॥ ७ ॥ क-
 पर्दी मातंग मुख्या । यद्वा विख्यात विक्रमाः ॥
 जैन विघ्नहरा नित्यं । दिशंतु मंगलानिमे ॥ ८ ॥
 यो मंगलाष्टक मिदं, पटुधी रधीते । प्रातर्नरः सु-
 कृतज्ञावित, चित्तवृत्तिः ॥ सौजाग्य चाग्य कलिता
 धुत, सर्व विघ्नो । नित्यं स मंगल मलं, लज्जते ज
 गत्याम् ॥ ९ ॥

॥ इति श्री मंगलाष्टक संपूर्णम् ॥ ४० ॥

॥ अथ श्री भीमजंजन पार्श्व- नाथ छंद ॥

॥ जुजंगी छंदनी चाल ॥

वारु विश्वमां देश काशी विराजे, जिहां जान्ह
वी नीर गंजीर गाजे ॥ पुरी नाम वाराणसी तिहां
प्रसिद्धि, शोचा स्वर्गनी जिणे उलाली लीधो ॥ १ ॥
घणुं शुं वखाणे कवि घाट तेहनो, सहु चित्त चाहे
जोवा रूप जेहनो ॥ धराधीश तिहां खड्गधारी
धरा ने पाळे, प्रेमशुं अश्वसेनाजिधाने ॥ २ ॥ वामा
तेहनी गेहनी रूपे रंजा, शोले सर्व नारी जीतो
ए अचंजा ॥ सदा सुंदरी ते सोहे चन्द्र वयणी,
सुती सेजमां एकदा मध्य रयणी ॥ ३ ॥ सुरलोक
दशमां थको जे सनूरे, प्रजुपार्श्व वामाकुखे पुण्य-
पूरे ॥ चतुर्थी दिने चैत्रनी कृष्ण पक्षे, वस्या गर्भ
वासे विशखा सुरक्षे ॥ ४ ॥ देवी चौद सुहणा
तदा दिव्य देखे, महामोद पामी माने तेह
लेखे ॥ जायो पोशमासे दशमी अंधारी, आखा वि
श्वनो जेह उद्योत कारी ॥ ५ ॥ मलि दिग्कुमारी
सुंरेंडे मखायो, गायो हृदरायो पूजीने वधायो ॥

वधते प्रभु यौवने जाम जायो, प्रजावती राज कन्या
 प्रणायो ॥ ६ ॥ विषय जोग विलासी वस्या गृह
 वासे, वरष त्रीशमें वृत लीधुं उद्धासे ॥ त्र्यासी
 रात्रि मौने रह्या मुक्ति वासी, तपस्या करी शुक्ल
 ध्यानाज्यासी ॥ ७ ॥ चोखे चित्त निर्दोष चारित्र
 पाली, बहु कर्मना वृद्धनां मूल बाली ॥ थया केव
 ली चैत्रनी कृष्ण चोथे, देखे लोक अलोकने ज्ञान
 ज्योते ॥ ८ ॥ मली देवताये महामोद धारी, करचो
 त्रिगुणो विश्व व्यामोह कारी ॥ स्वामी दिव्यसिंहा
 सने बेठा सोहे, बारे परखदाना बहु मन्नमोहे ॥ ९ ॥
 नवे नेहशुं एहने जे निहाले, त्रिधा ताप संताप ते
 दूर टाले ॥ अहो एक नजरे जिणे एह दीठो, मुने
 मानखो तेहनो लागे मीठो ॥ १० ॥ दीये देशना
 दीन बंधु दयानी, प्राणी पुण्यपामी सुणो जैनवाणी ॥
 लही दुर्लभं मानवं ए शरीरं, मुधा कां गमो छो
 बुधबोध हीरं ॥ ११ ॥ मदे जेह माता पड्या
 मोंह पासे, धने जेह धाता विषय ने विलासे ॥
 मुंजाया सुग्ध माया तणा फंद मांही, मिथ्या ते
 ग्रस्या शुद्धने तेन चाही ॥ १२ ॥ धरे धर्मने जे होइ

धर्म धोरी, तंजी कर्मने ते कापे कर्म दोरी ॥ जजी
 शुद्धने ते लहे शुद्ध हेतु, थाय तेह मिथ्यातनो
 धूमकेतु ॥ १३ ॥ वसी वासना जेहनी जैन वयणे,
 नाथे श्यामलो तेहने कोइ नयणे ॥ जेहनां चित्त
 सिद्धांतमांहे रमेछे, किम तेह जूला कहोने जमेठे
 ॥ १४ ॥ मिथ्याते लीना तेहने ते गमेठे, दोषी
 जीवना ते जिहां तिहां दमेठे ॥ फरी लाख चोराशी
 ना फेरमांहे, विनानाथ तेहने धरे कोणवाहे ॥ १५ ॥
 जिणे जैन सिद्धांतनी युक्ति जाणी, कहो ने कोइ
 तेहने गमेश्चन्यवाणी ॥ हीरे जेहदयो श्योलखी हेत
 श्याणी, कहो किम ते संग्रहे काच प्राणी ॥ १६ ॥
 देइ देशना ने प्रचुतीर्थ थापे, जग जंतु बन्धु पणे
 बोध थापे ॥ मही मंडले विचरे जेम वायु, पुरुं भोग
 वी एकसो वर्ष श्यायु ॥ १७ ॥ मासे श्रावणे शैल समे
 त श्रृंगे, वर्याश्वेत पष्टी दिने मुक्ति संगे ॥ प्रचु
 जीड जंजन नामे जजंता, भांजे जीरु ने सुख
 थापे अनंता ॥ १८ ॥ सेवो शुद्ध बुद्धे सदा बोध
 दाता, भजो जाव जक्ते प्रचु चूत त्राता ॥ सेव्यो
 हेजशुं एह सहजे सधारे, पूज्यो प्रेमशुं पापना
 बंधवारे ॥ १९ ॥ बधे वन्दतां संपदा जे वधारे, धरचुं

ध्यानमां सेवकां बाहे धारे ॥ अर्च्यो उद्धटे आपदा-
थी उगारे, स्तव्यो त्रिविधे जेह संसार तारे ॥ १० ॥
नम्यो नेहशुं जेह नवे निद्धि आपे, कीजे चाकरी
तो चारे गति कापे ॥ जोतां जेहनी आदि कोई न
जाणे, कवि तेहना गुण केता वखाणे ॥ ११ ॥ नमो
नाथ अनाथ सनाथ कारी, नमस्ते अरूपी बहु
रूपधारी ॥ नमो बुद्धि शुद्धा तमा सिद्धि भर्ता, नमो
पारगामी नमो सौख्यकर्ता ॥ १२ ॥ नमो मुक्ति
दाता नमो तुं विधाता, नमो विश्वनेता नमो तुं वि-
ख्याता ॥ नमो सर्व वेदी अवेदी नमस्ते, नमो शं-
करो सर्व व्यापी नमस्ते ॥ १३ ॥ सेढी वेत्रवत्योप
कंठे दिदारु, खेहुंहरीआलुं वसे गाम वारु ॥ राजे
तत्र त्रेविसमो तीर्थराय, जेहना नामथी कोटि क-
ल्याण थाय ॥ १४ ॥ धरणेन्द्र पद्मावती ने पसाय,
सदा संघना विघ्नदूरे पलाय ॥ उदयरत्न चाखे गा-
ता पार्श्वस्वामी, पूरी आज में तो नवे निद्धि
पामी ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीजीरुभंजन पार्श्वनाथ छंद
संपूर्णम् ॥ ४१ ॥

॥ अथ श्री आदि जिनेशर को पारणो ॥

॥ आदि जिनेशर कियो पारणो । आ रस शेल-
ही ॥ आदि० ॥ टेक ॥ गरुा एकसो आठ शेलकी ।
रस जरिया छे नीका ॥ उलट चाव श्रेयांस वहिरावे ।
मांरुदिवी आवूकरे ॥ आ० ॥ १ ॥ देव डुंडुर्जी
वाज रही हे । सोनैयारी वरखा ॥ वारेमाससुं कियो
पारणो । गई चूख सब तिरखा रे ॥ आ० ॥२॥ ऋद्धि
सिद्धि कारज मनो कामना । घर घर मगलाचार ॥
डुनियां हरख वधामणा सिरे । आखात्रोज तिवाररे ॥
आ० ॥३॥ संकट काटो विघननिवारो । राखो हमारी
लाज ॥ बेकरजोकी नान्हूकहिता । ऋपभ देव म-
हाराजरे ॥ आ० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री आदि जिनेशर को पारणो सपूर्णम् ॥४५॥

अथ श्री महावीर स्वामी को पारणो

॥ दोहा ॥

श्री अरिहंत अनत गुण । अतिशय पूरण गात्र ॥
मुनि जे ज्ञानी जे सयमी । ते कहिये उत्तम पात्र ॥१॥

पात्रतणी अनुमोदना । करतो जीरण शेठ ॥
 श्रावक अच्युय गति लहे । नव ग्रेवे कांहेठ ॥ १ ॥
 दश चउमासा वीरजी । विचरत संयम वास ॥
 वेशास्त्रा पुर आविया । इग्यारमी चउमास ॥ ३ ॥
 ॥ ढाल ॥

एकघर घोरा हाथियाजी (एहनी देशी) ॥ चौ-
 माशी एह इग्यारमीजी । विचरत साहस धीर ॥
 वेशास्त्रापुर वाहिरेजी । आव्या श्रीमहावीर ॥ १ ॥
 (जगत गुरु त्रिशला नन्दनजी) जलें में जेठ्या
 श्रीजिनराय । सखीरी चोक पुरावो आय ॥ मेरेजाग
 अनोपम थाय ॥ (जग०) ॥ २ ॥ बलदेव नो ठे देह
 रो जी । तिहां प्रजु कावसग लीध ॥ पञ्चक्खाण
 चउमासनोजी । स्वामी ए तपकीध ॥ (जग०) ॥ ३ ॥
 जीरण शेठ तिहां रहेजी । पाले श्रावक धर्म ॥ आकारे
 तिण ओलख्याजी । जाणे श्रीजिन मर्म ॥ (जग०)
 ॥ ४ ॥ आज अठे उपवासियाजी । स्वामी श्री वर्द्ध
 मान ॥ काढही सही प्रजु जीमसे जी । सै हथ देस्युं
 दान ॥ (जग०) ॥ ५ ॥ सदा शेठ इमर्चितवेजी ।
 होसी सफल मुज आस ॥ पद्द मास गिणता थकां
 जी । पुरी थई चौमास ॥ (जग०) ॥ ६ ॥ सामग्री

आहार नीजी । जीरण कीध तैयार ॥ प्रचुनो मारग दे
 खतो जी । वैठो घरने वार ॥ (जग०) ॥ ७ ॥ घरि
 आवैठे पाहुणा जी । निहुत्या एकण वार ॥ प्रचुजी
 कान पधारसी जी । में निहुत्या वारं वार ॥ (जग०)
 ॥७॥ पीठे करिस्युं पारणोजी । हुं प्रचुने पकिलाज ।
 होय मनोरथ एहवोजी । तो विन वरसे आत्त ॥
 (जग०) ॥ ८ ॥ अक्सरउठ्या गोचरी जी । श्री-
 सिद्धारथ पूत । वेशालापुर् आवतांजी । पूरण घरेय
 पहुत्त ॥ (जग०) ॥ ९ ॥ मिथ्यात्वी जाणे नहीं जी ।
 जगम तीरथ एह ॥ चेकीनें कहे एहवो जी । कांश्क
 जिद्दादेह ॥ (जग०) ॥ १० ॥ चाटूजरने वाकुलाजी ।
 प्रचुने आणी दीध ॥ निरागी तेही लियाजी । तिहां
 प्रचु पारणो कीध ॥ (जग०) ॥ ११ ॥ देव वजावे डुंडु-
 चीजी । जयवोले करजोकि । हेम ष्टिहुई तिहांजी ।
 साढी वारह कोडि ॥ (जग०) ॥ १२ ॥ कहो शैठ तुह्ये
 स्युंदीयोजी । कियो पारणो वीर ॥ लोकां प्रतें इम क-
 हे जी । में वैराई हीर ॥ (जग०) ॥ १३ ॥ राजादिक
 सहु ए कहेजी । धन २ पूरण शैठ ॥ जंची करणी
 तें करीजी । अवर सहु तुज हेठ ॥ (जग०) ॥ १४ ॥
 जीरण शैठ सुणे तवेजी । वाजित्र डुंडुची नाद ॥

अथान्त कियो किहां पारणो जी । मनमें थयो विख-
 चाद ॥ (जग०) ॥१६॥ हुंजग में अज्ञागियोजी । मेरे
 नाया साम ॥ कल्पवृक्ष किम पामियेजी । मारुमंरुज
 ठाम ॥ (जग०) ॥१७॥ जेता मनोरथ में कियाजी । ते-
 तारह्या मनमांहि ॥ निरधन जिम २ चिंतवेजी । तिम
 तिम निरफलथाहि ॥ (जग०) ॥ १८ ॥ स्वामी तिहां
 कियो पारणोजी । कियो अनेथ विहार ॥ आयापाश
 संतानियाजी । तिहां मुनि केवल धार ॥ (जग०) ॥१९॥
 वैशाला पूर राजियाजी । लोका सुं आणंद ॥ राय
 प्रश्न पुछे तिहांजी । सुगुरु चरण अरविंद ॥ (जग०)
 ॥ २० ॥ मेरे नगर में को अठेजी । जीव पुन्य ज-
 शवन्त ॥ कहे केवली आज तोजी । जीरण शेष
 महंत ॥ (जग०) ॥२१॥ राय कहे किण कारणेजी ।
 जीरण शेष महंत ॥ दान दियो जिन वीरनेजी ।
 पूरण ते जसवंत ॥ (जग०) ॥ २२ ॥ रायप्रते कहे
 केवलीजी । पूरण दीनो दान ॥ हेमवृष्टिफल तेहनें
 जी । अवरन कोई प्रमाण ॥ (जग०) ॥२३॥ देवलो-
 कतिणवार में जी । जीरण घाटयो बन्ध ॥ विना दान
 दीना लह्योजी । उत्तम फल सम्बन्ध ॥ (जग०)
 ॥ २४ ॥ घडी एक सुर डुंडुजीजी । जो न सुणन्तो

कान ॥ लहितो जीरण तो सहीजी । केवल अवि-
 चलठाण ॥ (जग०) ॥ १५ ॥ राजा जीरण ने दियो
 जी । अधिक मान सन्मान ॥ मुख्यनगर में थापियो
 जी । जोवो पुन्य प्रमाण ॥ (जग०) ॥ १६ ॥ दान
 दियो सुपात्र नेजी । ते निष्फल नवि जाय ॥ पात्र दान
 अनुमोदताजी । जीरण जिम फल थाय ॥ (जग०)
 ॥१७॥ इमजाणी अनुमोदनाजी । दानसुपात्र रसाल ॥
 दान देवे सुपात्रनेजी । तेहने नमे मुनिमाल ॥
 (जग०) ॥ १७ ॥

॥ इति श्री महावीर स्वामी को
 पारणो संपूर्णम् ॥ ४३ ॥

॥ अथ श्रीपद्मावती आलोयण
 सज्भाय ॥

द्विवेराणी पदमावती । जीव राशि खमावे ॥ जा-
 णपणुं जगदोहिलो । इणवेला आवे ॥ १ ॥ (तेमुऊ
 मिच्छामिडुकमं) ॥ अरिहंतनी साख । जेमें जीव
 विराधिया । चउरासीलाख ॥१॥ (ते०) ॥ सातला-
 ख पृथ्वीतणा । साते अप्पकाय ॥ सातलाख तेउका-
 यना साते वलिवाय ॥ ३ ॥ (ते०) ॥ दस प्रत्येक

वनस्पती । चउदह साधारण ॥ बिति चउरिंदि जीव
 ना । बेबेलाख बिचार ॥४॥ (ते०) ॥ देवतातिरयंच
 नारकी । चार २ प्रकासी ॥ चउदह लाख मनुष्य
 ना । एलाख चउरासी ॥५॥ (ते०) ॥ इणजव पर-
 जव सेविया । जेपाप अढार ॥ त्रिविध २ करिपरिहरं
 । पुरगतिदातार ॥ ६ ॥ (ते०) ॥ हिंसा कीधी जी-
 वनी । बोढ्या मिरखावाद ॥ दोष अदत्ता दान ना ।
 मैथुन उनमाद ॥ ७ ॥ (ते०) ॥ प्ररिग्रह मेढ्यो
 कारिमो । कीधो क्रोधविशेष ॥ मान माया लोच मॅ
 किया । वलि राग ने द्वेष ॥ ८ ॥ (ते०) ॥ कलहकरी
 जीव दूहव्या । दीना कूमा कलंक ॥ निन्दा कीधी पा-
 रकी । रति अरति निस्संक ॥९॥ (ते०) ॥ चाकी खाधी
 चोतरो । कीधा थापणमोसो ॥ कुगुरु कुदेव कुधर्मनो । ज-
 लो आण्यो जरोसो ॥ १० ॥ (ते०) ॥ षाटकी ने ज-
 व मॅ किया । जिवना वध घात ॥ चिमीमार जव
 चिडकला । मारथा दिनरात ॥ ११ ॥ (ते०) ॥
 माठीगरभव माछला । जाढ्या जलवास ॥ धीवर
 चील कोलीजवे । मृग मारथा पास ॥ १२ ॥
 (ते०) ॥ काजी मुद्धानेभवे । पढी मंत्र कठोर ॥ जीव
 अनेक जवेकिया । कीधा पाप अघोर ॥१३॥ (ते०)

कोटवालने जव में किया । अकराकर दंरु ॥
 बंदीवान मराविया । कोरडा ठकी रुंरु ॥ १४ ॥
 (ते०) ॥ परमा धरमी नइ जवे । दीधा नारकी
 डुक्ख ॥ छेदन जेदन वेदना । तारुणा अतिति-
 क्ख ॥ १५ ॥ (ते०) ॥ कुंजारने जवमें किया ।
 निम्माह पचाव्या ॥ तेली जव तिल पीलिया ।
 पापी पेट भराय ॥ १६ ॥ (ते०) ॥ हालीने
 जव हल खड्या । फाड्या पृथवीपेट ॥ सूरु-
 निदान घणा किया । दीधा बलद चपेट ॥ १७ ॥
 (ते०) ॥ मालीनें भव रोपिया । नानाविध वृद्ध ॥
 मूल पत्र फल फूलना । लाग पापना लद्ध ॥ १८ ॥
 (ते०) ॥ अधोवाई आंगमी । जरया अधिका जार ॥
 पोठी जंट कीका पड्या । दया नावि लिगार ॥ १९ ॥
 (ते०) ॥ ठीपाने जव छेतरयो । कीधा रांगणी
 पास ॥ अगनि आरंज किया घणा । धातुवादि अ-
 ज्यास ॥ २० ॥ (ते०) ॥ सूर पणे रण ऊऊता । मा-
 रया माणस वृंद ॥ मदिरा मांस भख्या घणा ।
 खादा मूलने कंद ॥ २१ ॥ (ते०) ॥ खाण खणावी
 धातुनी । पाणी ऊऊंच्या ॥ आरंज कीधा अति-
 घणा । पोते पापज संच्या ॥ २२ ॥ (ते०) ॥ अगार-

कर्म किया बली । घरमे दव दीधा ॥ सुंस लेई वीत
 रागना । कूका कोशज पीधा ॥२३॥ (ते०) ॥ वि-
 द्धी नव उंदर लिया । गीलोई हत्यारी ॥ मूढ ग-
 मार तणें जवे । में जूं लीख मारी ॥२४॥ (ते०) ॥
 चाड चूंजा तणें जवे । एकेँझीजीव ॥ ज्वारीचिणा-
 गहुं सेकिया । पाकंता रीव ॥ २५ ॥ (ते०) ॥ खांरु-
 ण पीसण गारना । आरंज अनेक ॥ रांधण इंध-
 ण आगिना । किया पाप उदेक ॥ २६ ॥ (ते०) ॥
 विकथा च्यार किधी बली । सेव्या पंच प्रमाद ॥
 इष्ट वियोग पड्यां किया । रोदन विषवाद ॥ २७ ॥
 (ते०) ॥ साधुअने श्रावक तणा । वृतलेईजागा ॥
 मूख अने उत्तर तणा । दूषण मुऊ लागा ॥ २८ ॥
 (ते०) ॥ सांप विंतु सिंह चीतरा । शिकारानें शम-
 ली ॥ हिंसक जीव तणें जवे । हिंसा किधी सब-
 ली ॥२९॥ (ते०) ॥ सूआवडे दूषण घणा । बलि-
 गरज गलाव्या ॥ जीवाणी ढोढ्या घणा । शीलवृत
 जंजाव्या ॥ ३० ॥ (ते०) ॥ भव अनंत जमता थ-
 कां । किया कुटुंब संबंध ॥ त्रिविध २ करि वो-
 सरुं ॥ तिणसुं प्रतिबंध ॥३१॥ (ते०) ॥ इणजव प-
 रजव इणपरें ॥ कीधां पाप अखत्र ॥ त्रिविध २ क-

रि वोत्तरुं । करुं जनम पवित्र ॥३३॥ (ते०) ॥ राग-
वैरानी जे सुणे । एत्रिजीढाल ॥ समय सुंदर कहे
पापथी । वूटे ततकाल ॥३३॥ (ते०) ॥

॥ इति श्रीपद्मावती आलोच्यण सिञ्जाय
सपूर्णम् ॥ ४४ ॥

॥ अथ श्री सर्व पापादिक आलोच्यण स्तवन ॥

वेकर जोमी विनवूजी । सुणि स्वामीनुविदीन ॥
कूरु कपट मूंकी करीजी । वात कहुं आपवीत ॥१॥
कृपानाथ मुऊ विनती धवधार । तुं समरथ त्रि-
चुवन धणीजी ॥ मुऊने डुत्तर तार ॥ कृपा० ॥२॥
जवसायर जमतां थकांजी । दीठां डुःख अनंत ॥
जाग संयोगे जेटियोजी । जव जजण जगवत ॥
कृपा० ॥ ३ ॥ जे डुःख चांजे आपणोजी । तेहने
कहिये डुःख ॥ परडुःख भंजण तुं सुण्योजी । सेव-
कने द्यो सुख ॥ कृपा० ॥ ४ ॥ आलोच्यण लीधा-
पखेजी । जीव रुझे ससार ॥ रुपी लक्ष्मणा महासती-
जी । एह सुणो अधिकार ॥ कृपा० ॥ ५ ॥ दूपम-
काळे दोहिलोजी । सूधो गुरु संयोग ॥ परमारथ

पीछे नहीं जी । गरुर प्रवाही लोग ॥ कृपा० ॥ ६ ॥
 तिण तुऊ आगलि आपणाजी । पाप आलोउं आज
 ॥ माय बाप आगलि बोलतांजी । बालक केही ला-
 ज ॥ कृपा० ॥ ७ ॥ जिन धम श सहू कहेजी । थापे
 अपणी बात ॥ समाचारी जूई श जी । संशय प-
 रुं मिथ्यात ॥ कृपा० ॥ ८ ॥ जाण अजाण पणें क-
 रीजी । बोदया उत्सूत्र बोल ॥ रतने काग उकाव-
 तांजी ॥ हारयो जनम निटोल ॥ कृपा० ॥ ९ ॥
 जगवंत भाख्यो ते किहांजी । किहां मुऊ करणी
 एह ॥ गज पाखर खरकिम सहेजी । सबल विमास-
 ण तेह ॥ कृपा० ॥ १० ॥ आप परुपुं आकरोजी ।
 जाणें लोक महंत ॥ पिण न करुं परमादीयोजी ॥
 मासा हस दृष्टांत ॥ कृपा० ॥ ११ ॥ काल अनंते
 में लह्याजी । तीन रतन श्रीकार ॥ पिण परमादे
 पाफियाजी । किहां जई करुं पुकार ॥ कृपा० ॥ १२ ॥
 जाणुं उत्कृष्टी करुंजी । उद्यत करुंअ विहार ॥
 धीरज जीव धरे नहीं जी । पोते बहु संसार ॥ कृपा०
 ॥ १३ ॥ सहज पड्यो मुऊ आकरोजी । नगमें रूडी-
 वात ॥ परनंध्या करता थकांजी । जाये दिनने रा-
 त ॥ कृपा० ॥ १४ ॥ किरिया करतां दोहिलीजी ।

आलस आणें जीव ॥ धरम पखे धंधे पळ्योजी ।
 नरगे करस्ये रीव ॥ कृपा० ॥ १५ ॥ अणहुंता गु-
 णको कहेजी । तो हरखुं निशिदीश ॥ को हित
 सीख जली कहेजी । तो मन आणुं रीश ॥ कृपा०
 ॥१६॥ वाद जणी विद्या जणीजी । पर रंजण उ-
 पदेश ॥ मन संवेग धरथो नहींजी । किम संसार
 तरेश ॥ कृपा० ॥ १७ ॥ सूत्र सिद्धांत वखाणतां-
 जी । सुणता करम विपाक ॥ खिण एक मनमां-
 हि उपजेजी । मुज मरकट वैराग ॥ कृपा० ॥१८॥
 त्रिविध श करि ऊचरुंजी । जगवंत तुह्य हजुर ॥
 वारवार जांजु बलिजी । वूटक वारो दूर ॥
 ॥ कृपा० ॥ १९ ॥ आप काज सुख राचितांजी ।
 कीधा आरंज कोड ॥ जयणा न करी जी-
 वनीजी । देव दयापर छोरु ॥ कृपा० ॥ २० ॥ व-
 चन दोष व्यापक कहाजी । दाख्या अनरथ दंड ॥
 कूरु कपट बहु केलवीजी । व्रत कीधा शत खंरु ॥
 कृपा० ॥ २१ ॥ अणदीधो लीजे त्रिणोजी । तोही
 अदत्ता दान ॥ तेदूपण लागी घणांजी । गिणतां-
 नावे ग्यान ॥ कृपा० ॥ २२ ॥ चंचल जीव रहे नहीं
 जी । राचे रमणी रूप ॥ काम विटवण सी कहूंजी ।

ते तूं जाणे सरूप ॥ कृपा० ॥२३॥ माया ममता में
 पड्योजी । कीधो अधिको लोच ॥ परिग्रह मेढ्यो-
 कारमोजी । न चढी संयम सोच ॥ कृपा० ॥२४॥
 लागा मुऊ ने लाबचेजी । रात्रि जोजन दोष ॥
 में मन मूक्यो माहरोजी । न धर्यो धर्म संतोष
 ॥ कृपा० ॥२५॥ इणभव परजव दूहव्याजी । जीव
 चौराशी लाख ॥ ते मुऊ मिच्छामी डुक्कंजी ।
 जगवन्त तोरी साख ॥ कृपा० ॥ २६ ॥ करमा
 दान पत्तरे कह्याजी । प्रगट अठारेपाप ॥ जे में की-
 धा ते सहुजी ॥ बगस २ माई बाप ॥ कृपा० ॥२७॥
 मुऊ आधार ठे एटलोजी । सरद हिखाठे शुद्ध ॥
 जिन धर्म मीठो जगत में जी । जिम शाकर ने दूध
 ॥ कृपा० ॥२८॥ रिषभ देव तुं राजियोजी । सेत्रुंज-
 गिर सिणगार ॥ पाप आलोया आपणाजी । कर-
 प्रचु मोरी सार ॥ कृपा० ॥ २९ ॥ मर्म एह जिन-
 धर्मनोजी । पाप आलोयांजाय ॥ मनसुं मिच्छामि-
 डुक्कंजी । देतां दूर पुलाय ॥ कृपा० ॥ ३० ॥ तुं
 गति तुं मति तूं धणीजी । तुं साहिव तुं देव ॥
 आणधरुं सिर ताहरीजी । जव २ ताहरो सेव ॥
 कृपा० ॥ ३१ ॥ कलश ॥ इम चढिय सेत्रुंज चर-

ए भेट्या नाभि नंदन जिनतणा । कर जोनि आदि-
 जिणंद आगे पाप आलोया आपणा ॥ श्रीपूज्य-
 जिनचंद सूरि सद्गुरु प्रथम शिष्य सुजसघर्णे ।
 वाणि सकल चंद सुसीस वाचक समय सुन्दर ग-
 णि जणे ॥ ३२ ॥

॥ इति श्रीसर्वपाप आलोयणा गर्जित स्तवनं
 सम्पूर्णम् ॥ ४५ ॥

॥ अथ क्रोधनी सज्जाय ॥

करवां फल ठे क्रोधना । ज्ञानी एम बोले ॥ री-
 श तणो रस जाणीये । इलाइल तोले ॥ कडवां० ॥१॥
 क्रोधे क्रोरु पूरव तणु । संजम फलजाय ॥ क्रोध स-
 हित तप जे करे । तेनो लेखे न थाय ॥ करु० ॥२॥
 साधु घणो तपियो हुतो । धरतो मन वैराग ॥ शि-
 प्यना क्रोध थकी थयो । चंरु कोशियो नाग ॥ करु० ॥
 ३ ॥ थाग उठे जे घर थकी । ते पहेलुं घरवाले ॥
 जखनो जोग जो नवि मले । तो पासेनुं परजाळे ॥
 करु० ॥४॥ क्रोध तणी गति एहवी । कहे केवल ना-
 णी ॥ हाण करे जे हेतनी । जालव जो एम जाणो ॥
 कड० ॥५॥ उदय रतन कहे क्रोधने । काढजो ग-

ले साही ॥ काया करजोनिरमली । उपशम रस
नहीं ॥ करुण ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीक्रोधनी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥ ४६ ॥

॥ अथ श्री माननी सज्जाय ॥

रेजीव मानन कीजिये । मानें विनय न आवेरे ॥
विनय विना विद्या नहीं । तो किम समकित पावेरे
॥ रेजीवण ॥१॥ समकित विण चारित्र नहीं । चारित्र-
विण नहीं मुक्तिरे ॥ मुक्तिनां सुखठे शाश्वतां । ते
किम लहिये जुक्तिरे ॥ रेजीवण ॥२॥ विनय बरु सं-
सारमां । गुणमा अधिकारी रे ॥ मानें गुण जाये ग
ली । प्राणी जो जो विचारीरे ॥ रेजीवण ॥३॥ मान-
करयुं जे रावणें । तेतो राममाचोरे ॥ डुर्योधन गर्वे करी ।
ते अंते सत्रि हारचोरे ॥ रेजीवण ॥४॥ सूखां लाकरा
सारिखो दुख दायी ए खोटोरे ॥ उदयरत्न कहे
माननें देजो तमे देश वटोरे ॥ रेजीवण ॥५॥

॥ इति श्रीमाननी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥ ४७ ॥

॥ अथ श्रीमायानी सज्जाय ॥

समकितनुं मूल जाणीयेजी । सत्य वचन सा-
क्षात ॥ साचामां समकित वसेजी । मायामें मि-

ध्यातरे ॥ (प्राणी मकरिस माया लगार) ॥१॥ सुख
 मीठो जूठो मनैजी । कूरु कपट नोरे कोट ॥ जीर्जे-
 तो जी जी करेजी । चितमा ताके चोटरे ॥ प्राणी०
 ॥२॥ आप गरजे आघो पकेजी । पिण न धरे विश्वास ॥
 मनसुं राखे आंतरोजी । ए माया नो पासरे ॥
 प्राणी० ॥ ३ ॥ जेह्शुं वांधे प्रीतडीजी । तेह्शु रहे
 प्रतिकूल ॥ मेलन ठके मन तणोजी । ए माया नो
 मूलरे ॥ प्राणी० ॥४॥ तप कीधो माया करीजी ।
 मित्र शु राखेरे जेद ॥ महिजिणैसर जाणजोजी ।
 तो पाम्या स्त्री वेदरे ॥ प्राणी० ॥५॥ उदय रत्न कहे
 सांजलोजी । मेलो मायानी वुद्ध ॥ मुक्ति पुरी
 जावा तणोजी । ए मारगठे शुद्धरे ॥ प्राणी० ॥६॥
 ॥ इति श्रीमायानी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥ ४७ ॥

॥ अथ श्रीलोचनी सज्जाय ॥

तुमे लक्षण जोज्यो लोचनारे । लोभे जन पामे खो-
 जनारे ॥ लोभे काह्या मन सोहला करेरे । लोभे दुर-
 घट पंथे संचेरे ॥ तुमे० ॥१॥ तजे लोचन तेना लेऊं
 जामणारे । बलि पाय नमी ने करु खामणारे ॥ लो-
 चने मरजादा न रहे केहनीरे । तुमे संगन मेलो ते

हनीरे ॥ तुमे० ॥१॥ लोभे घर मेहली रणमां मरेरे।
लोभे जंच ते नीचुं आचरेरे ॥ लोभे पाप जणी
पगला भरे रे । लोभे अकारज करतां न श्योसरे
रे ॥ तुमे० ॥ ३ ॥ लोभे मनकुं न रहे निरमलुं रे ।
लोभे सगपण नासे वेगलुं रे ॥ लोभे न रहे प्रेतने
पावतुं रे। लोभे धन मेले बहु एगतुं रे॥तुमे० ॥४॥ लोभे
पुत्र प्रते पिता हणे रे । लोभे हत्या पातिक नत्रि गणे
रे ॥ ते तो दाम तणे लोभे करी रे । ऊपर मणिधर
थायें ते मरी रे ॥ तुमे० ॥५॥ जोतां लोभने थोच दी-
से नहीं रे । एहवो सूत्र सिद्धांते कहुं सहीरे ॥ लोभे
चक्री संचुम नामे जुओरे । ते तो समुद्र माहे वूनी
सुओरे ॥ तुमे० ॥६॥ इम जाणीने लोभने छंड ज्योरे ।
एक धर्मसुं समता मंड ज्योरे ॥ कवि उदय रत्न चाखे
मुदारे । वडुं लोभ तजे तेहने सदारे ॥ तुमे० ॥७॥
॥ इति श्री लोभनी सज्जाय सम्पूर्णम् ॥४६॥

। अथश्री गोडी पार्श्वनाथ जिन स्तवन ।

॥ दोहा ॥

श्रीजिन वदन निवासना, श्रीसरसत सम रेह ॥
तिर्थकर तेवीसना, गाइस हुं गुण गेह ॥ १ ॥

गुण गरवो गोमी पुरो, गाजे गोमी राय ॥
 संकट हरण संपत्ति करण, स्मरण करुं सुहाय ॥१॥
 सम काले प्रतिमा तिने, शुभ मुहूर्त शुभ वार ॥
 महिमा पसरि महियले, पूजीस पाटण मांय ॥३॥
 परचा श्री प्रभु पासना, प्रगट ठे प्रति मांय ॥
 मति सारे हुं छोरु मद, आखिस गुण करि ध्याय ॥४॥

॥ ढाल पहिदी ॥

देसां श्रीहर देश ठे काशी, नगरी वाणारसी
 वासी रे ॥ जिनवर जयकारी, हुं जाउं एहनी वारी
 रे ॥ जिनवरण ॥ १ ॥ राजकरे अश्वसेन नरिंदा,
 तेज रुपे अजि नवा अंटा रे ॥ जिनवरण ॥ गुणनी
 खाणी मिठी वाणी, ब्रम्हधारिणी वामा राणी रे ॥
 जिनवरण ॥ २ ॥ तेहनी कुखे प्रभु अवतरिया, शुभ
 रुप सुगुण पर जरिया रे ॥ जिनवरण ॥ पोस वदी
 दशमी दिन प्रभु जाया, तेज रवि तेज हराया रे ॥
 जिनवरण ॥ ३ ॥ ठपन दिशा कंवरी मिल गायो,
 खण नारकियां सुख पायो रे ॥ जिनवरण ॥ जन्मम-
 होच्छव इन्द्रे किनो, तिहां पास कुंवर नाम दिनो
 रे ॥ जिनवरण ॥ ४ ॥ जोवन में कन्या परणार्ई,

परजावती नाम कहाई रे ॥ जिनवरण ॥ वैरागे प्रचु
दीक्षा लिनी, हुवा केवल ज्ञान सवाई रे ॥ जिनवरण
॥५॥ सो वरसारो प्रचु आउखो पायो, प्रचु पांचमी
गतं संभारी रे ॥ जिनवरण ॥ अनंता दर्शन ज्ञान
अरूपी, समता धर सिद्ध सरूपी रे ॥ जिनवरण ॥६॥
जोती सरूप जनम द्य किनो, अजर अमर पद
लिनो रे ॥ जिनवरण ॥ पूजीजे प्रचु ठामों ठामें,
गवरी गाजे गोमी गामे रे ॥ जिनवरण ॥ ७ ॥
सुणो भवि यण तुम गोमी केरा, भावसुं सब बिंब
चलेरा रे ॥ जिनवरण ॥ ८ ॥

॥ इति ढाल पहिली संपूर्णम् ॥

॥ ढाल दूसरी ॥

श्री संखेसर पास जिनेसरण ॥ एदेशी ॥

थापीरे प्रतिमा तीन के, मोमुदावाद में ॥ अण
समो बिंबन कोय, दिसेरे प्रतिमा दमे ॥ १ ॥ मूरत
गोमी सामनी, तुरके लेगया ॥ धरती खणं नै तेह,
राखी रे प्रतिमा सही ॥ २ ॥ एक दिन सोणे मांहि,
जह आवि कहे ॥ गोमी पास नो बिंब, ते धरती
मांहिं रहे ॥ ३ ॥ प्रगट करजे तेह, तुरक तुं तुरकमा ॥

नहीं तर परसे चीड, देशस दुःख वंकरा ॥ ४ ॥
 पर कर वासी मेघो, पाटण आवसे ॥ अकृत तिलक
 खिलारु, के सेनाण पावसे ॥ ५ ॥ पास जिनेसर
 केरिओ, प्रतिमा देयजो ॥ पूरा पांचसे दामके, गुणने
 लेहजो ॥ ६ ॥ मनसुं करते वात,सहु चित्त सरदही ॥
 सुणे मांहि आय के, जह्ण रायां कही ॥ ७ ॥ ह्वे
 मेघाने हाथे विंव, जिनवर तणो ॥ आसे शणविध
 एह, चरित्र जवि यण सुणो ॥ ८ ॥

॥ इति ढाळ दूसरी संपूर्णम् ॥

॥ ढाळ तीसरी ॥

इणीयज नरत सु क्षेत्रमें, परकर नामे देशरे ॥
 सहु देशां शिर रो सेहरो, नहीं तिहा दुःख पर वेशरे ॥
 इणी० ॥ १ ॥ राज करे तिहां राजवी, नरपति राय
 खंगार रे ॥ सूर धीर अति साहजी, जात तणे
 पंवार रे ॥ इणी० ॥ २ ॥ तिण देशे एक नगर
 ठे, वुंदेसर एक गाम रे ॥ धरती नार तणे संगे,
 विध रच्या तिलक सुठामरे ॥ इणी० ॥ ३ ॥ उण
 देशे काजळ इसो, नामे ठे मोटो साहरे ॥ कपटी
 कुड अवगुण नरयो, लोजी लोज अथाग रे ॥

इणी० ॥ ४ ॥ बेनी काजल साहनी, मेघा साहने
 दीधरे ॥ सारा वनेवी तणो,सगपण सखरो कीधरे॥
 इणी० ॥ ५ ॥ मांहो मांह सुखे घणो, गमावे दिन
 रातेरे ॥ एक दिवस मेघा जणी, काजल जाखी
 आ वातरे ॥ इणी० ॥ ६ ॥ धन लेई पाटण तुमे,जा-
 थो नी व्यापार काजरे ॥ मानी बात साह मेघजी,
 चाढ्या तुरत समाजरे ॥ इणी० ॥ ७ ॥ वैतांने
 सुगन सखरा हुत्रा,सय हुई से काम सिद्धरे॥अनुक्रमे
 पाटण आविया, थासे यहां नवि निद्धरे ॥ इणी०
 ॥ ८ ॥ उतारा मेघे दिया, केरा तंबु ताणरे ॥ राते
 सुणे मांहि कह्यो, बात सहु जह्ण राणरे ॥ इणी०
 ॥ ९ ॥ तुरक घरे जिनवर तणी, मूरत महि
 मां वंतरे ॥ दाम पांच सो देयने, लीजो मन धर
 खंतरे ॥ इणी० ॥ १० ॥ जह्ण गयो निज थानके,
 निश ज़र उगोसूररे ॥ पाटण केरे चोवटे,तुरक फिरे
 ठे वनूर रे ॥ इणी० ॥ ११ ॥ जितने दीठा साह
 मेघजी, सोइ पोता सेनाणरे ॥ हालोनी हम घर
 साहजी, थांने देखामां जग जाणरे ॥ इणी० ॥१२॥
 हरख भराणो हिवमो, आथा असुरां रे गेहरे ॥

जख हर तेज विराजता, दीठा जिन सस नेहरे ॥
 इणी० ॥ १३ ॥ आमूरत राखो तुमे, दो मुज
 पांचसो दामरे ॥ वेण सुण्या अमृत जिता, उद्धस्यो
 आतम राम रे ॥ इणी० ॥ १४ ॥

॥ इति ढाल तीसरी संपूर्णम् ॥

॥ ढाल चौथी ॥

तुरकांने दामडिया पांचसो, जणे विंव लियो
 मन हरखे रे ॥ मारे जाग्य दिसा अतिजागी, जाग्य
 दिसा अतिजागी, मेंतो आज हुवा वरु जागी रे ॥
 मारे० ॥ १ ॥ चावट मननी जागी, प्रचुजी सुं
 अंतर ले लागीरे ॥ मारे० ॥ समता रुप सोभागी,
 नेरंजण ने ने रागीरे ॥ मारे० ॥ २ ॥ अकल सरुप
 अथागी, मेंतो पायो शिवपुर पागीरे ॥ मारे० ॥
 विमल मुद्रा बेरागी, तत्रजोग हुवा प्रचु त्यागीरे ॥
 मारे० ॥ ३ ॥ मनरा मनोरथ फलिया, मांने तेवी—
 समां जिनवर मिलियारे ॥ मारे० ॥ दुःख दोहग
 पर करिया, मारा वखत अनोपम फलियारे ॥
 मारे० ॥ ४ ॥ मोतीने नृठा मेश्रो, मारी प्रगटी
 सुकृत देहारे ॥ मारे० ॥ दिठी प्रचुजीरी देहो,

मारानेण जराणा जाजा नेहोरे ॥ मारेण ॥ ५ ॥ हुवो
 अधिक उच्छावो, चित्रानी पुगी चावोरे ॥ मारेण ॥
 निरुपम त्रिचुवन राया, मेंतो पायो पुण्य वा वायोरे ॥
 मारेण ॥ ६ ॥ गुणमन गुणे गेगाया, मेंतो पास
 जिनेसर पायारे ॥ मारेण ॥ सुंदर अति सुख दाया,
 जाया जाया वामा राणीरा जायारे ॥ मारेण ॥ ७ ॥
 तीन प्रदिक्कणा दिनी, कर लटके वंदना किनीरे ॥
 मारेण ॥ ड्रव्य चाव पूजा किनी, सहु हाम हियानी
 सिधीरे ॥ मारेण ॥ ८ ॥ वरि रु वयापारें लिनो, मन
 मान्या कारजकिनोरे ॥ मारेण ॥ रु जरया उंट तेवी-
 सो, जिणमांहि राख्या जगदीसोरे ॥ मारेण ॥ ९ ॥
 पाटण हुंथी सिधाया, अनुक्रमे राय धनपुरे आयारे
 ॥ मारेण ॥ दाण लेवाने दाणी, आवे अतिहरख
 जराणीरे ॥ मारेण ॥ १० ॥ गुणियां उंटज लेखे,
 पण ओछो अधको पेखेरे ॥ मारेण ॥ दाणी अचरज
 पायो, तब मेघाने बोलायोरे ॥ मारेण ॥ ११ ॥ मेघो
 कहे सच वाणी, मांय मूरत पासनी आणीरे ॥
 मारेण ॥ राखीठे रु मांहि, घणा जतनासुं उमांही
 रे ॥ मारेण ॥ १२ ॥ आमूरत परजावे, ह्मने एक

अचरज आवेरे ॥ मारेण ॥ दाणी जिन विंव दीठो,
 चित्तडा मे लागो मीठोरे ॥ मारेण ॥ १३ ॥ पूजी
 करि प्रणामे, दाणी छोड गया निज ठामेरे ॥ मारेण ॥
 त्यांथी वुंदेसर आया, नर नारी हरख सवायारे ॥
 मारेण ॥ १४ ॥ सहजुन सामा आया, नारी मिळ
 संगल गायारे ॥ मारेण ॥ मोती चर थाल वधाया,
 वरि जेत निशाण घोरायारे ॥ मारेण ॥ १५ ॥ संघ-
 सहु चित्त हरखे, जिण विंव ने नेणे निरखेरे ॥ मारेण ॥
 ड्रव्य भाव कर ठाटो, वेसाड्या जिनवर पाटोरे ॥ मारेण
 ॥ १६ ॥ संवत चवदे छत्तीसे, काति सुदी बीज
 शुन दिवसेरे ॥ मारेण ॥ शुभ मोरत थावरवारो, प्रचु
 थाप्या जगत आधारोरे ॥ मारेण ॥ १७ ॥ मेघा मन
 शुन जावे, शुन भावे जावना भावेरे ॥ मारेण ॥
 जिन वर ना गुणगावे, जां दिन दिन दीपे वरधावेरे ॥
 मारेण ॥ १८ ॥

॥ इति ढाल चौथी संपूर्णम् ॥

॥ दोहा ॥

मेघासा नी ज्ञार्या, मृगा नेणी नार ॥

गुणवंती गुण रागणी, सुदर अति अजिराम ॥१॥

तेहनी कुंखे अवनरचा, पुत्र रतन श्रीकार ॥
मेणों ने महियो बेहु, दीसंता दीदार ॥ १ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

एक दिन काजल चाखे मेघने, अर सांचल सोरी-
बात ॥ दाम हमारो ओ तुं तो लेअने, अर गयो
हुंतो गुजरात ॥ एक० ॥ १ ॥ ते लेखो दीजो हो
वेवरा शुभ हणी, अर नही तर टूट से प्रीत ॥ वल तो-
मेघो कहे सुण काजल सही, अर धन खरचो धर्म
रीत ॥ एक० ॥ २ ॥ पांचसो दामे हो मूरत मनहूर,
अर मैं लिनी मन खंत ॥ कहे काजल आ प्रतिमा
किण कामरी, अर मारे धन सुं रंग ॥ एक०
॥ ३ ॥ मांही मांहे जगरुता बेहुजणा, अर वीता
बारे वरस ॥ सगपण हुतो ओ धन संसार में, अर वा-
लो विस्वा वीस ॥ एक० ॥ ४ ॥ जगरु रे बीचमे
ओ मूरत पासनी, पूजी सेठ धनराज ॥ तिण समे
गोठीने साणो दीयो, अर बात अधिक जहाराज ॥
एक० ॥ ५ ॥ नगरी रो नास हुंतो में जाणियो, अर-
आया तुरत अण ठाम ॥ सिय पारस प्रचु ना ओ बिं-
ब राखण जणी, अर करजे एह उपाय ॥ एक० ॥
६ ॥ प्रह उठी ने रथ वृषजा सुं जोतकी, अर तण उ-

पर तण ठाप ॥ एक निस्तर मिल तियो एकण
 मिल थकी, अर धरजे तुं धणियाप ॥ एक० ॥ ७ ॥
 थल वोरा पेराओ पर्वत सारीखा, अर दिसंत विक-
 राल ॥ तिण थरां एकलो तुं रथ खरजे, अर निरु र थ-
 को तत्काल ॥ एक० ॥ ८ ॥ वयता जिण थानक रथ-
 थंभीजसे, अर त्यां लीजे विश्राम ॥ वर थर ठामे
 ओ श्रीप्रचु पासे नो, अर चैत्य करे अजिराम ॥
 एक० ॥ ९ ॥ तिण समे गोठीने सोच उपनो, अर
 पाणी नही पापाण ॥ सुन्न रोई में वण धन देवल
 तणो, अर कम मंठावा मंठाण ॥ एक० ॥ १० ॥ सिय
 पारस स्वामीने परसादसुं, अर हुई से वाता साण ॥
 सहु वीर तंत स्वपन मांदि कही, अर जद्द गयो
 निजथान ॥ एक० ॥ ११ ॥ ह्वे प्रह उगोओ सेठ
 रथ जोतरयो, अर उपर ठविया साम ॥ वारे कोसे
 बुंदेसर हुंती आविया, अर थंजाणा रथ ठाम ॥
 एक० ॥ १२ ॥ चिंता चुरीने मारगनी खेदसुं, अर
 आई नींद तेवार ॥ स्वपना में सेवक सामीने कहे,
 अर सुणो सेठ महाराज ॥ १३ ॥

॥ इति ढाल पांचमी संपूर्णम् ॥

॥ ढाव छट्टी ॥

सुणो सुगुण सनेहा सेठजी, मीठी मायरी वाण-
 जी ॥ सुणो० ॥ जायजो दक्षिण दिश जणी, तिहां
 कने लीलो ठाणजी ॥ सुणो० ॥१॥ ते खणजो तुमे-
 जूमिका, अमी समो प्रगट से नीरजी ॥ सुणो० ॥
 तिहां कने धवरा ठे आकरा, हेठे धन छे सधी-
 रजी ॥ सुणो० ॥ २ ॥ स्वस्तिक सोपारी तणो, दी
 से ठे सेनाणजी ॥ सुणो० ॥ तिण धरती में पत्थर
 घणो, प्रगट उलट से खाणजी ॥ सुणो० ॥ ३ ॥
 पाणी पाषाण प्रगट्यो, प्रगट्यो बरेअ निधानजी ॥
 सुणो० ॥ सलावटो सिरोही वसे, तिण ने यहां
 बोलायजी ॥ सुणो० ॥४॥ सुणे मांहि जकजी, सि-
 लावट रे जायजी ॥ सुणो० ॥ देवल करजे तुं पास-
 नो, जिहां निरोगी थायजी ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ श्री-
 जिन जुवनाणे कामसुं, मत करजे कांइ ढीलजी ॥
 सुणो० ॥ तेरु सलावट आवियो, सेठ दियो
 सन्मानजी ॥ सुणो० ॥६॥ सखरे मोरत शुज दिने,
 मंकायो मंकाणजी ॥ सुणो० ॥ मन हरणीकिनी
 कोरणी, तेलो बरणीन जायजी ॥ सुणो० ॥७॥ दीठा

तन मन उल्लसे, नेन रया लोभायजी ॥ सुणो ॥
 उत्तम तीरथ अजिनवो, रचियो वलेश्र वखाणजी ॥
 सुणो ॥ ७ ॥ वखाणयो सारी पृथ्वी, लोक कहे वाइ
 वाइजी ॥ सुणो ॥ गोकी गाम सुनो हतो, तेतो
 तुरत वसायजी ॥ सुणो ॥ ८ ॥ गोकी गाम रे नामसुं,
 गोकी पास कहायजी ॥ सुणो ॥ धोरी धर्मरे अण
 जुगे, मेघो मोटो साइजी ॥ सुणो ॥ ९ ॥ इको अ-
 जिस चड्यो नही, विचमें हुई एक वातजी ॥ सुणो ॥
 काजल मेंघाने हवे इण विध कर से घातजी ॥ सु-
 णो ॥ ११ ॥

॥ इति ढाल ठही संपूर्णम् ॥

॥ ढाल सातमी ॥

काजल सहु लोकानी साखें, मेघाने इम भाखे रे ॥
 घात होवण हारी, होवण हारी होवण हारी ॥ तो
 कायन लागे कारी रे ॥ वात ० ॥ १ ॥ लागो धनजो
 देरा सारु, तो आधो देळं हम वारु रे ॥ वात ० ॥ २ ॥
 मेघो कहे पास मूरत पाई, तो हम घर अणहुंत
 न काई रे ॥ वात ० ॥ ३ ॥ पारस स्वामी ने सुप्रसादे,
 हम घर नव निद्ध थावे रे ॥ वात ० ॥ ४ ॥ लोक

सहु मेघाने वखाणे, तो जिम काजल दुःख आणे
 रे ॥ बात० ॥ ५ ॥ मनरी बात सहु मेघे जासी, तो
 काजल रयो विमासी रे ॥ बात० ॥ ६ ॥ किण हीक
 विध मेघाने हुं मारुं, तो मन चिंत्याही सुधारुं
 रे ॥ बात० ॥ ७ ॥ मनरी बात सहु मन में धारी,
 तो कुमी बात वणाई रे ॥ बात० ॥ ८ ॥ पुत्रीरो
 विवाह रचायो, तो मेघाने बोलायो रे ॥ बात० ॥ ९ ॥
 जहू राज निज सोणे आया, तो मरणे री घात
 बताई रे ॥ बात० ॥ १० ॥ काजल सही तो ने
 मारेसे, तो दुध मांई विष देसे रे ॥ बात० ॥ ११ ॥
 तिण सुं दुध चोजन मत करजो, तो बात सहु
 सरदहजो रे ॥ बात० ॥ १२ ॥ जहू राज निज
 आनक पूगा, तो जितने सूरज उगो रे ॥ बात०
 ॥ १३ ॥ मेघा दिन उगे मन वारयो, तो काजलरे
 घर आयो रे ॥ बात० ॥ १४ ॥ आदर मान अधिक
 देव रायो, तो जुगत सुं चोजन जीमायो रे ॥ बात०
 ॥ १५ ॥ वरि विष वैरी दुधज दीनो, तो ते पण मेघा
 पीनो रे ॥ बात० ॥ १६ ॥ चावी बात विष याद न
 आई, तो ते जहूराय बताई रे ॥ बात० ॥ १७ ॥

दुध जोर्जन मेघे मरणज पाम्यो, तो हुवा शुभ गत
 हानी रे ॥ वात० ॥१०॥ मृगा देवी मेणो महियो
 आयो, तो देखीने अति दुःख पायो रे ॥ वात०
 ॥११॥ झोह करी कुल तिलक जमायो, तो काजल
 चूंकि विचारी रे ॥ वात० ॥१२॥ कुल हीने काजल
 काम किनो, तो कुलने कलंकज दीनो रे ॥ वात०
 ॥ १३ ॥ पापी जाई चूंको किनो, तो अप जस जग-
 मांहे लिनो रे ॥ वात० ॥ १४ ॥ वेनी आ वात भें
 नवी किनी, तो मो सिर दोखी दीनी रे ॥ वात०
 ॥१५॥ हुवण हारी सुं जोर न चाखे, तो अम वेनी
 मन वारयो रे ॥ वात० ॥१६॥ लोक सहु इम फिट श
 पाखे, तो मोखा मोखी कह दाखे रे ॥ वात० ॥१७॥
 मेणे महिये धीरज धारी, तो मरण मेघा रो सुधा-
 रयो रे ॥ वात० ॥ १८ ॥ हवे काजल सारो संघ
 घुलायो, तो देवल इंको चमायो रे ॥ वात० ॥१९॥
 इंको देवल शिखर चढायो, तो परुने धरती आयो
 रे ॥ वात० ॥ २० ॥ दूजी वार तीजी वार चढायो,
 तो शिखर उपर नवी ठायो रे ॥ वात० ॥२१॥ तिण
 समे जेहे उचरी वाणी, ते पण सगला जाणी रे ॥

वात० ॥३०॥ मेणो महियो जे चामेसे, ते तो इंग्र
 थिर रहसे रे ॥ वात० ॥ ३१ ॥ संवत चवदे ने
 चुंबाले, तो शुक्र भोरत शुभवारे रे ॥ वात० ॥ ३२ ॥
 तिण दिन इंडो शिखर चढायो, तो पुण्ये अचल
 रहायो रे ॥ वात० ॥ ३३ ॥ देवल देव विमान
 समदोसे, तो जोतां तन मन हिंसे रे ॥ वात० ॥३४॥
 देहरे प्रतिष्ठा प्रचुजी नी कीनी, तो किरत निर मळ
 लिनी रे ॥ वात० ॥ ३५ ॥ ओ तीरथ मेघे साह
 रचायो, तो नामे अचल रहायो रे ॥ वात० ॥ ३६ ॥
 मेघे सुतरा मनोरथ फलिया, तो धन खरचे जस
 लिनो रे ॥ वात० ॥३७॥ महिर तीरथ गोडी चावो
 तो ठाम ठाम मांहि ठावो रे ॥ वात० ॥ ३८ ॥
 सुर असुर नर कोणा कोनी, तो सिव करे करजोनी
 रे ॥ वात० ॥ ३९ ॥ मद मत्सर सहु मन सुं छोनी,
 तो गायो गोनी गोडी रे ॥ वात० ॥ ४० ॥

दोहा ॥

मोरी सहियांए जयो जयो जग गोडी धणी, अर
 एकल मळ अवीर ॥ मोरी सहियांए दोयलागज
 बंधण जणी, अर सायब साचो सिंह ॥ मोरी सहि-

यांए० ॥ १ ॥ मोरी सहियांए, देश त्रिदेशे कांई
 फिरो, अर कांई करो मनमें विचार ॥ मोरी स-
 हियांए, एक मने ओ जवीजणो, अर सेत्रो संत
 साधार ॥ मोरी सहियांए० ॥ २ ॥ मोरी सहियांए,
 पुत्र अपुत्र्याने देवे, अर निर्धनीयां धन होय ॥
 मोरी सहियांए, परचा पूरण इण जुगे, अर सुर तरु
 समो प्रजु एह ॥ मोरी सहियांए० ॥ ३ ॥ मोरी
 सहियांए, आज घडी सुधकी जली, आज जन्म
 परिमाण ॥ मोरी सहियांए, गायो रसना कलि युगे
 थिर चित्त थलरो रांण ॥ मोरी सहियांए० ॥ ४ ॥

॥ कलश ॥

संवत अठार पचवीस वरसे, चेतसुदी तेरस
 दिने, थलचाय धायो गुणे गायो, हरख धरने शुज
 मती, पाठक श्री खेमा प्रमोद शीसा, अनोपचंदने
 शुज मही, समएह पंचम अरे जायो, धवल धींग
 गोकी धणी ॥ १ ॥

॥ इति ढाल सातमी संपूर्णम् ॥

॥ इति श्री गोडी पार्श्वनाथ जिन वृद्ध स्तव
 संपूर्णम् ॥ ५० ॥

॥ अथ श्री सिद्धगिरी स्तवन ॥

॥ देशी गरवाकी ॥

तेदिन क्यारे आवसी हे । (जोरे बहिनी)
जासुं सिद्धाचलनी जात ॥ मोरी सहियां हे ॥
पाजे चढता प्रेमसुं हे । (जोरे बहिनी) गाईये
गुण अखियात ॥ मोरीसहियां हे ॥ तेदिन० ॥ १ ॥
अदनुत उंचो देहरो हे । (जोरेबहिनी) मूल-
नायक आदिनाथ ॥ मोरी सहियांहे ॥ जोली
जगत जली परेहे । (जोरे०) निरख्या होय सनाथ ॥
मोरी० ॥ तेदिन० ॥ २ ॥ नाहीं निरमल नीरसुं
हे । (जोरे०) पहिर खीरोइक चीर ॥ मोरी० ॥ के-
शर भरिथ कचोलमीहं । (जोरे०) पूजसुं सुगुण सु-
धीर ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ३ ॥ रूमी रायण छांही हे ।
(जोरे०) आदि जिणंद उदार ॥ मोरी० ॥ तिहां
जगनाथ समो सरयाहे । (जोरे०) पूरव निनाणुं-
वार ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ४ ॥ इण गिर वरिये उपरा
हे । (जोरे०) सीधा साधु अनंत ॥ मोरी० ॥ चौ-
मासे रह्या दोय जिनवरा हे । (जोरे०) अजितजि-
णेशर शांति ॥ मोरी० ॥ ते० ॥ ५ ॥ चेलणा तलाई

सिद्ध सिद्धाहे । (जोरे०) अद्वचुन उल्लका जैल ॥
 मोरी० ॥ सिद्धवरु मंत्रुंजे नदी वहे । (जं.रे०) क-
 रिये नित रंग रोल ॥ मोरी० ॥ने० ॥६॥ इण डूंगर
 दीठां थकां हं । (जोरे०) उपजे परमानंद ॥ मांगी० ॥
 गहिरा गिरिवर वांइकीहे । (जं.रे०) चाहे नित
 जिणचंद्र ॥ मोरी० ॥ ने० ॥ ७ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरी स्तवन संपूर्णम् ॥ ५१ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

आज आप चालो सहियो, सिद्धाचल गिर जइयै ॥
 सुण वहिनी ए गिरीना महिमा । आदिजिनंद इम
 जाखी ॥ जरथादिक नर पतिने आगल । इंद्रादिक
 सहु साखीरे ॥ (आज०) ॥१॥ इण गिरि वरिये वाळ
 अनंत । साधु अनंता सीधा ॥ जनम मरणना दुःख
 छोराने । अमल अखय गुण लीधारे ॥ (आज०) ॥२॥
 इणगिर सनमुख पगलां जरतां । आतम शुद्ध सु-
 भावै ॥ कोरु भवांरा पातिक कीधा । एक पलक में
 जावैरे ॥ (आज०) ॥३॥ सासतो तीरथ ए संश्रुजो ।
 जोतां लागे सीधो ॥ तीन चतुवन में इण गिर तोले ।
 बीजो कोई न दीवैरे ॥ (आज०) ॥ ४ ॥ नीरंजनसुं

नेह धरीने । आगे ओल्लग करस्यां ॥ अद्भुत आदि-
 जिनेसर निरखी । प्रेम सुधारस पीस्यांरे ॥ (आज०)
 ॥५॥ पुह सुगंधा लेई पच रंगा । हार सुगंधा गूंथी ॥
 पहिरावी प्रभु कंठे लहिस्यां । शिव मारगनी सूथी
 रे ॥ (आज०) ॥६॥ गहिर स्वरें जिनवर गुणगातां ।
 यात्र निनाणूं करिये ॥ मन गमती जमती विच
 जमतां । जव सायर निस्तरियेरे ॥ (आज०) ॥ ७ ॥
 पूरब निनाणूं वार प्रथम जिन । रायण रूखे आया ॥
 ते तीरथ शुभ भावे फरसी । करिये निरमल कायारे ॥
 (आज०) ॥ ८ ॥ लाज उदे ए गिरवर लहिये ।
 कहे इम केवल नाणी ॥ श्रीजिनचंद सदा हित
 बच्छल । प्रेम घणें चित आणीरे ॥ (आज०) ॥ ९ ॥
 ॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

॥ श्रीचंदाप्रभु पाहुणारे ॥ एदेशी ॥ नमो रे नमो
 सेत्रुंज गिरीरे । त्रिकरण शुद्ध त्रिकालरे ॥ पाप प्रकल
 दूरे टलेरे । तूटे करम जंजालरे ॥ (नमो०) ॥१॥ पूरब
 निनाणूं समोसरधारे । प्रथम जिनंद जगदीशरे ॥
 बावीशम जिनवर विनारे । समोसरयां तेवीशरे ॥

(नमो०) ॥ २ ॥ साधु अनन्त अणशण ग्रहीरे ।
सीधा एहिज ठोररे ॥ काल आगामी वलीसीऊ-
स्येरे । साधु अनन्ती कोडरे ॥ (नमो०) ॥ ३ ॥
अनंत कट्याणक चूमिकारे । महिमावन्त महन्तरे ॥
सासतो तीरथ ए सहीरे । अतिशय जास अनंतरे ॥
(नमो०) ॥ ४ ॥ कोमि जवंतर जे कियारे । पा-
तिक विविध उपायरे ॥ सेत्रुंजे सनमुख चालतारे ।
पग पग ते सहु जायरे ॥ (नमो०) ॥ ५ ॥ धन दिन
तेहिज जाणसुरे । वहिस्युं सेत्रुंज केरी वाटरे ॥ छहरी
यथा विध पालस्युरे । संघ सहित ग्रहि गाटरे ॥
(नमो०) ॥ ६ ॥ पग पग उच्छव अति घणारे । पग श
याचक दानरे ॥ प्रेम जगति साहमी तणीरे । जी-
णोद्धार प्रधानरे ॥ (नमो०) ॥ ७ ॥ धन ते गिरिराय
निरखसुरे । चढती मंगल मालरे ॥ मणि मोतीयके
वधावस्युरे । रजत सोवन जर थालरे ॥ (नमो०) ॥ ८ ॥
धन दिन ते गिर फरसस्युरे । करस्युं पावन मोरी-
कायरे ॥ जगति जुगति जुहारसुरे । नाभि नंदन
जिनरायरे ॥ (नमो०) ॥ ९ ॥ द्रव्य जाव करस्युं मुदारे ।
पूजा विविध प्रकाररे ॥ जावे जावना भावसुरे ।

करसुं सफल अवतारे ॥ (नमो०) ॥१०॥ रतन त्रयी
 जमती भलीरे । देसुं तेधर बुद्धिरे ॥ जव २ त्रमण
 निवारसुरे । लहिसुं आनम सुद्धिरे ॥ (नमो०) ॥११॥
 विध फरसण मन माहरोरे । मांदिग्यां दिन रातं ॥
 पुन्य प्रबलथी पामियोंर । उज्ज्वल गिरि केरी जा-
 तरे ॥ (नमो०) ॥ १२ ॥ नाथ धूलवा सुपसायथीरे ।
 कारज सगला सिद्धिरे ॥ कहे जिन हरषसूरि सशारे ।
 होयजो मंगल वृद्धिरे ॥ (नमो०) ॥ १३ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

॥ (देशी पंथीकानी) ॥ अंग उमात्रो मोने अति
 घणो । जेटवा विमल गिरंदरे । (पंथीका) । नाजि-
 राया कुल चंदलो । जिहां वसे मरुदेवी नंदरे । (पं-
 थीका) । वहिलुं बेलरे पंथी महारा वहिलुं बांदरे
 ॥ १ ॥ सेत्रुंजो ठे कितनीक दूररे । (पंथीका वहि०)
 पाळिताणो नगर सुहामणो । रूमी ललिता सरनी
 पाळरे ॥ (पंथीका) । जिहां अंबलारे वरुला घणा । जुक
 रही चंपलानी कालरे ॥ (पंथीका वहि०) ॥२॥ धन
 ते पंखी पारेका ! सेत्रुंज वसियाठे सोररे ॥ (पंथीका) ॥

कृमाहो करिने जे घर रहे । माणस नहीं ते ढोररे ॥
 (पंथीडा वद्विं०) ॥ ३ ॥ सेत्रुंज वाटेजी चालतां ।
 जीणी २ उमे खेहरे ॥ (पंथीका) । मेला थाये संघना
 कापका । निरमल थाये देहरे ॥ (पंथीका वद्विं०) ॥ ४ ॥
 जंचो देहरो आदिनाथनो । आगल चोकविसालरे ॥
 (पंथीका) । जिहां मिल २ घणा मानवो । गावे प्रचु
 गुण मालरे ॥ (पंथीका वद्विं०) ॥ ५ ॥ घस केसर जर
 वाटका । पूजे जिनवर अंगरे ॥ (पंथीका) । फूलां हंदो
 सोहे प्रचु सिर सेहगे । दिवलानो जाति अचंगरे ॥
 (पंथीडा वद्विं०) ॥ ६ ॥ ए गिर वर दीठां माहरे । उपजे
 परम आनंद रे ॥ (पंथीका) । मोने नेटणरोजी
 कोरुंछे । प्रेम घणो जिनचंद्र ॥ (पंथीका वद्विं०)
 ॥ ७ ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५४ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

जात्रा निनाणु करिये विमल गिरी । जात्रा नि-
 नाणुं करिये । पूरव निनाणुं वार सेत्रुंज गिरी । ऋषज
 जिनद समो सरिये । (विम० जा०) ॥ कोरुि सहस
 जव पातिक दूटे । सेत्रुंज सामे-रुग भरिये ॥ (वि०

जा०)॥१॥ चोथ ठठ दोय अठम तपस्या । करि चढिये
गिर वरिये ॥ (वि० जा०) । पुंडरीक पद जपिये हरखे ।
अध्यवसाय शुच धरिये ॥ (वि० जा०) ॥२॥ पापी
अज्ञवी निजर न देखे । हिंसक पिण ऊधरिये ॥ (वि०
जा०) । जूमि संथारी ने नारि तणो संग । दूर थकी
परि हरिये ॥ (वि० जा०) ॥३॥ एकल आहारी ने स-
चित परिहारी । गुरु साथे पद चरिये ॥ (वि० जा०) ।
परिक्रमणा दोय विधसुं कीजे । पाप परुल विष ह-
रिये ॥ (वि० जा०) ॥४॥ कलि काले ए तीरथ मोटो ।
प्रवहण समभवदरिये ॥ (वि० जा०) । उत्तम ए गिरवर
सेवंता । पदम कहे जव तरिये ॥ (वि० जा०) ॥५॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५५ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

आज वधाई म्हारे रंग वधाई । मोतियके० । एचाला ॥
सिद्धगिरि जेटो जवि जावे । ज्युं सुख संपति आनंद
थावे ॥ सि० ॥ ए गिरवर के जेटण सेती । पूरव संचित
अध सहु जावे ॥ सि० ॥१॥ रायण रुंखे रिषज्जि-
णेर । पूरव निनाणुं आया स्वजावे ॥ सि० ॥ पुंरु-
रगिरिकी महमा जिननें । जरतादिक सब जनकुं

सुणावे ॥ सि० ॥१॥ सासतो तीरथ तीन जुवनमें ।
 शिवपुरी पाज प्रत्यक्ष कहावे ॥ सि० ॥ कोडि अनन्त
 साधु इण ऊपर । मुक्ति गये इण गिर के प्रजावे ॥ सि०
 ॥३॥ एक वार गिरकुं भेटण से । सहस कोरुना पातक
 जावे ॥ सि० ॥ नाजि राय मरु देविके नन्दन । आ-
 दि जिनन्द जेठ्यां सुख पावे ॥ सि० ॥ ४ ॥ अदञ्जुत
 विंव अनोपम शोचित । चौसुख जिनवर अति मन-
 चावे ॥ सि० ॥ देश देशांतर से बहु नरगण । आय
 जखी विध पूज रचावे ॥ सि० ॥ ५ ॥ कपूर कस्तुरी
 केसर घोक्षी । मन सुध प्रजुके चरणे चढावे ॥ सि० ॥
 आज हमारे सुर तरु प्रगट्यो । मनमे हरख आनंद
 करावे ॥ सि० ॥ ६ ॥ आज रवि कंचन मझ ऊगो ।
 विमलाचल जेठ्या शुभ चावे ॥ सि० ॥ मुर्शिदावाद
 अजीम गंजमें । गोत्र डुधेज्या प्रगट कहावे ॥ सि० ॥
 ७ ॥ मोह तिमर अध दूर करणकों । बुधसिंह यात्रा
 करी शुभभावे ॥ सि० ॥ गगन जोग गृह इंडु संवच्छर ।
 चैत्र उज्वल तेरस मन भावे ॥ सि० ॥ ८ ॥ आयहसें
 श्रीअजयराजकु । साथ भखी विध यात्रा करावे ॥
 सि० ॥ संघ साथ श्री लक्ष्मीप्रधानना । शिष्य मोहन

प्रचुना गुण गावे ॥ सि० ॥ ए ॥

॥ इति श्री सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

॥ पुनः सिद्धगिरि स्तवन ॥

जाव धर धन्यदिन आज सफलो गियो । आज
जमें सजनी आनंद पायो ॥ भाव० ॥ हर्ष धरि नि-
जरि जरि विमलगिरि निरखकर । रजत मणि क-
नक मोतिय वधायो ॥ जाव० ॥ १ ॥ पग पगे उमग
धर पंथ नित पूठतां । धन्य दोय चरण जिहां तलक
आयो ॥ आज धन दीह जागी सुकृतकी दिशा ।
आज धन दीह दिन सुजश गायो ॥ जाव० ॥ २ ॥
दूर दुर गत टलिय यात्र विधसुं करी । पुण्य जंमार
पोते जरायो ॥ वदत जिनराज मनरंग सुरगिर सि-
खर । रिषन्न जिनचंद सुरतरु कहायो ॥ जा० ॥ ३ ॥

॥ श्री इति सिद्धगिरि स्तवन संपूर्णम् ॥ ५७ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग रामकली ॥

ऊठेने मोरा अतिम राम । जिन मुख जोवा जइ-
येरे ॥ जिनजीनो दरशण ठे अति दोहिलो । ते किम
सोहिलो जाणोरे ॥ वार २ मानव जव एहवो । जु-

कत्रो मुश्किल टाणोरे ॥ ऊठो० ॥ १ ॥ चार दिवस नो
 चटको मटको । देखीने मत राचोरे ॥ विणसी जातां
 वार न लागे । काया घटठे काचोरे ॥ ऊठो० ॥ २ ॥
 अनंतगुणे ज्ञरियो हे जिनवर । पूरव पुण्ये पायोरे ॥
 एहने देखी दिलमें आनंद । करतुं सदा सवायोरे ॥
 ऊठो० ॥ ३ ॥ हीरो हाथ अमोखख आयो । मूढ
 हिवे मत गम जोरे ॥ सहिज सखूणा पास जिनंदजी
 सुं । राजी हुय चितरम जोरे ॥ ऊठो० ॥ ४ ॥ मन मा
 नीता माहरा आतम । करजे सुकृत कमाईरे ॥ दाज
 उदय जिनचन्द्र लहीने । वरतुं सिद्ध वधाईरे ॥
 ऊठो० ॥ ५ ॥

॥ इति वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ५७ ॥

॥ अथ श्री ऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग केदारो ॥

भज मन नाभि नन्दन देव ॥ (जज०) ॥ ध्यान
 मुनि जन अग्निग धारे । सुर नर करत हैं सेव ॥
 (जज०) ॥ १ ॥ चक्री चूपति बने सुर पति । वासुदेव
 बलदेव ॥ नमत ब्रह्मा रुद्र नारद । शेष मणिधर सेव ॥
 (जज०) ॥ २ ॥ अशरण शरण है विरुद जाको ।

चक्रि वत्सल देव ॥ राजसिंह प्रचु रिषज शिरपर ।
नाथ है नित मेव ॥ (चज०) ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीऋषभजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग खम्बाज ॥

धनी १ पल १ छिन १ निशदिन । प्रचुको सम-
रण करलेरे ॥ (घ०) ॥ प्रचु समरण सब पाप कटत
है । अशुच करम सब हरलेरे ॥ घ० ॥ १ ॥ मन
वच काय लगी चरणन नित । ज्ञान हिये में धरलेरे ॥
घ० ॥ दौलतराम प्रचु गुण गावे । मन वंछित फल
वरलेरे ॥ घ० ॥ २ ॥

॥ इति वैराग्य पदम् संपूर्णम् ॥ ६० ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग केरवो ॥

रसना सफल जई । में तो गुन गाये महाराज ॥
रसना० ॥ एध्याककी ॥ परम ध्यानंद प्रगट जयो
मेरे । जब देखे जिनराज ॥ रसना० ॥ १ ॥ अति
उज्वल जस सुन जिनजीको । संच्यो सुकृत स-

माज ॥ नाक नमन करता प्रचुजीकुं । सारथा आ-
तम काज ॥ रसना० ॥२॥ पद पंकज प्रचुके फरसत
ही । दूर गई दुःख दाऊ ॥ कहत कामा कल्याण
सुपाठक । अब मोहि अविचल राज ॥ रसना० ॥३॥

॥ इति श्रीवैराग्य पद संपूर्णम् ॥ ६१ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग राम गिरी ॥

सोइ सोइ सारी रेन गुमाइ । वेरन निद्रा तु कहां
से आई ॥ सोइ० ॥ एआंकमी ॥ निद्रा कहे मेंतो
बाली रे भोली ॥ वने घने मुनि जन कु नाखुरे ढोली ॥
सोइ० ॥ १ ॥ निद्रा कहे मेंतो जमकी टासी ॥
एक हाथ में मुक्ति और दूसरे हाथ में फांसी ॥
सोइ० ॥ २ ॥ समय सुंदर कहे सुनो चाई वनियां ॥
थाप कुवे सारी कुव गइ दुनियां ॥ सोइ० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ६२ ॥

॥ पुनः वैराग्य पद ॥

कहा कीनो नर जब पाके । रहा मोह मद ठाके ॥
देक ॥ वृद्ध अवस्था आय लगी तब । बेठो बुद्धि

गुमाके ॥ कहा० ॥ १ ॥ जुष्ठबोल धन जोरु लि-
योहे। जोले जीवन को समजाके ॥ कुमति नार संग
राचरह्यो है । सुमति गुन को नसाके ॥ कहा० ॥ २ ॥
मात तात सुता सुत नारी । इनसे नेह लगाके ॥
ए सब अपने घरको आवे ॥ तेरी देह जलाके
॥ कहा० ॥ ३ ॥ सत गुरु कहे परजव सुख करले ।
धरनन चित्त लगाके ॥ अब सुनले फिर कोन
सुनावे । श्रवनन शुद्ध कराके ॥ कहा० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥६३॥

॥ पुनः वैराग्य पद ॥

॥ राग बेलावल ॥

रे मन क्युं जिन नाम विसारयो ॥ षयुं ॥
रे मन० ॥ त्रिषय विकार महा मद् धारयो । जनम
जुआ ज्युं हारयो ॥ रे मन० ॥ १ ॥ जीने लोकुं नर
देही दीनी । गर्ज की आंच उद्धारयो ॥ प्रचुजी
कुं तें शठ मूरख । एक घनी न संचारयो ॥ रे म-
न० ॥ २ ॥ नहीं कठु दान शीयल तप पूजा । न-
हीं जिन नाम उचारयो ॥ जैन धर्म चिंतामणी
सरिखो । काच जाण कर कारयो ॥ रे मन० ॥ ३ ॥

करले सुकृत दया उरु र ले । जो जव चाहत सु-
धारयो ॥ हरखचंद्र वर्धमान जिनेसर । श्वसर
मांहे न संभारयो ॥ रेमन० ॥ ४ ॥

॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥६४॥

अथ कुमति मुख वज्र चपेटका

अथवा ननव मुख ॥

कुमति इट तजो कदाग्रहकुं । जिन प्रतिमा पूजा
स्तव करके ॥ ग्रहो शुद्ध समकित कुं ॥ कु० ॥ १ ॥
श्रीजिन प्रतिमा जिनेश्वर सदृश । हरो दुःख-
संशयकुं ॥ गणधर रचित सूत्र चित धरके । तजो
विज्रम जयकुं ॥ कु० ॥ २ ॥ द्रव्य जाव जिन पूजन
संस्तव । सध चतुर विधकुं ॥ मुनिवर श्री जिनप्र-
तिमा सन्मुख । करत जाव स्तवकुं ॥ कु० ॥ ३ ॥ नाम
व्रण द्रव्य जाव जिनेश्वर । वंदन योग्य मुनिकुं ॥
श्रीगणांग मध्य है विवरण । सत्य कहे इनकुं ॥
कु० ॥ ४ ॥ वीतराग निर्विकार प्रतिमा । द्वांति कहा
तुमकुं ॥ कारज सिद्ध कारण करी होवत । ग्रहो शुद्ध
नय पयकुं ॥ कु० ॥ ५ ॥ चित्राकार रूप स्थयनको ।

स्थानक मुनिजनकुं ॥ दशवैकालिक मूल सूत्रमें ।
 जोग नहीं ननकुं ॥ कु० ॥६॥ जैसे स्त्रियां रूपकर
 उपजत । विखेजाव जीवकुं ॥ तैसे ठवण जिनेश्वर
 देखत । धर्म राग जविकुं ॥ कु० ॥७॥ लब्धि प्रजाव
 चारण मुनि जावत । छीप नंदीश्वरकुं ॥ तहां अंजन
 पर्वत ऊपर । वदे ठवण जिनकुं ॥ कु० ॥ ८ ॥ यो
 अधिकार सूत्र भगवति में । ज्रम मति जंजनकुं ॥
 वीर जिनेश्वर श्रीमुख ज्ञाखित । गौतम गणधरकुं ॥
 कु० ॥ ९ ॥ द्वादश व्रतके धारक श्रावक । कटिपत
 नहीं तिनकुं ॥ अन्य तीरथी ग्रही जिनप्रतिमा ।
 वंदे नहीं तिनकुं ॥ कु० ॥ १० ॥ सूत्र उपासक दशा
 अच्यंतर । आनंद श्रावककुं ॥ कुगुरु कुदेव कुतीर्थी
 कुं त्यागे । वंदित जिन बिंबकुं ॥ कु० ॥११॥ सम-
 कित धारक सती द्रौपदा । पूजे जिनेश्वरकुं ॥ ज्ञाता-
 सूत्र मांहे है वर्णव । छांडो वृथा हठकुं ॥ कु० ॥१२॥
 एसे वचन सुधारस अमृत । सुचित नहीं तुमकुं ॥
 मिथ्या विषके उदय जावसे । वमन होत तिनकुं ॥
 कु० ॥१३॥ जिन पूजन मेहिंसा जाखत । जव जय
 नहीं तिनकुं ॥ संवर द्वार प्रश्नव्याकरणे । पूजा अ-

हिंसककुं ॥ कु० ॥ १४ ॥ केवल हिंसा २ पुकारत ।
 श्रद्धा जिष्ट जीवकुं ॥ हिंसा स्वरूप जेद नहीं
 जानत । खेंवत मत पद्मकुं ॥ कु० ॥ १५ ॥ त्रिविध २
 मुनि हिंसा त्यागत । माहणता सवकुं ॥ नदी उतरत
 जब हिंसा होवत । बंध नहीं तिनकुं ॥ कु० ॥ १६ ॥
 तैसे जिनवर पूजन में । हिंसा नहीं जविकुं ॥ मोक्ष-
 मारग साधन अति उत्तम । समणोपासककुं ॥ कु०
 ॥ १७ ॥ दृष्ट एकांत पद्मके धारक । मानत नहीं इन
 कुं ॥ स्याद्वाद घट मुदगर न्याय करी । प्रहंसत
 तिनकुं ॥ कु० ॥ १८ ॥ चूर्णि जाप्य सूत्र निर्युक्ति ।
 मध्य निपेधन पूजनकुं ॥ उत्थापक ये कहां से प्रगटे ।
 ये आश्चर्य हम कुं ॥ कु० ॥ १९ ॥ दशपुर नगर
 चोमासिक । स्तवना करि प्रचुकुं ॥ खरतरगच्छ
 शाजत अति सुंदर । श्रेय सुख श्री संघकुं ॥ कु०
 ॥ २० ॥ वेद युग्म नंद चद्र समवच्छर । कार्तिककृष्ण
 पद्मकुं । कुमति निकदन शिक्षा संपूर्ण । तिथी-
 त्रयोदशीकुं ॥ कु० ॥ २१ ॥ जिन प्रतिमा जीके चरण
 कमलको । सरणे श्रेष्ठ माय कुं । सोख्यरत्न वांठिन
 प्रनु तुमसे । अविचल पद्म ध्रुवकुं ॥ कु० ॥ २२ ॥

॥ इति कुमति मुख वज्र चपेटका अथवा ननवमुख
संपूर्णम् ॥ ६५ ॥

॥ अथ श्रीअजित जिनस्तवन ॥

॥ राग जैरवी ॥

अजित जिन लगन लगी सो लगी । तुमरे
दरस बिन पल न सुहावत । अच्यंतर प्रीति जगी ॥
अजित० ॥ १ ॥ विकल जयो में कुदेव की संगत ।
चितधन संपदा उगी ॥ अजित० ॥ २ ॥ ताते कुदेव
देख जय उपजत । कृतघनी देत दगी ॥ अजित० ॥
३ ॥ उपसम रस द्रग देख जिनंद्रको । जम मति
जमत जगी ॥ अजित० ॥ ४ ॥ सौख्यरत्न कुं तव चरनन
बिन । अन्य न होत सगी ॥ अजित० ॥ ५ ॥

॥ इति अजित जिनस्तवन संपूर्णम् ॥ ६६ ॥

॥ अथ श्री गौडीपार्श्वजिनस्तवन ॥

श्रीमत गवकी पार्श्वजिनेश्वर । प्रगटे सकल लोक
सुख कारा ॥ टेर ॥ मिथ्यातमजर वारण कारण ।
मोह जनित सदलेय निवारा ॥ शुद्ध स्वरूपध्येय
निज धारक । जारक कर्म शत्रुगण सारा ॥ श्री० ॥ १ ॥

परमात्म पुरुषोत्तम तुमही । भव जय जंजण
 तारण हारा ॥ मूरख भेद ज्ञान नहीं पावत । सं-
 तन कुं प्रचु पावन कारा ॥ श्री० ॥ १॥ दोष रहित
 नृपण नृपित तनु । कहि न सके कवि गुण विस्तारा ॥
 पुण्य उदय करी दर्शन पायो । सफल दिवस है आज
 हमारा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वामानंदन पार्श्वजिनेश्वर ।
 सुरतरु सम प्रचु दान दातारा ॥ सकल संघ मन
 वञ्चित पूरण । ग्राम विचुरा में दियो दिदारा ॥
 श्री० ॥ ४ ॥ संवत जगणीसे गुणताले । मास चाद्र-
 पद चवदसे सारा ॥ संघ मुख्य सौजाग जाल
 शशि वरधन । सौख्य रत्न सुख कारा ॥ श्री० ॥ ५ ॥
 ॥ इति श्रीगौमीपार्श्वजिनस्तवन संपूर्णम् ॥ ६७ ॥

॥ अथ श्रीशांति जिन स्तवन ॥

शांति जिनंटा मुज विनती । अवधारो गुण ज्ञातारे ॥
 सुनिजर कर मुज ऊपरे । विरुद सुणयो जग त्रातारे ॥
 शांति० ॥ १ ॥ दिवस घणारी मुज मने । जेटवा प्रचु
 मुख चंदोरे ॥ आज सुकृत प्रगटी ढशा । निरख्यो
 शिव सुख कंदोरे ॥ शांति० ॥ २ ॥ सूदम वादर हुं
 जम्यो । काल अनंता नंतोरे ॥ हिव तुज चरण शरण

विना । अपराधी न दुःख अंतोरे ॥ शांति० ॥३॥ तुं
 वल्लभ मुक्त तुं धणी । तुं मुक्त प्राण आधारेरे ॥ प्राण
 सनेही तुक्त विना । पर सुर न नमुं निरधारोरे ॥
 शांति० ॥४॥ तुक्त अतिशय गुण संपदा । सकल संघ
 उपकारोरे ॥ तुक्त कल्याणक ने समे । नारक थावर
 सुखकारोरे ॥ शांति० ॥५॥ दायक मारग मोहनो ।
 ज्ञायक विश्व स्वरूपोरे ॥ धायक घाति कर्मनो । ध्या-
 यक शुद्ध स्वरूपोरे ॥ शांति० ॥ ६ ॥ शांति सुधारस
 आपिये । कापिये भव दुःख फंदोरे ॥ ठापिये दरशन
 मुद्रिका । थापिये मुक्त निज बंदोरे ॥ शांति० ॥ ७ ॥
 मुक्त मन मोहन वेलनी । मूरति शांति जिणंदोरे ॥
 अविहउ रागे सींचवुं । पासुं परमानंदोरे ॥ शांति० ॥ ८ ॥
 उगणी से छत्तीस में । लश्कर शांति जिणंदोरे ॥
 आप्या माधव सुदी सप्तमी । सौख्यरत्न चिरनंदोरे ॥
 शांति० ॥ ९ ॥

॥ इति श्री शांतिजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ६७ ॥

॥ अथ श्रीऋषभजिन स्तवन ॥

॥ राग होली ॥

रिषभ जिन तुम सम नांही । जगमें हितकारी ॥
 टेर ॥ नाजिराय नंदन चंदन सम । अहित ताप सब

टारी ॥ जव्य सरोज विकासन उदियोरी । सहस
 किरण अवतारी ॥ रिषभ० ॥ १ ॥ तुम गुण समरण
 धारत चित्तमें । विघ्न टरत बहु चारी ॥ पूरण सकल
 मनोरथ जविके । सुर तरु सम अनुकारी ॥ रिषभ० ॥
 २ ॥ दीन दयाल दया कर सुनिये । दास अरज
 उर धारी ॥ तारण तरण विरुद सुण तेरो । आयो
 सरण तिहारी ॥ रिषभ० ॥ ३ ॥ उच्छव अष्ट दिवस
 लग कीनो । लीनो सुजस सुधारी ॥ धर्म विमुख
 मुख श्याम जो कीनो । श्रीसंघ मंगल कारी ॥
 रिषभ० ॥ ४ ॥ संवत जगणीसे सेंतीसे । माघ द्वि-
 तीया शुचि सारी ॥ नगर इंदोर पंचम अंग पूरण ।
 सौख्यरत्न सुखकारी ॥ रिषभ० ॥ ५ ॥

॥ इति ऋषभ जिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ६९ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ राग काफ़ी सिंधुरा ॥

अहो सुख कंद पार्श्वजिनचद । नील वरण तनु
 द्युति अति राजत । लाजत रवि शशि वृंद ॥ पा० ॥ १ ॥
 प्रभु द्रग दरस वियोग जनित दुःखारोधे निज गुण
 वृंद ॥ उप सम रस नर वरसत जविये । प्रगटत

अनुत्तव गंध ॥ पा० ॥ २ ॥ वामा नंदन डुरित
निकंदन । रंजन जविजन वृंद ॥ गंजन मोह महा-
रिपु डुर्जन । जंजन जव जय फंद ॥ पा० ॥ ३ ॥ वसु-
दिग दोष रहित सुर तुमकुं । अरचत इंद्र नरिंद्र ॥
सौख्यरत्न त्रय करण योगते । सेवे जिनपद अर-
विंद ॥ पा० ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७० ॥

। अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन ।

एक अरज अवधारियेरे ॥ वाढहा ॥ श्रीचिंता-
मण पासरे । माहरो मन जिन चरणे रम रह्यो ।
सुनिजर कर मो ऊपेरेरे ॥ वाढहा ॥ पूरण कीजे
अरसरे ॥ म्हां० ॥ १ ॥ सूरति मूरत ताहरी रे ॥
वाढहा ॥ दीठां आवे दायरे ॥ म्हां० ॥ जिण दिन
देखुं आंखमीरे ॥ वाढहा ॥ सो दिन सफल वि-
हायरे ॥ म्हां० ॥ २ ॥ मत जाणो ए मोहनीरे ॥
वाढहा ॥ उतरस्ये किण वाररे ॥ म्हां० ॥ चोळ
मजीठ तणी परे रे ॥ वाढहा ॥ लागोरंग अपाररे ॥
म्हां० ॥ ३ ॥ आप विचारो आपसुं रे ॥ वाढहा ॥
सेवक नो इकताररे ॥ म्हां० ॥ समरण तुज नि-
शदिन अछेरे ॥ वाढहा ॥ कूरु नहीं किर ताररे ॥

म्हां० ॥ ४ ॥ घिनती वामा नंदसुं रे ॥ वाढ्हा ॥
 दास तणी अरदास रे ॥ म्हां० ॥ जव २ देजो
 मोक्षणी रे ॥ वाढ्हा ॥ साहिव तोरी सेवरे ॥
 म्हां० ॥ ५ ॥ अंतरजामी आगलेरे ॥ वाढ्हा ॥ एह
 प्रकाशुं वातरे ॥ म्हां० ॥ अरिहंत ऊपर आसतारे
 ॥ वाढ्हा ॥ सुधि त्रिचुवन तातरे ॥ म्हां० ॥ ६ ॥ खिण २
 श्रीजिनराजनो रे ॥ वाढ्हा ॥ समरण मनमें एहरे ॥
 म्हां० ॥ कनक मूरत कहे माहरो रे ॥ वाढ्हा ॥
 सांचो धर्म सनेहरे ॥ म्हां० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्रीसिद्धगिरि स्तवन ॥

सेतुंजानो वासी प्यारो लागे म्हारा राजिंदा ॥
 से० ॥ इणरे कूगरियां नी जीर्ण २ कोरणी । ऊपर
 शिखर विराजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ १ ॥ चौ-
 मुख त्रिंश अणोप विराजे । अद्भूत दीर्घां दुःख
 नाजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ २ ॥ कानेंजी कुंमल
 माथे मुगट विराजे। त्रिंशे वाजूबंध ठाजे म्हारा राजिं-
 दा ॥ से० ॥ ३ ॥ चोवाशचंदन अवर अगर्चा । केशर
 निखरु विराजे म्हारा राजिंदा ॥ से० ॥ ४ ॥ इणगिरि

अरदास के ॥ महिर करो जिनजी ॥ महिर करो
 मोटा करो जिनजी । सेवक आप समानके ॥
 महिर० ॥ १ ॥ श्रीचिंतामण पेखतां जिनजी ॥
 मुऊ मन धरत उद्दास के ॥ महिर० ॥ २ ॥ तुं ज-
 ग जीवन जग गुरु जिनजी ॥ तुमही परम सहा-
 यके ॥ महिर० ॥ ३ ॥ परम बंधव परमेसरु जि-
 नजी ॥ तुमही मायने तातके ॥ महिर० ॥ ४ ॥
 अकलकित अधकी कला जिनजी ॥ तुं अविकार
 अपारके ॥ महिर० ॥ ५ ॥ जगतवच्छल भव जय-
 हरुं जिनजी ॥ आतमराम उदारके ॥ महिर० ॥ ६ ॥
 दीनदयाल कृपा करो जिनजी ॥ शरणा गत साधार
 के ॥ महिर० ॥ ७ ॥ धन वेदा धन ए घनी जिनजी
 ॥ देख्यो तुम दीदार के ॥ महिर० ॥ ८ ॥ आज स-
 फल नर जव थयो जिनजी ॥ फलिया वंठित का-
 जके ॥ महिर० ॥ ९ ॥ जात्रा कराई जुगतसुं जि-
 नजी ॥ हरखे सा बछराज के ॥ महिर० ॥ १० ॥
 कलश ॥ इम सकल गुण गण रयण सागर नाग-
 शुन्न लंठणधरो । जेटिया सतरे तीस वरसे मास
 मिगसर सुखकरो ॥ कहे दया कुशल शिष्य

धर्म मंदिर साम समरथ तुं धणी । नित उदय
 कारी विघनन वारी जयो पास चितामणी ॥ ११ ॥
 ॥ इति श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ १५ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वजिन स्तवन ॥

॥ फिर मिर वरसे मेहहो लाल । परनाले पाणी
 पने म्हारालाल ॥ एदेशी ॥ जेसाणे जिनराज
 हो लाला । सुंदर साहिब सुखकरु ॥ म्हा० ॥ वं-
 दीजे वरदायहो लाला । मोहन सूरत मनहरु ॥
 म्हा० ॥ १ ॥ जिग मिग ज्योति अपारहो लाला ।
 कमल कमल दीपेकला ॥ म्हा० ॥ महिमा तुज-
 ही अपारहो लाला । कहे कुण आशिष केइला ॥
 म्हा० ॥ २ ॥ दीठां राज दीदारहो लाला । अंतर
 आतम उल्लसे ॥ म्हा० ॥ आतम तणारे आधार-
 हो लाला । हीवका भीतर तू वसे ॥ म्हा० ॥ ३ ॥
 सूरतनीमो वारहो लाला । निरख्यां तृती लहे नही
 ॥ म्हा० ॥ आख्यां ठेरे अपारहो लाला । रोम रा-
 य हरखे सही ॥ म्हा० ॥ ४ ॥ जे प्रचु सुं मुज नेह-
 हो लाला । परतिप चौल तणीपरे ॥ म्हा० ॥ जै जु-
 ग जाय अछैह हो लाला । नेतो कदधन उतरे ॥

म्हा० ॥ ५ ॥ प्रीत करी मुजसांणहो लाला । नही
 अवरसुं की जस्ये ॥ म्हा० ॥ मधुकर केतकी माण
 होलाला । किमते अरणी चीजस्ये ॥ म्हा० ॥ ६ ॥
 घडी २ ने अंतहो लाला । जाय मिलुं जिनराज-
 सुं ॥ म्हा० ॥ आतु पहर एकंतहो लाला । मुखे २
 महाराज सुं ॥ म्हा० ॥ ७ ॥ एह हमेसां हूंसहो
 लाला । मननो अंतर मेटिये ॥ म्हा० ॥ कूड कहुंतो
 सुंसहो लाला । रह रलिया प्रनु जेटिये ॥ म्हा०
 ॥ ८ ॥ तूँहीज साजन मितहो लाला । प्राण सनेही
 तूं धणी ॥ म्हा० ॥ चढेन बीजो चित्त हरे लाला ।
 आस करुं इक तुम तणी ॥ म्हा० ॥ ९ ॥ जीव
 तुमीणे रंग होलाला । रात दिवस रातोरहै ॥ म्हा०
 ॥ नवि मेलिये संग होलाला । पल पिण विरहो
 नवि सहै ॥ म्हा० ॥ १० ॥ जमतां पुरने गाम हो
 लाला । साहिव नाम न विसरुं ॥ म्हा० ॥ वामानंदन
 नाम हो लाला । सास समें संजारसुं ॥ म्हा० ॥ ११ ॥
 जास्येघक्रिय जिकाय हो लाला । तुम विन गिणती
 नाणसुं ॥ म्हा० ॥ जिण दिन जेटिस आथ
 होलाला । तेदिन सफलो जाणसुं ॥ म्हा० ॥

॥ १२ ॥ तेवीसमा जगतात हरे हो लाला ।
 पास अरज सुणो माहरी ॥ म्हा० ॥ विध
 विनती ए वात हो लाला । सुनिजर मांगु ताहरी ॥
 म्हा० ॥ १३ ॥ जेठनणी सुदी तीज हो लाला ।
 सतरेसे वांसठ सभे ॥ म्हा० ॥ वाचक वुध नो बीज
 हो लाला । श्री सुख लाभ सहुनमे ॥ म्हा० ॥ १४ ॥
 गजातंद सुपसाय हो लाला । वचनविजे मूरत जणे ॥
 म्हा० ॥ कनक मूरत विगताय हो लाला । उलग-
 जिन आगळ भणे ॥ म्हा० ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७६ ॥

अथ श्रीचिंतामणि पार्श्वजिन स्तवन

आज आणद घन उमड्योरे । वुड्यो अमृत धारा ॥
 मीठो मिसरी थी घणोरे बाळा । मिलिया पास
 कुमार ॥ आज जलां जेड्या हो जगनायक दायक
 श्री चिंतामण पास ॥ १ ॥ मोतीयरे ऊर मांडियोरे ।
 घर आइ वह गंग ॥ हीवमो हेजे गेहे गहो । मोरे
 आज हुवो उछरंग ॥ आज० ॥ २ ॥ पूर्व जवे जे संचि-
 यारे । सुकृत तणोरे जंमार ॥ आजउदे आई जली ।
 म्हांतो दीठो प्रचुदीदार ॥ आज० ॥ ३ ॥ संत सुधा-

मांहे सांजलीरे । सूरत अजव अनूप ॥ तिणथी
मनको माहरोरे । स्वामी मोह्य रह्यो धर चूप ॥ आज०
॥ ४ ॥ मोह्यो मानसर वरारे । बांधी नवली प्रीत ॥
छीलरीये हुके नही स्वामी । हंसाई याईज रीत ॥
आज० ॥५॥ देखी मुद्रा ताहरी स्वामी । मिलगई
तारो तार ॥ दीठां ही हिवे नहीं रूचे । देव अवर
स्वोकार ॥ आज० ॥ ६ ॥ जेहवो ठे हित माहरोरे ।
प्रचुजीसुं सपरांण ॥ तिमजे प्रचु पिण राख सरे
तो । थाईसी कोड कट्याण ॥ आज० ॥७॥ सगळो
मिलवो सोहिलोरे । राज रमण धनरंग ॥ पिण विण
सुत्रारथ नही मिले । म्हाने साहेबजीनो संग ॥
आज० ॥ ८ ॥ संमत अठारे सतोतरेरे । पोष दशम
शुभदीस ॥ विनयगणी प्रचु वीनवेरे । श्रीजिन लाभ
सूरिस ॥ आज० ॥ ९ ॥

इति श्रीचिंतामणिपार्श्व जिन स्तवन संपूर्णम् ॥७७॥

॥ अथ श्रीपार्श्व जिन स्तवन ॥

अश्वसेणजीरा ठावा हो अलवेसरु । मात वामा
देवीरो नंद ॥ गिरवा प्रचुजी हो थें म्हारे आज्यो
हो मनरंग महल में ॥ उपजे परम आणंद ॥

गिर० ॥ काशी देश हो नगर बाणारसी । ज्यां लीनो
 श्रवतार ॥ गिर० ॥ काश्यप गोत्र हो प्रनु चढ़ती
 कला । प्रभावती प्राण आधार ॥ गिर० ॥ १ ॥ थान
 विराजे हो सुथर जेसाणमें । जंची अत्रल विशाल
 ॥ गिर० ॥ इकदिस आपे हो गढ़रा कांगरा । पास
 गिरमलरी पार ॥ गिर० ॥ २ ॥ परगल मेलो हो पोश
 दशमदिने । आवे सकल जहान ॥ गिर० ॥ थाल
 वधावे हो माणक मोतिये । गावे सहनरनार ॥
 गिर० ॥ ३ ॥ पढचाको सांचो हो जगमें परगमो । आवे
 संग अपार ॥ गिर० ॥ कनक कचारोहरे घस केसर
 जला । पूजवा पास जिणंद ॥ गिर० ॥ ४ ॥ भव श
 दीजो हो चरणांकी चाकरी । मुजने हित सुखकंद
 ॥ गिर० ॥ ज्युं नित वांधे हो प्रनु तुम ध्यान श्री ।
 प्रेम सदा जिणचंद ॥ गिर० ॥ ५ ॥

इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७७ ॥

॥ अथ श्रीपार्श्व जिन स्तवन ॥

प्रनु पास जिणंद की शोकारे चाखो अरे हां ।
 चाखो तो सब संव जेटण जाइये ॥ प्रनु० ॥ छोद्रपुरो

अतहांधे केरो । तीरथ जिणमांहे दोय मुरत सुख
 कारीरे । वारी जाऊं सांवरी सुरत पर वारीरे ॥ चालो ०
 ॥ १ ॥ चिंतामण म्हारी चिंता चूरो । प्रचु शेषफणां
 आशापूरोरे ॥ चालो ० ॥ २ ॥ मुखरो प्रचुजीको पूनम
 चंदा । दीवद्वारी जोत अखंकोरे ॥ चालो ० ॥ ३ ॥ दर-
 शण देख्यां आणंद उपजे । नाम लियां दुःख जावेरे ॥
 चालो ० ॥ ४ ॥ सेवक प्रचुजी के शरणे आयो । बंहियां
 पकरु निस्तारोरे ॥ चालो ० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीपार्श्वजिन स्तवन संपूर्णम् ॥ ७९ ॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

पिउरु जिन चरणारी सेवा मीठी मानु छागे ॥
 पिउण ॥ समकित सहस किरण रवि उदयो । जीवन
 काय नवि जागे ॥ पी० ॥ १ ॥ त्रिसना तरुणी दूर
 उवेखी । कुमत पकी ठे ठागे ॥ पी० ॥ २ ॥ अंतर
 हियडो जोय ऊघाकी । घकी घक्रियाला वागे ॥ पी०
 ॥ ३ ॥ सुमत सुहागण इम चेतनने । समजावे मन
 रागे ॥ पी० ॥ ४ ॥ रूपविजे कवि चरण रसीदो ।
 मोहन अनुभव मांगे ॥ पी० ॥ ५ ॥

॥ इति वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ८० ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

चेतन तूं क्या फिरे चूला । हिडोला करम का
 जोला ॥ चे० ॥ मगन होय रह्यो क्या घट में । पड्यो
 तूं आठही मदमें ॥ चे० ॥ १ ॥ कीनि तें कुमत
 पटराणी । समऊ नहीं चित्तमें आणी ॥ चे० ॥ २ ॥
 सुलट घट समऊ के देखो । चरण जिनराज का
 जेटो ॥ चे० ॥ ३ ॥ जीवा तें समऊ चित आणी ।
 लियो चारित्र धर ध्यानी ॥ चे० ॥ ४ ॥ प्रकृत
 सब करम की जागी । लगन जिनराज से लागी ॥
 चे० ॥ ५ ॥ राजा राम कहत करजोढ़ी । प्रभुजीसुं
 अरज हे मोरी ॥ चे० ॥ ६ ॥

॥ इति श्री वैराग्यपदं संपूर्णम् ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्रीशत्रुंजय रास ॥

श्रीरिसहेसर पायनमी, आणीमन आनंद ।
 रासत्रणुं रलियामणो, शत्रुंजय सुखकंद ॥ १ ॥
 संवत चार सत्योतरे, हुवा धनेसर मूर ।
 तिण शत्रुंजय महातम किन्हु, शिलादित्य हजूर ॥ २ ॥
 वीरजिणद समोत्तरचा, शत्रुजय ऊपर जेम ।

इन्द्रादिक आगलकक्षुं, शत्रुंजय महातम एम ॥३॥
 शत्रुंजय तीरथ सारिखुं, नही ठे तीरथकोय ।
 स्वर्ग मृत्यु पाताल में, तीरथ सघलां जोय ॥४॥
 नामें नवनिधि संपजे, दीठां डुरित पुलाय ।
 जेटंतां भवजय टले, सेवंतां सुखथाय ॥५॥
 जंबूनामे द्वीपए, दक्षिण जरत मजार ।
 सोरठ देश सोहामणो, तिहां छे तीरथसार ॥६॥

॥ ढाल पहिली, रामगिरि ॥

शत्रुंजयने श्रीपुंडरीक । सिद्धक्षेत्रकहुं तहतीक ॥
 विमलाचलने करुं प्रणाम । ए शत्रुंजयना एकवीश
 नाम ॥१॥ सुरगिरि महागिरिने पुण्यराश । श्रीपद
 पर्वत इन्द्रप्रकाश ॥ महातीरथ पूरवे सुखकाम ।
 ए० ॥ २ ॥ शाश्वत पर्वत ने दृढशक्ति । सुक्तिनिलो
 तेषेकीजे भक्ति ॥ पुष्पदंत महापद्म सुठाम । ए०
 ॥३॥ पृथ्वीपीठ सुजद्र कैलास । पाताल मूल अक-
 र्मक तास ॥ सर्वकाम कीजे गुणग्राम । ए० ॥ ४ ॥
 शत्रुंजयना एकवीश नाम । जपेजबेठा अपणे ठाम ॥
 शत्रुंजय यात्रानो फललहे । महावीर जगवंत एम
 कहे ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

शत्रुंजो पहिलेअरे, असीजोयण परिमाण ।
 पहोलो मूले जंचपणे, छव्तीज जोयणजाण ॥१॥
 सित्तर जोयण जाणवो, वीजेअरे विशाल ।
 वीसजोयण ऊचो कह्यो, मुऊ वंदन त्रणकाल ॥२॥
 साठजोयण त्रीजे अरे, पहोलो तीरथ राय ।
 शोल योजन ऊचो सही, ध्यान धरुं चित्तलाय ॥३॥
 पचास जोयण पहोल पणे, चोथेअरे मजार ।
 जंचो दशजोयण अचल, नित्य प्रणमें नरनार ॥४॥
 वार योजन पंचम अरे, मूल तणो विस्तार ।
 दोग जोयण ऊचो कह्यो शत्रुंज तीरथ सार ॥५॥
 सातहाथ छठेअरे, पहोलो पर्वत एह ।
 जंचो होशे सोधनुप, शाश्वतुं तीरथ एह ॥६॥

ढाल दूसरी जिनवरसुं मेरो मनलीनो

केवलज्ञानी प्रथम तीर्थकर, अनंत सिद्धा ण-
 गामरे । अनत वली सिद्धसे णगामे, तिणेरुद्ध
 नित्य प्रणामरे ॥ १ ॥ शत्रुंजे साधु अनंता सिद्धा,
 सिद्धसे वलीय अनंतरे । जेणे शत्रुज तीरथनहीं

जेव्यो, ते गरजावास लहंतरे ॥ श० ॥ २ ॥ फागुण सुदी
आठम ने दिवसे, रिषभदेव सुखकाररे । रायण-
खंख समोसरथा स्वामी, पूरब नवाणुं वाररे ॥

श० ॥ ३ ॥ चरतपुत्र चैत्री पुनमदिन, इण शत्रुंजे
गिरि आयरे । पांच कोमि शुं पुंरुकि सिद्धा,
तेणें पुंरुकीक कहायरे ॥ श० ॥ ४ ॥ नमि

विनमि राजा विद्याधर, बे बे कोमि संघातरे ।

फागुण सुदी दशमी दिन सिद्धा, तेणें प्रनु प्रणमुं
प्रचातरे ॥ श० ॥ ५ ॥ चैत्रमास वदि चौदशने

दिन, नमि पुत्री चौशठरे । अणसणकरि शत्रुंज
गिरि ऊपर । ए सहु सिद्धा एकठरे ॥ श० ॥ ६ ॥

पोतरा प्रथम तीर्थकर केरा, द्रावडने वारि खिल्लरे ।

कार्तिक सुदि पुनम दिन सिद्धा, दशकोमि मुनि
निःशिल्लरे ॥ श० ॥ ७ ॥ पांचे पांरुव इणगिरिसिद्धा,

नब नारद रिषि रायरे । सांब प्रद्युम्न गया तिहां
मुक्तें, आठे कर्म खपायरे ॥ श० ॥ ८ ॥ नेमि विना

त्रेवीस तीर्थकर, समोसरथा गिरि शृंगरे । अजित
शांति तीर्थकर बेहु, रह्या चौमासुं रंगरे ॥ श०

॥ ९ ॥ सहस्स साधु परिवार संघाते, थावच्चा सु-

तसाधरे । पांचसे साधुशुं शैलंग मुनिवर, शत्रुजे
 शिवसुख लाधरे ॥ श० ॥ १० ॥ असंख्याता मुनि
 शत्रुजे सिद्धा, चरते सरने पाटरे । राम अने नर-
 तादिक सिद्धा, मुक्ति तणी ए वाटरे ॥ श० ॥ ११ ॥
 जाली मयाली ने उवयाली, प्रमुख साधुनी को-
 र्कारे । साधु अनता शत्रुजे सिद्धा, प्रणमं घेकर
 जोकीरे ॥ श० ॥ १२ ॥

॥ ढाल तीसरी चौपाईनी ॥

शत्रुजाना कहु गोलउद्धार, ते सुणजो सहको
 सुविचार । सुणतां आणंद अंग नमाय, जन्म जन्म
 ना पातक जाय ॥ १ ॥ ऋपजदेव अयोध्यापुरी,
 समोसरथा सामी हितकरी । चरतगयो वंदनने
 काज, ए उपदेश दियो जिनराज ॥ २ ॥ जग मां
 महोटी अरिहंत देव, चौशठ इन्द्र करे जसु सेव ।
 तेहथी महोटी संघकहाय, जेहने प्रणमें जिनवर-
 राय ॥ ३ ॥ तेहथी महोटी संघवी कखो, नरत मुणीने
 मनगह गयो । चरतकहे ते किम पामिये, प्रजु
 कहे शत्रुज यात्राकिये ॥ ४ ॥ चरत कहे संघवी पठमुक्त,
 ने थापो हुं अंगज तुक्त । इन्डे अ. एया अह्न

वास, प्रचु आपे संघवी पदतास ॥ ५ ॥ इन्द्रे तेणी-
वेला तत्काल, जरत सुचद्रा बेहुनेमाल । पहेरावी
घर संघेकिया, सखर सोना ना रथ आपिया ॥ ६ ॥
ऋषच देवनी प्रतिमावली, रत्न तणी कीधीमनरली ।
जरते गणधर धर तेकिया, शांतिक पुष्टिक सहुतिहां
किया ॥ ७ ॥ कंकोतरी सूकी सहुदेश, जरतें लेड्यो
संघ अशेष । आव्यो संघ अयोध्यापुरी, प्रथम तीर्थ
करयात्रा करी ॥ ८ ॥ संघ चक्ति कीधी अतिघणी,
संघ चलायो शत्रुंजयभणी । गणधर वाहुवली केवली,
मुनिवर कोकिसाथे लियावली ॥ ९ ॥ चक्रवर्तिनी
सघली रिद्धि, जरते साथे लीधी सिद्धि । ह्य
गय रथ पायक परिवार, तेतो कहेलां नावेपार ॥ १० ॥
जरते श्वर संघवी कहेवाय, मार्गे चैत्य उद्धरतो
जाय । संघआव्यो शत्रुंजयपास, सहुनी पूगी मननी
आस ॥ ११ ॥ नयणे निरख्यो शत्रुंजोराय, माणि-
माणिक मोतीशुं वधाय । तिणें ठामे रही महोत्सव
कियो, जरते आणंद पुर वासियो ॥ १२ ॥ संघ श-
त्रुंजय उपर चढ्यो, फरसंता पातक जरुपड्यो ।
केवलज्ञानी पगलातिहां, प्रणम्या रायण खंखठे

जिहां ॥ १३ ॥ केवलज्ञानी स्नात्र निमित्त, ईशानेंद्रें
 आणी सुपवित्त । नदी शत्रुंजी सोहामणी, भरतें
 दीठी कौतुक जणी ॥१४॥ गणधरदेव तणें उपदेश,
 इन्द्रेंवली ढीधो आदेश । आदिनाथ तणें देहरो,
 भरते कराव्यो गिरिसेहरो ॥१५॥ सोनाना प्रासाद
 उत्तंग, रत्नतणी प्रतिमा मनरंग । भरतें श्री आ-
 दिश्वर तणी, प्रतिमा स्थापी सोहामणी ॥ १६ ॥
 मरुदेवीनी प्रतिमा वली, माहीपूनमथापी रली । वा-
 ह्नीसुन्दरी प्रमुखप्रासाद, भरतें थाप्या नवलेनाद
 ॥ १७ ॥ एमअनेक प्रतिमा प्रासाद, जरतें कराव्या
 गुरु प्रसाद । एह जण्यो पहेलो उद्धार, सधलोही
 जाणे संसार ॥ १८ ॥

॥ ढाल चौथी सिंधूरो आशावरी ॥

जरत तणे पाट आठमें, दंरुवीर्य थयो रायोजी ।
 जरत तणी परें संघक्रियो, शत्रुंजय सधवी कहायो-
 जी ॥१॥ शत्रुंज उद्धार सांज्ज्जो, शोलमहोटा श्रीका
 रोजी । असंख्याता वीजावली, ते न कहुं अधिका-
 रोजी ॥ श० ॥ १ ॥ चैत्यकराव्युं रूपातणु, सोना
 ना विंव सारोजी । मूलगां विंव जंकारियां, पश्चि-

म दिशि तेणीवारोजी ॥ श० ॥ ३ ॥ शत्रुंजनी या-
 त्रा करी, सफल कियो अवतारोजी । दण्ड वीर्य
 राजा तणो, ए बीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ४ ॥ सो
 सागरोपम व्यतिक्रम्या, दण्ड विरजथी जेवारोजी ।
 ईशानेंद्र करावियो, ए त्रीजो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥
 चोथा देवदोकनो धणी, माहेन्द्रनाम उदारोजी ।
 तिणें शत्रुंजयनो करावियो, ए चोथो उद्धारोजी ॥
 श० ॥ ६ ॥ पांचमां देवदोकनो धणी, ब्रह्मैन्द्र
 समकित धारोजी । तिणें शत्रुंजयनो करावियो,
 ए पांचमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ ७ ॥ जवनपति
 इन्द्रतणो कियो, ए ठडो उद्धारोजी । चक्रवर्ति
 सगर तणो कियो, ए सातमो उद्धारोजी ॥ श०
 ॥ ८ ॥ अग्निनन्दन पासे सुण्यो, शत्रुंजयनो अधि-
 कारोजी । व्यंतरेंद्रें करावियो, ए आठमो उद्धा-
 रोजी ॥ श० ॥ ९ ॥ चन्द्रप्रत्न स्वामीनो पो-
 तरो, चन्द्रशेखर नाम महारोजी । चन्द्रयशरायें
 करावियो, ए नवमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १० ॥
 शांतिनाथनी सुणीदेशना, शांतिनाथ सुत वि-
 चारोजी । चक्रधर राय करावियो, ए दशमो उ-

उद्धारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ दशरथ सुत जगदीपतो,
 मुनिसुत्रन सु वारोजी ॥ श्री रामचन्द्रं करावि-
 यो, ए इग्यारमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १२ ॥ पाण्डु-
 व कहे अमे पापीया, किमवुट्ट मोरी मायोजी ॥ कहे
 कुनी शत्रुंजा तणी, यात्रा क्रियां पाप जायोजी ॥ श०
 ॥ १३ ॥ पांचे पाण्डव संघकरी, शत्रुंजय जेदयो अ-
 पारोजी ॥ काष्ठ चैत्य विं व लेपनो, ए वारमो उद्धारो-
 रोजी ॥ श० ॥ १४ ॥ मरुमाणी पापाणनी, प्रतिमा
 सुन्दर सरूपोजी ॥ श्री शत्रुंजयनो संघकरी, थापी
 सकल सरूपोजी ॥ श० ॥ १५ ॥ अष्टोत्तर सो वरसां
 गयां, विक्रम नृपथी जिवारोजी ॥ पोरवारु जावरु
 करावियो, ए तेरमो उद्धारोजी ॥ श० ॥ १६ ॥ संवत
 धारतेरोत्तरे, श्रीमाली सुविचारोजी ॥ बाहुरुद्धे
 मुहूर्त्त करावियो, ए चादमो उद्धारोजी ॥ श०
 ॥ १७ ॥ सवत तेरएकोत्तरे, देश लहेर अधिकागेजी ॥
 समरे शाहे करावियो, ए पंढरमो उद्धारोजी ॥ श०
 ॥ १८ ॥ सवत पन्नर सत्यासीयें, वैशाख सुदी शु-
 नवारोजी ॥ करमेदोमी करावियो, ए सोलमो
 उद्धारोजी ॥ श० ॥ १९ ॥ सांप्रत काखे सोलमो

ए वरतेछे उद्धारोजी ॥ नित्य २ कीजे वंदना, पामी-
जे जव पारोजी ॥ श० ॥ २० ॥

॥ दोहा ॥

वली शत्रुंज महात्म कहुं, सांजलो जिमठे तेम ।
सूरि धनेसर इम कहे, महावीरें कह्यो एम ॥ १ ॥
जेहवो तेहवो दर्शनी, शत्रुंजे पूजनीक ।
जगवंतनो जेख मानतां, लाज होवे तहकीक ॥ २ ॥
श्री शत्रुंजा उपरे, चैत्य करावे जेह ।
दल परिमाण समुंलहै, पढ्योपम सुखतेह ॥ ३ ॥
शत्रुंजा ऊपर देहरुं, नवुं निपावे कोय ।
जीर्णोद्धार करावतां, आठगणुं फलहोय ॥ ४ ॥
शिरऊपरुं गागरधरी, स्नात्रकरावे नार ।
चक्रवर्त्तीनी स्त्री थई, शिवसुख पामे सार ॥ ५ ॥
काती पूनेम शत्रुंजे, चढीने करे उपवास ।
नारकीसो सागर तणो, करे कर्म नो नाश ॥ ६ ॥
कातीपरव महोटुं कह्युं, जिहां सिद्धा दशकोफि ।
ब्रह्मस्त्री बालक हत्या, पापथी नाखे ठोफि ॥ ७ ॥
सहस्र लाख श्रावक जणी, जोजन पुण्यविशेष ।
शत्रुंजसाधु पदिलाजतां, अधिको तेहथी देख ॥ ८ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

धन्य २ गज सुकुमारने ॥ एदेशी ॥

शत्रुंजे गयां पाप तूटिये, लीजे आलोयण एमोजी ।
 तप जप कीजे तिहां रही, तीर्थकर कहुं तेमोजी
 ॥ श० ॥ १ ॥ जिण सोनानी चोरी करी, ए
 आलोयण तासोजी । चैत्रीदिन शत्रुंजय चढी, एक
 करै उपवासोजी ॥ श० ॥ २ ॥ रत्न तणी चोरी
 करी, सात आंवल शुद्ध थायजी । काती सात
 दिन तप कियां, रत्न हरण पाप जायजी ॥ श०
 ॥ ३ ॥ कांसा पीतल त्रांवा रजतनी, चोरी कीधी
 जेणजी । सात दिवस पुरिमहूकरे, तो ठटे गिरि
 एणजी ॥ श० ॥ ४ ॥ मोती प्रवाला मुगिया, जे-
 णेचोरथां नर नारोजी । आंवल करी पूजा करे,
 त्रण टंक शुद्ध आचारोजी ॥ श० ॥ ५ ॥ धान्य पाणी
 रसचोरियां, जेजेटे सिद्ध क्षेत्रोजी । शत्रुंज तलहटी
 साधुने, पडिलाजे शुभचित्तोजी ॥ श० ॥ ६ ॥
 वस्त्राचरण जेणें हरयां, ते ठटे इणें मेलोजी । आ-
 दिनाथनी पूजाकरे, प्रह उठीवहु वेलोजी ॥ श०
 ॥ ७ ॥ देव गुरुनो धन जेहरे, ते शुद्धथाये एमोजी ।

अधिकुं द्रव्य खरचे तिहां, पाले पोषे बहु प्रेमोजी ॥
 श० ॥७॥ गाय जेंस गोधा मही, गज गृह चोरण हारो-
 जी । बूटे ते तप तीरथे, अरिहंत ध्यान प्रकारोजी ॥
 श० ॥ ८ ॥ पुस्तक देहरा पारका, तिहां लखे आपणं
 नामोजी । बूटे ठम्मासी तप क्रियां, सामाधिक
 तिण ठामोजी ॥ श० ॥ १० ॥ कुंवारी परिव्राजिका,
 सधव विधव गुरु नारोजी । ब्रतजांजे तेहने कहुं,
 छम्मासी तप सारोजी ॥ श० ॥ ११ ॥ गो विप्र
 बालक कृषी, एहनो घातक जेहोजी । प्रतिमां
 आगे आलोचतां, बूटे तप करीएहोजी ॥ श० ॥ १२ ॥

॥ हाल छट्टी ॥

॥ कृषज प्रजुजीये ॥ एदेशी ॥

संप्रति काले सोलमो ए । ए वरते छे उद्धार ॥ शत्रुं
 जय यान्ना करुं ए । सफल करुं अवतार ॥ श० ॥ १ ॥
 छहरी पालतां चालीयें ए । शत्रुंज केरीवाट ॥
 पालीताणे पहोंचीयें ए । संघमिदिया बहुथाट ॥ श०
 ॥ २ ॥ ललित सरोवर देखियें ए । बलीसत्तानीवावा ॥
 तिहां विशामो लीजियें ए । बरुने चोत्तरे
 आव ॥ श० ॥ ३ ॥ पालीताणे पावडीए । चढीयें

उठि प्रजात । शेत्रुंजी नदी सोहामणी ए ।
 दूरथकी देखात ॥ श० ॥ ४ ॥ चढियें हिंगलाज
 नेहके ए । कलिकुंरु नमियेंपास ॥ वारीमांहे पेशियें
 ए । आणी अंग उह्वास ॥ श० ॥ ५ ॥ मरुदेवी-
 टुंरु मनोहरुए । गज चढी मरुदेवी माथ ॥
 शांतिनाथ जिन सोलमो ए । प्रणमीजें तसु
 पाय ॥ श० ॥ ६ ॥ वंश पोरवामें परगडो ए ।
 सोमजी शाह महार ॥ रूपजी संघवी करात्रियो
 ए । चौमुख मूल उद्धार ॥ श० ॥ ७ ॥ श्रीजिन
 राज सूरिश्वरुए । खरतरगच्छ गणधार ॥ स्वहाथे
 जेणें प्रतिष्ठा करिए । शुभदिवस शुक्रवार ॥ श० ॥ ८ ॥
 चौमुख प्रतिमा नरचियें ए । जमती मांहे जन्नाविं-
 द ॥ पांचे पांरुव पूजियें ए ॥ अदबुद आदि प्रलवं ॥
 श० ॥ ९ ॥ खरतर वसई खांत सुं ए । विंव जुहारुं
 अनेक ॥ नेमनाथ चोरी नसुं ए । टालुं अलग
 उद्देग ॥ श० ॥ १० ॥ धर्मछार मांहे नीतरुं ए ।
 कुगति करुं अतिदुर ॥ आवुं आदिनाथ देहरे
 ए । कर्म करु चक्रचूर ॥ श० ॥ ११ ॥ मूलनायक
 प्रणमुं मुदा ए । आदिनाथ जगवंत ॥ देव जुहारुं

देहरे ए । नमती मांहे नगवंत ॥ श० ॥ १२ ॥
 शत्रुंजा उपर कीजिये ए । पांचेठामे स्नात्र ॥
 कलश अष्टोत्तरशो करी ए । निर्मल नीरशुंमात्र
 ॥ श० ॥ १३ ॥ प्रथम आदिश्वर आगले ए ।
 पुंरुकीक गणधार ॥ रायणतल पगलां वलि ए ।
 शांतिनाथ सुखकार ॥ श० ॥ १४ ॥ रायणतले
 पगलां नमुं ए । चौमुख प्रतिमा चार ॥ बीजी
 चूमें विंबवली ए । पुंरुकीक गणधार ॥ श० ॥ १५ ॥
 सूरज कुंड निहालीये ए । अतिजलि उलखा
 जोल ॥ चेलणतलाई शिद्धसिला ए । अंगेकरीशुं
 उद्धोल ॥ श० ॥ १६ ॥ आदि पूरपाजे उत्तरुं ए ।
 सिद्धवकलहुं विश्राम ॥ चैत्य प्रवानी इणीपरेकरी
 ए । सीधावंठित काम ॥ श० ॥ १७ ॥ जात्राकरी
 शत्रुंजा तणी ए । सफल कियो अवतार ॥ कुशल
 हेमसुं आविया ए । संघ सहु परिवार ॥ श० ॥ १८ ॥
 शत्रुंजय महातम सांजलीए । रासरच्चो अनुसार ॥
 जेभवि गावे जावशुंए । आनंद होय अपार ॥ श०
 ॥ १९ ॥ शत्रुंजयरस सोहामणो ए । सांजलजो
 सहुकोय ॥ घरवेठां नणेंजावसुं ए । तसुजात्राफल

होय ॥ श० ॥ १० ॥ जणशालीथिरु अतिजलोए ।
 दयावंतदातार ॥ शत्रुंजयसंघ करावियोए । जेसल-
 मेर मजार ॥ श० ॥ ११ ॥ शत्रुजय महात्म्य ग्रंथ
 थीए । रासरच्यो अनुसार ॥ जाव भक्तें जणनां
 थकांए । पामीजे जवपार ॥ श० ॥ १२ ॥ संवत १६७६
 सोलठयासीये ए । श्रावण शुदि सुखकार ॥ रास-
 जणयो शत्रुंजा तणो ए । नगर नागोर मजार ॥ श०
 ॥ १३ ॥ गिरुठं गच्छखरतर तणो ए । श्री जिनचंद्र
 सूरिस ॥ प्रथम शिष्य श्रीपूजना ए । सकल चंद्र
 सुजगीस ॥ श० ॥ १४ ॥ तास शिष्य जगजाणीये
 ए । समय सुदर उवझाय ॥ रास रच्यो तेणें रुवडो
 ए । सुणतां आनंद थाय ॥ श० ॥ १५ ॥

॥ इति श्री शत्रुंजय रास संपूर्णम् ॥ ७१ ॥

॥ अथ श्रीगौतम रास ॥

वीर जिणेशर चरण कमल कमला कय वासो ।
 पण मवि पनणिसु सामि साल गोयम गुरु रासो ॥
 मण तणु वयणे कंत करवि निसुणहु जो जविद्या ।
 जिम निवसे तुम देह गेह गुण गण गह गहिया
 ॥ १ ॥ जवूदीव सिर जरह खित्त खोणी तल मरुणा

मगह देस सेणिय नरेस रिउ दल वल खंडण ॥
 धणवर गुठवर गाम नाम जिहां गुण गण सज्जा ।
 विप्प वसे वसु जुइ तत्थ तसु पुहवी जज्जा ॥ २ ॥
 ताणपुत्त सिरि इंदजूय जूव लय पसिद्धो । चवदह
 विज्जा विविह रूव नारी रसलुद्धो ॥ विनय विवेक
 विचार सार गुण गणह मनोहर । सात हाथ
 सुप्रमाण देह रूवहि रंभावर ॥ ३ ॥ नयण वयण
 कर चरण जणवि पंकज्जल पाणिय । तेजहि तारा-
 चंद सूरि आकास जसाणिय ॥ रूवहि सयण
 अनंग करवि मेळ्यो निरधाणिय । धीरम मेरु गंजीर
 सिंधु चंगम चय चाणिय ॥ ४ ॥ पेखवि निरुवम रूव
 जास जणजंपे किंचिय । एकाकी किल भित्त इत्थ गुण
 मेदया संचिय ॥ अहवा निच्चय पुव्वजम्म जिणवरइ-
 ण अंचिय । रंजा पलमा गवरि गंग रतिहाविधि वं-
 चिय ॥ ५ ॥ नयवुध नय गुरु कविण कोय जसु आगल्ल
 रहियो । पंच सयां गुण पात्र छात्र हीके परवरियो ॥
 करय निरंतर यइ करम मिथ्या मति मोहिय ।
 अणचल होस्ये चरम नाण दंसणह विसोहिय
 ॥ ६ ॥ वस्तु ॥ जंबूदीव २ जरहवासंमि । खाणि तल

मंडण । मगहे देश सेणिय नरेसर । वर गुवर गाम-
 तिहां । विप्य वसे वसु चूइ । सुंदर तसु पुह विचज्जा ।
 सयल गुण गण रूव निहाण । ताण पुत्त विज्जा
 निलो । गोयम अतिहि सुजाण ॥ ७ ॥ चास ॥
 चरम जिणेसर केवल नाणी । चोविह संघ पइ-
 ष्टा जाणी ॥ पावापुर सामी संपत्तो । चउविह देव-
 निकायहिं जुत्तो ॥ ८ ॥ देवहि समवसरण तिहां
 कीजे । जिण दीठे मिथ्या मत ठीजे ॥ त्रिचुवन
 गुरु सिंहानन वेठा । ततखिण मोहदिगंत पइष्ठा
 ॥ ९ ॥ क्रोध मान माया मद पूरा । जाये नाठा
 जिम दिन चोरा ॥ देव डुंदुभी आगासे वाजी ।
 धरम नरेसर आव्यो गाजी ॥ १० ॥ कुमुम वृष्टि
 विरचे तिहां देवा । चउसठ इन्द्रज मांगे सेवा ॥
 चामर छत्र सिरोवरी सोहे । रूवहि जिनवर जग
 सहु मोहे ॥ ११ ॥ उपसम रसजर वर वर संता ।
 जोजन वाणी वखाण करंता ॥ जाणवि वर्द्धमान
 जिण पाया । सुरनर किन्नर आवइराया ॥ १२ ॥
 कंत समोडिय जल हल कंता । गयण विमाणहि
 रण रण कता ॥ पेखवि इन्द्रचूइ मन चिन्ते । सुर
 आवे अम जइ हुवंते ॥ १३ ॥ तीर तरकक जिम

तेवहिता । समवसरण पुहता गह गहिता ॥ तौ
 अजिमाने गोयम जंपे । इण अवसर कोपे तणु
 कंपे ॥ १४ ॥ मूढा लोक अजाण्युं बोले । सुर जा-
 णंता इमकांइ कोले ॥ मो आगल कोइ जाणणी-
 जे । मेरु अवर किम ओपम दीजे ॥१५॥ वस्तु ॥
 धीर जिणवर वीर जिणवर नाण संपन्न । पावापुर
 सुर महिय । पत्तनाइ संसार तारण । तिहिं देवइ
 निम्महिय । समवसरण बहु सुखकारण । जिणवर
 जग उज्जोयकरे । तेजहि कर दिनकार । सिंहा-
 सण सामीठव्यो । हुओतो जय २ कार ॥ १६ ॥
 ॥ जास ॥ तो चहियो घणमाण गजे । इंद्र चूइ
 चूय देवतो । हुंकारो कर संचरिय । कवणसु जिण-
 वर देवतो ॥ जोजन चूमि समोसरण । पेखवि प्रथमा-
 रंजतो । दहदिस देखे विबुध वधू । आवंती सुर रंज
 तो ॥ १७ ॥ मणिमय तोरण दंरु ध्वज । कोसीसे
 नव घाटतो । वयर विवर्जित जंतुगण । प्राती
 हारिज आवतो ॥ सुर नर किन्नर असुर वर । इ-
 न्द्र इन्द्राणि रायतो । चित्त चमकिय चिंतवे ।
 सेवंतां प्रचु पायतो ॥ १८ ॥ सहस किरण सामी-
 वीर जिण । पेखवि रूप विशालतो । एह अचंजव

संज्ञवए । साचोए इन्द्रजाततो ॥ तो बोलावइ
 त्रिजग गुरु । इन्द्र चूइ नामेणतो । श्रीमुख संसा-
 सामि सवे । फेरेवेद पएणतो ॥ १९ ॥ मानमेल
 मद ठेल करे । जगतहिं नाम्यो सीसतो । पंच सयासुं
 वृत लियोए । गोयम पहिलो सीसतो ॥ वंधव संयम
 सुणविकरे । अगन चूइ आवेयतो । नामलेइ आ-
 चास करे । ते पिण प्रतिबोधेयतो ॥ २० ॥ इण
 अणुक्रम गणहर न्यण । थाप्या वीर इग्यारतो ।
 तो उपदेशे जुवन गुरु । संयमसुं व्रत चारतो ॥ विहुं
 उपवासे पारणो ए । आपणपे विहरंततो । गोयम
 संयम जग सयल । जय श कार करंततो ॥ २१ ॥
 ॥ वस्तु ॥ इन्द्रचूइ श चढियो बहुमान । हुंकारो
 करि कंपतो । समवसरण पहंतो तुरंततो । जेइ
 संसा सामी सवे । चरम नाइ फेरे फुरंततो ।
 बोध बीज संजाय मने । गोयम जवहि विरत्त ।
 दिक्ख वेहि सिख्या सही । गण हर पय संपत्त ॥
 २२ ॥ भास ॥ आज हुओ सुविहाण । आज
 पचेलम पुण्य जरो । दीठा गोयम सामि । जो निय
 नयणे अमियजरो ॥ समवसरण मजार । जे जे
 संसा उपजेए । ते ते पर उपगार । कारण पूछे मुनि

पवरो ॥ २३ ॥ जिहां दीजे दीख । तिहां केवल
 उपजेए । आपकने अणहुंत । गोयम दीजे दान इम ॥
 गुरु ऊपर गुरुजक्ति । सामी गोयम उपन्निय । अण
 चल केवल नाण । रागज राखे रंगभरे ॥ २४ ॥ जो
 अष्टापद सेल । वंदे चढ चउवीस जिण । आत-
 मलाब्धि वसेण । चरम सरीरी सोजमुनि ॥ इय
 देसणा नि सुणेह । गोयम गणहर संचरिय । ता-
 पस पनरस एण । जो मुनि दीठो आवतो ए ॥
 २५ ॥ तप सो सिय नियअंग । अह्मां संगतिन
 ऊपजेए । किम चढस्ये दृढकाय । गज जिम
 दीसे गाजतोए ॥ गिरु ओए अजिमान । तापस
 जो मन चिन्तवेए । तो मुनि चढियो वेग । आ-
 लंबवि दिनकर किरण ॥ २६ ॥ कंचन मणि नि-
 पन्न । दंड कलस ध्वज बरुसहिय । पेखवि परमा-
 णंद । जिणहर जरते सरमहिय ॥ निय २ काय
 प्रमाण । चिहुं दिसि संठिय जिणह बिंब । पणम-
 वि मन उद्धास । गोयम गणहर तिहां वसिय
 ॥ २७ ॥ वयर सामीनो जीव । तिर्यक जूंजक
 देवतिहां । प्रतिबोध्या पुंरुरीक । कंरुरीक अध्ययन
 जणी ॥ बलता गोयम साम । सवि तापस प्रतिबोध

करे । लेश् आपण साथ । चाखे जिम जूथाधिपति
 ॥ २७ ॥ खीर खांरु घृत आण । अमियवूठ अंगूठ
 ठवे । गोयम एकण पात्र । करावे पारणो सवे ॥
 पंचसयां शुभ्रजाव । उज्जल जरियो खीरमिसे । सांचा
 गुरु संयोग । कवलत केवल रूपहुय ॥ २८ ॥ पंच-
 सयां जिणनाह । समवसरण प्राकार त्रय । पेखवि
 केवल नाण । उप्पन्नो उज्जोयकरे ॥ जाणे जण
 विपीयूष । गाजंती घन मेघ जिम । जिण वाणी
 निसुणेवि । नाणी हुआ पंचसयां ॥ ३० ॥ वस्तु ॥
 इण अनुक्रम २ नाण संपन्न । पनरेसे परिवरिय ।
 हरिय डुरिय जिणनाह वंदइ । जाणेवि जग गुरु
 वयण । तिहिं नाण अप्पाण निंदइ । चरम जिनेसर
 इणजणे । गोयम मकरिस खेव । ठेहजाय आपण
 सही । होस्यां तुह्वावेव ॥ ३१ ॥ जास ॥ सा-
 मियोए वीरजिणंद । पूनमचद जिम उल्लसिय ।
 विहरियोए जरह्वासंमि । वरस बहुत्तर संवसिय ॥
 ठवतोए कणय पउमेण । पायकमल सधे सहिय ।
 आवियोए नयणाणंद । नयर पावापुर सुरमहिय
 ॥ ३२ ॥ पेखियोए गोयम सामि । देवसमा प्रति-
 बोधकरे । आपणोए त्रिफलादेवि । नन्दन पुह्तो

परमपण ॥ बलतोण देव आकास । पेखवि जाण्यो
जिणसमेण । तोमुनिण मनविषवाद । नादजेद जिम
ऊपनोण ॥ ३३ ॥ इणसमेण सामिय देख । आप-
कनासुं टालियोण । जाणतोण तिहु अणनाह ।
लोकविवहारन पालियोण ॥ अतिचलोण कीधलो-
सामि । जाण्यो केवल मांगस्येण । चिंतव्योण
बालक जेम । अहवा केडे लागस्येण ॥ ३४ ॥ हुं-
किमण वीरजिणंद । भगतहिं चोले भोलव्योण ।
आपणोण उंचलो नेह । नाहनसंपै साचव्योण ॥
साचोण ए वीतराग । नेह न हैजे लालियोण ।
तिण समेण गोयम चित्त । राम वैरागे वालियोण
॥ ३५ ॥ आवतोण जो उद्धट । रहितो रागे सा-
हियोण । केवलण नाण उपन्न । गोयम सहिज
उमाहियोण ॥ तिहुअणण जय २ कार । केवल
महिमा सुरकरेण । गणधरुण करय वखाण । चविया
चवाजिम निस्तरेण ॥ ३६ ॥ वस्तु ॥ पठम
गणहर २ वर्ष पच्चास । गिहवासे संवसिय । तीस
वरस संजम विचूसिय । सिरि केवल नाण पुण ।
बार वरस तिहु अण नमं सिय । राजग्रही नयरी
ठव्यो । वाणवइ वरसाउ । सामी गोयम गुणनिलो ।

होस्ये शिवपुर ठाठ ॥ ३७ ॥ जास ॥ जिम
 सहकारे कोयल टहुके । जिम कुसमावन परमल-
 महके । जिम चन्दन सोगंध निधि । जिम गंगा-
 जल लहिरचां लहके । जिम कणयाचल तेजें
 ऊलके । तिम गोयम सोजाग निधि ॥ ३७ ॥ जिम
 मानसरोवर निवसे हंसा । जिम सुरतरुवर कण-
 यवतंसा । जिम महुयररा जीव वने । जिम रयणा-
 गर रयणेविलसे । जिम अंवर तारागण विकसे ।
 तिम गोयम गुरु केल घने ॥ ३८ ॥ पूनम निसि
 जिम ससि यर सोहे । सुर तरु महिमा जिम जग-
 मोहे । पूरव दिसि जिम सहसकरो । पंचानन
 जिम गिरिवरराजे । नरवइ घर जिम मंगलगाजे ।
 तिम जिनशाशन मुनि पवरो ॥ ४० ॥ जिम गुरु
 तरुवर सोहे साग्या । जिम उत्तम मुख मधुरी
 भापा । जिम वन केतकी महमहेए । जिम चृमी-
 पति जुयवल चमके । जिम जिनमंदिर घंटारणके ।
 गोयम लवधे गह गह्योए ॥ ४१ ॥ चिन्ता मणि कर
 चढियो आज । सुरतरु सारे वंछिय काज । काम
 कुंज सह वसिहु आए । कामगर्वापुरे मनकामी ।
 अष्टमहा सिद्धि आवे धामी । सामी गोयम अणु-

सरोए ॥ ४२ ॥ पणवद्धर पहिलो पत्तणीजे । माया-
 वीजो श्रवण सुणीजे । श्रीसती शोभा संजवोए ।
 देवांधुर अरिहंत नमीजे । विनयपहु उवजाय
 शुणीजे । इणमंत्रे गोयम नमोए ॥ ४३ ॥ परघर
 वसतां काय करीजे । देशदेशांतर कांय जमीजे
 कवण काज आयासकरो । प्रह ऊठी गोयम सम-
 रीजे । काज समगल ततखिण सीजे । नवनिधि
 विलसे तिहांघरे ॥४४॥ चवदय सय चारोत्तर वरसे ।
 गोयम गणहर केवलदिवसे । कीयो कवत्त उपगार
 परो । आदहि संगल एयजणीजे । पुंरवं सहोच्छव
 पहीलो दीजे । रिद्धि वृद्धि कढ्याण करो ॥ ४५ ॥
 धन माता जिण उपरे धरियो । धन्य पिता जिण
 कुल अवतरियो । धन्य सुगुरु जिण दीखियोए ।
 विनयवंत विद्याजंकार । तसुगुण पुहवी नलज्जइ
 पार । वरुजिम साखा विस्तरौए । गोयम स्वा-
 मीनो रास जणीजे । चउविइ संघ रलियायत की-
 जे । रिद्धि वृद्धि कढ्याण करो ॥४६॥ कुंकुम चन्दन
 छनो दिरावो । माणक मोतियां चोकपूगवो । रयण
 सिंघासण बेसणोए । तिहां बैठी गुरु देसना

देसी । त्रिक जीव ना काज सरेसी । नित २
संगल उदय करो ॥ ४७ ॥

॥ इति श्री गौतम रास सम्पूर्णम् ॥ ७३ ॥

॥ अथ गौतम स्वामी की प्रजाती ॥

राग प्रजाती जे करे । प्रह ऊगमने सूर ॥ चूखा
जोजन संपजे । कुरला करे कपूर ॥ १ ॥ अगूने
अमृत वसे । लब्धि तणा भंकार ॥ जे गुरु गौतम
समरिये । मन वंचित दातार ॥२॥ पुंडरीक गोयम
मुहा । गणधर गुण संपन्न ॥ प्रह ऊठीने प्रणमतां ।
चवदेने वावन्न ॥३॥ स्वतिखमं गुणकलियं । सुवि-
णियं सबलद्धि संपण ॥ वीरसस पढम सीसं ।
गोयम सामी नमं सामि ॥ ४ ॥ सर्वारिष्ट प्रणा-
जाय । सर्वात्तीष्टार्थ दायने ॥ सर्वलब्धि निधानाय ।
गौतम स्वामिने नमः ॥ ५ ॥

॥ इति श्री गौतम स्वामी प्रजाती सम्पूर्णम् ॥ ७४ ॥

॥ अथ वैराग्य पद ॥

॥ राग विहाग ॥

समऊ नर जीवन थोरो । थोरो थोरो थोरो ॥
समऊण ॥ पल २ आयु घटत ठिन २ ही । गलत

जात जैसे थोरो ॥ समऊण ॥ १ ॥ या तनको
तोही न चरोसो । छिन मासो छिन तोरो ॥ जो
कुछ करे सो अवही करले । पुनपर हो जिम
ओरो ॥ समऊण ॥ २ ॥ तन धन आदि सकल
सामग्री । गरज २ घन घोरो ॥ रूपचंद्र त्रिसना
को बांध्यो । जान बूऊ नयो चोरो ॥ समऊण ॥ ३ ॥
॥ इति श्री वैराग्य पदं संपूर्णम् ॥ ७५ ॥

॥ अथ महावीर स्वामी स्तवन ॥

मगधदेश सुहावनो रे । खेत्रीकुंठ पुरजान ॥
राजासिद्धारथ तपतपे रे । अरितम भेटनभान ॥
जिनंदराय धरजो अवि हडनेह ॥ १ ॥ सील
रयननी पेटिकारे । त्रिशलाराणी नाम ॥ रूपेजोती
अपठरा रे । सहुमें वधावी माम ॥ जिण ॥ २ ॥
महाविजयथो आवियो रे । आसाढ सुदी ठठ
जान ॥ चउदे स्वप्ने परिवरा रे । धरता ठे त्रणनान ॥
जिण ॥ ३ ॥ पूर्णस्थित अवग्रह लहीरे । जन्मलियो
शुन्नवार ॥ चैत्र सुदी तेरस दिनेरे । वरत्या मंगल-
चार ॥ जिण ॥ ४ ॥ हिव आसन कंप्या थकारे ।
निजपरिवारे आय ॥ दिशि कुमरी जेझी थई रे ।

आठ्या सहुदेवराय ॥ जि० ॥ ५ ॥ मेरुसिखर
 उत्सव करे रे । करतां जय मनजाव ॥ संशय मे-
 ट्या इंद्रनो रे । घर आठ्या जिनराय ॥ जि० ॥ ६ ॥
 तीस वर्ष सुख भोगव्या रे । वर्षिदान ढिराय ॥
 मगसिरवदि दशमी जलीरे । दीक्षाली वनजाय ॥
 जि० ॥ ७ ॥ वारे वर्ष लग काटियारे । कर्मनिका-
 चित जान ॥ सुदी वैशाख दशमो जलीरे । विजय
 महूरत मान ॥ जि० ॥ ८ ॥ पूर्व करणना भावथी
 रे । क्षीण मोह गुणठान ॥ क्षुब्धकश्रेणि में आवियो
 रे । उपन्यो केवल ज्ञान ॥ जि० ॥ ९ ॥ पद्मव्य
 आठे आतमारे । गति आगति विचार ॥ बंधोदय
 उदीरणा रे । थें जाणो निरधार ॥ जि० ॥ १० ॥
 ग्यारे गणधर वृजव्यारे । त्रिपदीने अनुमान ॥ चउठे
 सहस मुनि आर्जिकारे । ठत्रीस सहस्र परमान ॥
 जि० ॥ ११ ॥ विचरंता पृथ्वी तलेरे । तीसवर्ष
 उनमान ॥ निर्वाण जानी आपनोरे । आयापावा
 पुरठाम ॥ जि० ॥ १२ ॥ कार्तिक वदी अमावस्या
 रे । शुभ वेलार परजात ॥ आतुं कर्म खपावीने रे ।
 मोक्ष पहुंता जगतात ॥ जि० ॥ १३ ॥ तीर्थ कहाया

जदयकी रे । सारे लोक मजार ॥ ग्राम २ देश
 देश नारे । आवे जात्रि अघार ॥ जि० ॥ १४ ॥ मह-
 तियाण वंशे दीपतो रे । गुण गिरुवोगच्छ अंज ॥
 श्रीसंघना उरसव किया रे । दूर किया दुख दंज ॥
 जि० ॥ १५ ॥ अठारेसे पच्चास मेरे । सुदी वैशाख
 शुभ जाव ॥ पंचमी दिन भले नेटिया रे । मनधर
 अधिक उच्छाह ॥ जि० ॥ १६ ॥ श्रीजिन अखय
 सूरि सनो रे । चरण कमल मकरंद ॥ नव २ मांगु
 तुमतणो रे । सेवा श्रीजिन चंद ॥ जि० ॥ १७ ॥
 ॥ इति श्रीमहावीर स्वामी स्तवन संपूर्णम् ॥ ७६ ॥

॥ अथ चार सरणां ॥

मुकने चार सरणां होयजो । अरिहंत सिद्ध सुसा-
 धुजी ॥ केवलीए धर्म प्रकाशियो । रत्न अमोलख
 लाधोजी ॥ मु० ॥ १ ॥ चक्रगति तणों दुःख ठेदवा ।
 समरथसरणों एहजी ॥ पूरब मुनिसर जेहुआ ।
 तिण किया सरणा एहजी ॥ मु० ॥ २ ॥ संसार माहें
 जेह जीवसुं । ताहसीम सरणां चारजी ॥ गणिसमय
 सुंदर इम जणें । पामीस पुन्य प्रजावजी ॥ मु० ॥ ३ ॥
 ॥ इति श्री चार सरणां संपूर्णम् ॥ ७७ ॥

॥ अथ आलोयण स्तवन ॥

लाख चोरासी जीव खमावीए, मन धरी
परम विवेकजी । मिच्छामी दुक्कमं दीजिये, गुरु
वचन प्रतिबुजोजी ॥ लाख० ॥ १ ॥ सानलाख
सुदग तेऊ वाऊ, दस चवद वननां जेदजी ।
वट वीगल सुरतीर नारकी, चार चार चऊनर
जेदोजी ॥ लाख० ॥ २ ॥ मुऊ वैरनही ठे कोईसु,
सहु सहु मैत्री भावजी । गणि समय सुंदर इम
जणें, पामीस पुन्य प्रभावजी ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीआलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥७७॥

॥ अथ आलोयण स्तवन ॥

पाप अठारे जीव परिहरो, अरिहंत सिऊनी
साखजी । आलोयां पाप ठूटिये, जगवंत इणपरे
भाखेजी ॥ पाप० ॥ १ ॥ आश्रव कसायढोय बंधवा
वली, कलेइ अज्याखेनजी । रत अरत पइसुण
निद्रा, मायामोह मिथ्यातजी ॥ पाप० ॥ २ ॥ मन
वचन कायाए जे किया, मिच्छामी दुक्कमं तेहजी ।
गणि समय सुन्दर इम जणें, जैन धर्म नो मर्म
एहजी ॥ पाप० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीआलोयण स्तवन संपूर्णम् ॥७८॥

॥ अथ वैराग्यपद ॥

धन धन तेह दिन मुऊ कदी हांसे, हूं पामीस सं-
जम सूधोजी । पूरब रूखी पंथचाल सुं, गुरु वचने
प्रति बूजोजी ॥ धन० ॥ १ ॥ अंध पंथ भिद्धा गऊच-
री, रणवट काबू संगरसुजी । समता चाव शत्रु
मित्रसुं, संवेग सुधो धरसुंजी ॥ धन० ॥ २ ॥
संसारना संकट थकी, हूं बुटिस जिनवचने संसा-
रजी । गणि समय सुन्दर इम जणे, हूं पामीस
जवनोपारजी ॥ धन० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीवैराग्यपदं संपूर्णम् ॥ एण ॥

॥ अथ अजितनाथ लावणी ॥

अजित नाथ महागज गरीब निवाज जरूर
जिनवरजी ॥ सेवक सिरनामी तने उचारूं अर-
जी । करमाफी भारो बांक रजलियो रांक अनंता
जवमें । आधो हुं ताहरे सरण बली-डुख दवमें ।
कीधा धिक धुताचार खर खर खार लया मुऊ के-
डे । पडी पापी माहरो नाथ ठेकठंठेके ॥ आमुज-
रो मुऊ भगवान करूं गुणगान ध्यानमें धरजे ॥
सेवक सिरमामी तने उचारे अरजी ॥ १ ॥ में

पूर्ण करधा ठे पाप सुणजौ आप कहुं करजोडी । मुऊ
 चूडामें जगवान जूल नही थोमी । जीव हस्या
 अपरंपार करी करतार हवे सुकहु । ऊठो बहु बोली
 सांच में हुं रहूं । तुऊ खोला में मुऊ सीस जाण
 जगदीश गमें ते करजो ॥ सेवक० ॥ २ ॥ में
 करधा घणां कुकर्म धग्थो नहीं धर्म पूर्ण हुं पापी ।
 अवलो थई थाहरी आण में उथापी । हुं मुख
 महानिधान गणी मुनीवर तणी करी हरखायो । पर
 दारा देखी लवारु हूल चलायो । कहे कंकर केशव-
 लाल जाणीने वाल दुःखने हरजी ॥ सेवक० ॥ ३ ॥

॥ इति श्रीअजितनाथ लावणी संपूर्णम् ॥९१॥

॥ अथ थूद्विजघ्न ऋषिनवरसा ॥

दोहा—

सुख सम्पति दायक सदा, पायक जास सुरिंद ।
 शासन नायक समरिये, वांडु वीरजिणंद ॥१॥
 जम्बुद्वीपना भरतमां, पारुलीपुर नृप नंद ।
 सकमाल मुद्दतो तस प्रिया,लाठल दे सुखकंद ॥२॥
 नागर न्यात शिरोमणी, नव तेहन सन्तान ।
 सात सुताने दोय सुत, वंश वधारण वान ॥३॥

थूल चन्द्र जोगी जमर, मुनिवर मां पिण सिंह ।
 बेश बिलुडो ते सही, न गिणे रात ने दिह ॥४॥
 कनक टका तिण डव्यना, साकी वारह कोरि ।
 चार वर्ष बोली गया, पिण ठय लन सके ठोरि ॥५॥
 सकडालसुहतो तस प्रिया, कवासर डुहव्यो कोय ।
 ते माटे मरवु पडचुं, ते जाणे सहु कोय ॥६॥
 सिरीयो बंधव तिणसभे, पामी नृप आदेश ।
 थूलचन्द्र ने तेरुवा, आव्यो मंदार बेश ॥७॥
 हकीकत तेहनी सांजली, थूलिभद्र कहे सुणीनार ।
 आझा जो आपो तुम्हें, तो जइ आवुं एक वार ॥८॥
 बलतु बचन कोश्या कहे, सुण स्वामी मुऊ वात ।
 जावा नहीं हुं तुऊने, जाषों किसी वात ॥९॥

हाल १ ली-सासु पूछे बहु बात

माला किहां छेरे-एदेशी-शृंगाररस ॥

मने मारा बाप ना समजो, जावा नहीं दूरे ॥ तुऊ
 थकी घड़ीएक अलगी नहीं रहुरे ॥ १ ॥ जो नंद-
 रायजी पोते कहस्ये, वालामारा तेहने उत्तर अम्हें
 देसुरे ॥ जावा नहीं दूरे ॥ मीठका म्हारा राज

फरमावस्यो, ते माथे चमावी ने लेसुरे ॥ जावा०
 ॥ २ ॥ पारुलपुर नी सेरियां जमता ॥ बाला० ॥ में
 रतन अमोलक लाधुरे ॥ जाण पुरुष में तुंहिज
 दीतुं, तुजसुं दिलसुं वाधुरे ॥ जावा० ॥ ३ ॥
 सहजे ताहरुं थूंक पके तिहां ॥ वा० ॥ तिहां हुं लो-
 हीको रेकुरे ॥ प्राण जीवनजी पात्रो वालो, श्री
 नदरायनुं तेकुरे ॥ जा० ॥ ४ ॥ खांत करीने खुद्यो
 खमसु ॥ वा० ॥ पिण नही मूकुं वेहडुरे ॥ इम
 करतां जो प्रीज चालो, तो मुजने साथे तेकुरे
 ॥ जा० ॥ ५ ॥ कोलकरीने थूलिजद्र तिहांथी ॥
 वा० ॥ आव्यो मन आनंदेरे ॥ चूपने नेटी संयम
 लीधो, उदय रतन इम वंदोरे ॥ जावा० ॥ ६ ॥

दोहा-

थूलिजद्र कहे सुण चूपति, किम मारथो मुज
 तात । मुजने तेरुवा किम मोकदयो, कहो हिवसी
 अवदात ॥ १ ॥ चूपकहे थूलिजद्र सुणो, वांक नही
 मुज कोय । पंक्ति एक देशतरी, मुज सुण आव्यो
 सोय ॥२॥ कवित गुण महाराकह्या, ओलग कीधी
 सार । तव तूवो हु तेहने, दीधा लाख दीनार ॥३॥

सहिता जणी में सोकदयो, लेवा लाख पसाय । जो-
 जन जगति करी घणी, पिण नवी दे लाख पसाय
 ॥४॥ दिन दस पंच बोली गया, कहे पंडित सकडाल ।
 आपो मुऊने हिवे तुम्हें, जे तूठो जूपाल ॥५॥ सहि-
 तो कहे हुं आपसुं, ड्रव्य सही अर्द्ध लाख । पंडित
 कहे लेवुं नहीं, इस्यो वचन म जाख ॥६॥ हां नां
 करतां तेहने, रीश चरु शूलिजद्र । ह्रुवडवाद
 वध्यो घणुं, ते पित होये खुद्र ॥ ७ ॥ तिण रूठें
 डुहड़ो करी, आवी कही मुऊ बात । में नवी जांणी
 कूड़ गति, ते करी जवनी घात ॥ ८ ॥ राज लोक
 जाणे नहीं, ज्युं सक माल करेस । नंद राय मारी
 करी, सिरीयो पाट ठवेस ॥ ९ ॥ पंडित नासी ने
 गयो, मेली म्हारो देस । राज वच्यों जोइये, सुण
 मुहता सुविसेस ॥ १० ॥ तव में सिरीया ने कह्यो,
 का सुं क्योँ सिरदार । आज पठे वंश माहरो, कोइ
 न लोपे कार ॥ ११ ॥ तव सिरीये मुऊने कह्यो,
 शूलिजद्र ज्येष्ट ज्ञात । ते बेठां हुं किम ग्रहुं, सुण
 नंदराय अवदात ॥ १२ ॥ ते माटे तुमने कहुं, ह्यो
 काम उजमाल । हुं ठाकुर परजा तणो, तुं लीला

लठपाल ॥ १३ ॥ ते सांभली थूलिजद्र कहे, सुणहो
 श्री नंदराय । हुं आवुं थालोच हीव, पठे काम
 ग्रहु सुखदाय ॥ १४ ॥ राज सजाथी जठीने, आव्यो
 मंदिर जाम । मारग में मुनिवर मिट्या, संचुत विजय
 तिण नाम ॥ १५ ॥ त्रण प्रदक्षणा देइ करी, थालोचे
 सुविसाल । थूलिजद्र गुरुने वीनवे, संजम दो सुख
 काल ॥ १६ ॥ गुरु विचारे चित्तमें, हलूआ करमी
 तेह । वलि प्राणि प्रति बोधसी, थूलिजद्र गुण
 गेह ॥ १७ ॥ सिरीयानी अनुमति लही, लीधो
 सयम जार । विहार करी तिहांथी द्विवे, कोईक
 देश मजार ॥ १८ ॥ द्विव कामन कोश्या तिहां, जोवे
 वालिम वाट । थूलिजद्र सखी आव्या नहीं, सुती
 हींकोला खाट ॥ १९ ॥ रे सखी ऊठ उतावली,
 सकी सोले शिणगार । वली विलपंती सुन्दरी, ते
 कां ठोड़ी किरतार ॥ २० ॥ चार घरी नी अवधीथी,
 आव्यो थासाढो मास । कामणगारो कंतजी, सखी
 नाव्यो आवाम ॥ २१ ॥ तेह जठी उलटधरी,
 वालिम जोवा थाप । दीपविजय इम विनवे, द्विव
 कोश्या करे विजाप ॥ २२ ॥

॥ ढाल १ जी-तेहिज ॥

॥ हास्यरस ॥

आव्यो आसाढो मासरे ॥ नाव्यो धूतारो रे ॥
 मोने करड्यो विरह चुजंग, कोई उतारो रे ॥ १ ॥
 विरह तणो विष व्याप्यो सघले ॥ बालामारा ॥
 फुलसी देहडली दाधीरे । सककालना सुतपांखे
 बीजो, नहीं कोई मंत्र न वादी रे ॥ नाव्यो ० ॥ २ ॥
 एहना जहरनी गति अनेरी ॥ वा ० ॥ माने नहीं मंत्र
 ज मोहरोरे ॥ एकण वात नो अंत न पावे, दुख पीण
 आवे दोहरोरे ॥ नाव्यो ० ॥ ३ ॥ ऊरमर ऊरमर
 मेहुलो रे वरस्ये ॥ वा ० ॥ खलहल वाहला वाजेरे ।
 वा पीउको पीऊ १ पुकारे ॥ तिम तिम दिलको
 दाजेरे ॥ नाव्यो ० ॥ ४ ॥ वयरी नी परे ए वरसालो ॥
 वा ० ॥ मोने आवाने लागे आकोरे । तन मन तन
 मन मन थयो मिलवा, कोइ मने पिउको देखाडोरे ॥
 नाव्यो ० ॥ ५ ॥ इण अवसर श्री गुरु आदेशे ॥
 वा ० ॥ थूलिचद्र चोभासे आव्यो रे । उदयरतन
 कहे कोश्या रंगे, थालचरी मोतीके बधाव्यो रे ॥
 नाव्यो ० ॥ ६ ॥

दोहा-

इण अवसर श्रीगुरुतणो, लेइ आदेश उदार ।
 चोमासुं रहिवा भणी, श्रीशूलिचन्द्र अणगार ॥१॥
 इरजा सुमति सोधता, हलवे धरता पाय । बाल-
 पणारी पदमणी, शूलिचन्द्र मनाव जाय ॥ २ ॥
 वज्र कठोटो दढकरी, हिवे शूलिचन्द्र मुणिंद ।
 कोश्या मंदिर ढंकडा, आव्या मुनि आणंद ॥ ३ ॥
 तव दासी उतावली, दीधी वधाई वेस । बालम
 आव्यो विरहणी, मधुरे मन आदेस ॥ ४ ॥ तव
 ऊठी सा सुन्दरी, पिउने मिलवा काज ।
 चातुक जिम चतुरा हुंति, ते ऊभी कर लाज ॥ ५ ॥
 सुण सामी ते मुऊ भणी, बलि ठटकी दीधो ठेइ ।
 चारघडी मुऊने कही, प्रीउ अवरा कीध सनेइ ॥६॥
 फूस तणो जिम तापणो, बली जेवो संघ्या वान ।
 ठहर तणो जिम तेहनो, तिम नागर मित्रनो मान
 ॥ ७ ॥ मेणा देती माननी, मधुरा बोले बोल ।
 आज सफल घर आंगणो, आज सफल दिन रेण
 ॥८॥ मोती थाल वधावीने, कोश्या करे अरदास ।
 पूरवप्रीत संचारिये, प्रीतम खील विदास ॥ ९ ॥

मेहले आवो बालहा, बलिहारी तुज वेश । चंद्र-
मुखी ऋषिने कहे, मंदिर करो प्रवेश ॥ १० ॥
पूरवप्रीत संभारिये, थून्निभद्र जीवन प्राण । पभणे
दीप कोश्या कहे, प्रीज तुमथी खरोमंदाण ॥ ११ ॥

॥ ढाल ३ री ॥ करुणारस ॥

म्हारा मन मांही लागे मीठो रे, दीहामो आ-
जुनो । हुंतो पामी पुन्य संजोगे रे, जोगे मन
मळूनो ॥ प्राणनाथना पगळा थातां ॥ बालामारा ॥
माहरो आंगणो नाचवा लागो रे । हरख हीयना
कमल समोहे, वखत अवर जाय वागो रे ॥ १ ॥
दीहामो ॥ कुल देव्या इक सुनिजर कीधी ॥
वाण ॥ बली मोतीडे मेह वूठो रे । आज म्हारे
आंगण आंबो मोरधो, पूरव पुन्यज तूठो रे ॥ २ ॥
दीण ॥ मंदिर सामो हसीने आवे ॥ वाण ॥ वारु
साचो के सुहणो रे । आलसु ने घर गंगा आवी,
सुख के नहीं कांइ जणो रे ॥ ३ ॥ दीण ॥ चार
घडीनी अवधो करीने ॥ वाण ॥ चाड्या चितको
चोरी रे । मुजने मनथी विसारीने, कुण मनावी
गोरी रे ॥ ४ ॥ दीण ॥ बाहर आवी सुं उजाळो,

मंदिर पावन कीजे रे । दासी तुम्हारी अरज
करेठे, मुजरो मानी लीजे रे ॥ ५ ॥ दी० ॥ अउं
ठहाथ अलगी संचरजे ॥ वा० ॥ पठे जिम जाणे
तिम कीजे रे । धपमप मादल ने धौका रे, फूं-
दरुनी पर फीरजे रे ॥ ६ ॥ दी० ॥ इम परठीने
रह्या चोमासे ॥ वा० ॥ उदयरतन इम चाखे रे ।
नित नित माहरी वदणा होजो, जिम नासुं दृढ
करी राखे रे ॥ ७ ॥ दी० ॥

दोहा—

शूलिज्जकहे सुणसुंदरी, में वशी कीधानेण । तुं
व्याकुल थई विरहणी, किमचाखे इम वयेण ॥ १ ॥
कोश्याकहे सुणो पिउजी, तुं मुऊ जीवन प्राण ।
प्रेम जल हिव सींचिये, वली वधे जिम वांण ॥ २ ॥
शूलिज्जकहे कोश्या सुणो, अम्हे निरलोत्ती साध ।
रहिसुं चोमासो तुम्ह घरे, पिण मनमें निरावाध
॥ ३ ॥ कोश्याकहे तुम वयणके, हुं बलिहारी जाउं ।
मद्विलपधारो मोहना, जिमपूरण सुख पाउं ॥ ४ ॥
शूलिज्ज कोश्याने कहे, साका तीनज हाथ ।
मुऊथी अलगी तुं रहे, मृग वाघण को साथ ॥ ५ ॥

वाघण हारे बालहा, हुं तु अचला बाल । महिर
करो मुज उपरे पूरव प्रीतसंचाल ॥ ६ ॥ अचला
सबली सिंहथी, दुरगतनी दातार । सिंहणजय
एको जवे, रामाजय वार ॥ ७ ॥ थूलिभद्र ऋषी
इम कहे, सुणीकोश्या अचदात । पंचमहाव्रत में
लिया, हिव सांचल मुज वात ॥ ८ ॥ कोश्या कहे
अम्ह मंदिरे, आवी रहो चौमास । थूलिचद्र—
आव्या तिहां वलि, मंदिर धरी उलास ॥ ९ ॥ जाव
जगति नित प्रतिकरे, वलि जोजन सरस तंबोल ।
मधुर वयण मुखथी कहे, प्रिउ करिये रंगरोल
॥ १० ॥ मुह मचकोरी इमकहे, कोश्यामुखथी
वाण । बालपणारीबालहा, मुजथी सहीमताण
॥ ११ ॥ विन पुठयो व्रत किमग्रहो, वालेसर
गुणवंत । जोगारंजछोडी करी, इहां रंग रमो
एकंत ॥ १२ ॥ हुं प्रनु दासी तुमत्तणी, पग रज
रेण समान । हिव अंतराय किम लेखवो, काया
करुं कुरवान ॥ १३ ॥ अंतजिहांथी किजिये,
तिहां मन मेल न होय । दीपकहे घर आविने,
अंतर न करे कोय ॥ १४ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥ तेहिज-रोद्धरस ॥

म्हेतो जोग तुम्हारो जाण्योरे ॥ म्हेलोने आटो-
 रे ॥ मोने खटके हीयरुमांही प्रेमनो कांटोरे ॥१॥
 म्हे० ॥ जोगीहुवे ते जगल सेवे ॥ वा० ॥ तो रहे जो-
 गनो पाणीरे ॥ अम्ह घर आवीने जोग चलावस्यो॥
 तो जोगनी मुद्रा जाणीरे ॥ २ ॥ म्हे० ॥ ठमकठम-
 क पाय वीठीया ठमके ॥ वा० ॥ रमऊम जांऊरकी
 वाजेरे ॥ जांऊरडीना ऊमकारा माहीं, व्रत सघलाई
 जांजेरे ॥ ३ ॥ म्हे० ॥ एक चौमासो चित्रशाला मा
 हीं ॥ वा० ॥ वीजु मेहरु टपटप चुवेरे ॥ आंखकीया-
 ना उलाला मांही, मुनि पिण साहसुं जोवेरे ॥४॥
 म्हे० ॥ इम इम मादल ना धोंकारे ॥ वा० ॥ थइ
 थइ नाटक छदेरे ॥ मुखना मुलकडामांहीं, कहो
 कुण न पडे फंदेरे ॥ ५ ॥ म्हे० ॥ एहवा वचन सुणी
 कोश्याना ॥ वा० ॥ थूलिजद्रकहे सुण चालारे ॥ नाना
 नाना हिवे नही चुकुं, देखी ताहरा चालारे ॥ ६ ॥
 म्हे० ॥ उदयरतन कहे ए मुनिवरना ॥ वा० ॥ प्रेमे
 वंदु पायारे ॥ मनथी जेणे उतारी मेली, वार वरस
 नी मायारे ॥ ७ ॥ म्हे० ॥

दोहा-

वयण सुणी वालम तणा, धरती कोश्या दुःख ।
 प्रिउ ने हिव सीकरूं, जिम पूरण पामुं सुख ॥१॥
 ऋद्धि घणी घरमाहरे, कुण तेहनो रखवाल । नाग-
 रकंत ऋषीथयो, हुं लघु अवलावाल ॥२॥ सुणहो
 प्रिउ ते कंतजी, अत्रगुण विण सही नार । मुज
 सरीखी नही सुन्दरी, शूलिचद्र हिवे विचार ॥३॥
 अम्ह आगल सुण साहिवा, इन्द्रसरीखा जेह ।
 हरिहर ब्रह्मनी परे, अम्हथी संके तेह ॥४॥ ते माटे
 तुम्हने कहुं, मानो प्रिउ मुजवात । नहिं तर प्राण
 तजुं हिवे, तेह कहो अवदात ॥ ५ ॥ शूलिचद्र
 कहे कोश्या जणी, हुं नवि खंफु जोग । में विसारी
 तुजने, समतासु संभोग ॥ ६ ॥ तब दासी कोश्याने
 कहे, नाटक करिये एक । हावजाव देखाफिये, क-
 रिये रंग अनेक ॥ ७ ॥ सखी दस वीस मेलि करी,
 मांड्यो नाटक सार । दीपकहे कोश्या त्रिया, सह
 सखी सिरदार ॥ ८ ॥

ढाल ५ मी-तेहिज-वीरारस ॥

मेहसुं मांड्यो वाद माननी तरसेरे । गगन मं-

डलमां उंनो गाजेरे ॥ १ ॥ वा० ॥ महिलमां मादल
 वाजेरे । चित्रशालमां विणवाजेरे, मोर लवे गिर कुंजेरे
 ॥२॥ महा० ॥ प्रिउ ध चात्रक बोलेरे ॥ वा० ॥ कहु श
 कोकील कहुंकेरे । गुघरनीना घमकारा मांहीं, ताथइ
 तान न चूकेरे ॥३॥ महा० ॥ जलहल काने जालऊ
 बुकेरे ॥ वा० ॥ जीत खेदीने जीपेरे । पाणी लाल
 ममोला जीत्यारे ॥ हरिया सालुं अति दीपेरे ॥ ४ ॥
 महा० ॥ प्रेम तणा रस चूवा लागा ॥ वा० ॥ रंगना
 रेला चाट्यारे । लपसी पमीत्रा जोइवु थयुं, वाध्या
 मनोरथ वेळारे ॥ ४ ॥ महा० ॥ अउठ कोनी रो-
 मज उलस्या ॥ वा० ॥ जालिम कीधो जोरोरे ॥ ज-
 लमांही कमल रहे कोरोरे ॥ तिम थूलिजद्र रह्यो
 कोरोरे ॥ ६ ॥ महा० ॥ ललित फुंढडी लेलेती
 जोवेरे ॥ वा० ॥ आमी निजरे हेरेरे ॥ उदयरतन
 कहे धनमुनिवरजे, जे नवि जोवे फेरीरे ॥७॥ महा० ॥

दोहा-

बहुविध नाटिक देखीने, थूलिजद्र न सिग्गो
 मन । विषयाविटंवे ते विरहणी, कता पठीडो
 तन ॥ १ ॥ जालीम में मन वश करयो, पांचे ग्रह्यो

सुजट । एकमनी थई कासनी, क्रोध कीयो दह
 बट ॥ १ ॥ सांजली ताहरा बोलरा, हुं चूंकुं
 नहीं नार । जोगपणो में आदरधो, जोवन अथिर
 संसार ॥ २ ॥ जवरूपे तुं मोहनी, साधन विषनी
 बेलि । इमजाणी में परिहरी, हिव संयसथी मन
 मेलि ॥ ४ ॥ सुण नंदिखेण सरीखा जती, आ-
 खादिक जेह । मोह महाभरु वशीकरी, मुक्ति-
 गया ऋषितेह ॥ ५ ॥ काची काया कारमी, माया
 मोहनी जालि । बली बली स्युं नायका, हिवे वि-
 षय थकी मन वालि ॥ ६ ॥ काया कूपी काचरी,
 पीपल पान समान । अथिरपणुं जीवता घणुं, जे-
 हवुं संध्यावान ॥ ७ ॥ ते माटे वनिता तुम्हे, म-
 करो आल पंपाल । दीपकहे थूलिभद्र ऋषि, वयण
 कहे तत्काल ॥ ७ ॥

॥ ढाल ६ ट्टी-तेहिज-जयरस ॥

तुं स्याने करे ठे चालारे । हुं नवि चूंकुरे ॥ मुने
 वाली लागे ठे मालारे ॥ ध्यान न मूकुरे ॥१॥ हुंनण॥
 शील साथ में कीध सखाई, मेली दूजी मायारे ।
 जालिम मयणने वस करीने, जीत निसाण वजा-

यारे ॥ २ ॥ हुं० ॥ वज्र क छोटी वाढ्यो सुधो. ते
 ताहरो ठोड्यो नवि तुटेरे ॥ जो मंजारी घणुं अकु-
 लाई । तो सरापे ठींको नवि तुटेरे ॥ हुं० ॥ ३ ॥ त्रा-
 सीरय जो अंगारे वरसे, समुद्र मर्यादा चूकेरे । प-
 वने जो कनकाचल कोले, नक्षत्र मारग मूकेरे ॥ ४ ॥
 हुं० ॥ तो पण ताहरे वसी नवि आवु, तो सुन्दरी
 मानजे साचुरे । राईना जाव वही गया राते, हीवे न-
 हीं मन काचूरे ॥ ५ ॥ हुं० ॥ सो बालक जो सा-
 मठा रोवे, वे पांचे एक न चडे पांचोरे ॥ फोगट
 स्यां पाखरु करे ठे, लागे नहीं तुऊ तानोरे ॥ ६ ॥
 हुं० ॥ मुनिवर जीते वड़ी कोश्याने, पगनी मोजकी
 नोलेरे । तेहने माहरी वंदणा होजो, उदयरतन
 इम बोलेरे ॥ ७ ॥ हुं० ॥

दोहा-

नागर न्यातनो लारुलो, श्रीधूलिभद्र अणगार ।
 कोश्या वयणथी नविस्त्रियो, समता थई तिणवार
 ॥ १ ॥ मन वचन काया वस किया, हे सुन्दर
 सुण वात । किसो आरुम्बर तुं करे, इम बलि
 करे विलापात ॥ २ ॥ जिम मजारीने मूपक, जिम

मोरा ने नाग । जिम चीकी ने वाज वली, मृग
रिपु कहा बाघ ॥ ३ ॥ जिम रामाने रूषि तणो,
जोय पटंतर कोश । पिण हुं तुऊ प्रतिबोधवा, वली
थानर होश ॥ ४ ॥ वचन सुणी वनिता कहे, जले
आव्या मुऊ नाथ । आज सफल दिन माहरो.
तुऊ मुऊ शिवपुर साथ ॥ ५ ॥ मोह विशेषें वि-
रहणी, अति उछक उजमाद । कहे वीरहो तुम
तणो, हुं न खमीसकुं एकबाद ॥ ६ ॥ व्याकुल
जाणी वीरहणी, रूषि नवी बोले वाण । केमे
खागी कामनी, करती खांचा ताण ॥ ७ ॥ वलती
रूठी नायका, केमे विलगी तेह । नाटिक माटे
जुंगतसुं, दीपकहे धरी नेह ॥ ८ ॥

॥ ढाल-७ मी ॥ तेहिज ॥

सांजली ताहरा वयण, हुं थई महिलारे । मोने
साखे हीयडा मांहीं, प्रीतरुी पहिलारे ॥ १ ॥ हुं० ॥
बार वरस नी प्रीतडी बांधी ॥ वा० ॥ बापना को-
लज बोळ्यारे ॥ कोल करीने जीमणे हाथे, ते
किम जाये मेळ्यारे ॥ २ ॥ हुं० ॥ अद घडी पिण
अलगी रहता ॥ वा० ॥ मनमां महाडुःख मानुरे ।

आंखनीये आसुं पकता, विरह नो दुःख न ख-
 मातुरे ॥ ३ ॥ हुं० ॥ एक दिवस जे तुम्हे रीस
 करीजे ॥ वा० ॥ तुंऊसुं कीधी माठीरे । वाह-
 जाल मनावी मुजने, ते बेला किहां नाठीरे ॥ ४ ॥
 हुं० ॥ पहिला लाड लमावी मुजने ॥ वा० ॥ मेरुं
 ने माथे चामीरे । मूलमंत्र ठांमिता मुजने, मनमां
 महिर न आवीरे ॥ ५ ॥ हुं० ॥ तापस सहजे
 निरदेई होवे ॥ वा० ॥ मुखथी बोले मीठेरे ।
 कालजामांहींथी कपट न ठोमी, तेमे प्रतक दी-
 ठेरे ॥ ६ ॥ हुं० ॥ एहवा उलंजा काने सुणने ॥ वा० ॥
 मुनिवर मन न ऋगाव्युरे । उदयरतन कहे सुला-
 छलढे, जिणे ते दीकरो जायोरे ॥ ७ ॥ हुं० ॥

दोहा-

ओलंजा नारी तणा, सांजलिया श्रवणेह । श्री
 थूलिजड कोश्या, साहमां दे उपदेह ॥ १ ॥ रे
 कोश्या कां विहरणी, बांधे माया जाल । ए काया
 मल सारिखी, खीण न दीजे उजमाल ॥ २ ॥
 सुख पिण जीवे जोगव्यां, लक्ख अनंती वार ।
 त्रिपत न पामी जीवने, कोश्या हिये विचार ॥ ३ ॥

मन संवर कर आपणो, जिम पहुंचे वंठित आस ।
संयम लेइ सुक्ते जइ, करिये लील विदास ॥ ४ ॥
निसुणी कहे तव नायका, मीठी वालिम वात । तुम
गुणकेरी चातुरी, में मुख कही न जात ॥ ५ ॥
पिण स्वामी निज नारीने, आदर दो इकवार ।
द्विव सोमासो उत्तरयो, हुवुजे इस वार ॥ ६ ॥ पंच-
रूपनो आकरो, लीधो सुणने कोश । तव कोश्या
प्रिउने कहे, इम कां छोको निरदोश ॥ ७ ॥ दोष
अनंता नायका, तुज बोलाव्यो होय । दीपविजय
कहे सांजलो, श्रुतिजड चासे सोय ॥ ८ ॥

॥ ढाल ट मी ॥ तेहिज ॥

में परणी संयम नारीरे, तोने विसारीरे ॥ जे मा-
थानी मेली मुऊने तेहवी कामणगारीरे ॥ तोण ॥ १ ॥
तेहमोने आकषालीधुं, पलक न मेल पासोरे । अउठ
हाथ अलगी तोने, राखी नहीं वारो वासोरे ॥ तोण
॥ २ ॥ निजर मिलावे मिलता नयणे, महारो मनको
लीधो उलालीरे । ते आगे स्यों जोअरो ताहरो,
बोली रहो मन वालीरे ॥ तोण ॥ ३ ॥ सुहपति
मालाने ओघो, अहनिश रहे मुज पासेरे । ए त्रण

माँणस ठे तेहना, तुऊने तेनो सारी राखेरे ॥ तो०
 ॥ ४ ॥ चिहुंपासे वे चोकी तेहनी, तेहने हाथे छे
 कून्त्रीरे ॥ घरमें न पके पग ताहरो, तुं कां थइ
 ऊची नीचोरे ॥ तो० ॥ ५ ॥ पांचानी साखे मोने
 ते परणी, तूंतो ठे मन मानीरे ॥ आखर अमल
 न पहुंचे ताहरो, ते माटे रह ठानीरे ॥ तो० ॥ ६ ॥
 सहजे तुऊसु वात करूठु, तो चढ़े तेहने चटकोरे ॥
 तरवार नी धारा पर दाखी, पिण लाखीणो लट-
 कोरे ॥ तो० ॥ ७ ॥ चोरनो जोहरो तिहां लगे
 पहुंचे, तिहां लगी धणी नवि जागेरे ॥ धणी ति-
 वारे जागी ने जोवे, तिवारे ते मारग लागेरे ॥ तो०
 ॥ ८ ॥ एहवा वचन सुणी मुनिवरना, कोश्या सम-
 कित पामीरे ॥ बेकर जोकी वडु तेहने, उदयरनन
 सी नामीरे ॥ तो० ॥ ८ ॥

दोहा—

कोश्या समकित पामियो, शूलिचद्र प्रीतम पास ।
 आज सफल दिन माहरो, धन चित्रसाली वास ॥१॥
 ए महिले सुख जोगव्या, इन्द्र तणी परे जेम । इ-
 णही महिले व्रत लिया, द्विजे जावा देउं केम ॥२॥
 ते माटे तुम्हे इहां रहो, शूलिचद्र ऋषि राय । कहे

शूलिचन्द्र कोश्या सुणो, हिवे जास्युं गुरुपास ॥३॥
 हिवे चौमाशो ऊतरयो, मुऊ गुरु जोवे वाट । ए
 व्रत रूढी परे पावज्यो, म करो मन उचाट ॥४॥
 शिखामण दीधी जली, कोश्याने तिण वार । तव
 बनिता इम वितवे, धन धन तुऊ अवतार ॥ ५ ॥
 में उपाय करयां घणा, तुऊ चुकावा स्वामी ।
 खमज्यो मुऊ अपराधने, कहुतुं हुं सिरनामी ॥ ६ ॥
 चालो इम हुं किमकहुं, पोहचों वंछित आस । व-
 हिला वलि इहां आवजो, नही विसारुं सासो
 सास ॥७॥ हरषित आंसु नांखती, विकसीत बोले
 बेण । गुरु वंदी प्रचु आवजो, म्हारा स्नेही सेण
 ॥८॥ कहे शूलिचन्द्र तुम्हे आवजो, मुक्ति महिला-
 मांही । जन्मजरा तिहां नहीं कहे, रमस्युं मन
 उच्छाहीं ॥९॥ मोतीयाल वधावीने, कोश्या दीध
 आदेश । मुनिवर रखे विसारता, बलिहारी तुम्ह
 वेश ॥१०॥ तिहांथी शूलिचन्द्र चालिया, करता
 शुऊ विहार । जई वांध्या गुरु के चरन, करे दुः
 कर दुःकरकार ॥११॥ सिंह गुरु शूलिचन्द्र ने कहे,
 तुं जग सांचो सिंह । कोश्याने प्रति बूऊवी, तें

राखी जग लीह ॥ १२ ॥ चौराशी चोवीसी लगे,
 अडग रहज्यो तुऊ नाम । कोश्या वयणथी नत्रि
 डिग्यो, थूलिज्जड गुण धाम ॥१३॥

॥ ढाल ६ मी ॥ राग धन्याश्री ॥

पामिने प्रतिबोध, कोश्यारे कोश्या व्रत उचरेरे ॥
 समकित मूल व्रत वार, कोश्यारे कोश्या मुनि व-
 चने तव आदरेरे ॥ १ ॥ धन लाछिल दे मात,
 धन धन सकडाल ताहरा तातनेरे ॥ धन धन गौ-
 तम गोत्र, धन धन निर्मल नागर न्यातनेरे ॥ २ ॥
 धन धन जपा वहिन, धन धन सिरीया त्रातनेरे ॥
 धीर्य पणा धन धान्य, जग मांहीरे तुऊ अवदान-
 नेरे ॥ ३ ॥ सम्भृत विजय धन, जे थगो धर्माचार्य
 ताहगेरे ॥ धन धन ए चित्रगाली, जोतारे जोता
 धन जमवारो माहरे ॥ ४ ॥ जे पामी हुं तुऊ सुं
 प्रीत, जूंज्योरे जूजी वूजी ऊगरथोरे ॥ वाहे जाले-
 स्या माट, मुऊनेरे मुऊने वाढ्ही मल करीरे ॥५॥
 कोश्यासुं कर सीख मुनिवररे, मुनिवर विहार ति-
 हांथी कररे ॥ पहंता श्रीगुरुपास, डुक्करे डुक्कर
 फिर गुरु मुख से कहेरे ॥ ६ ॥ नाम राख्यो जग

मांही, जेणेरे जेणे चौराशी चौवीसी लगेरे ॥ धन
 धन ते नरनार, मनथोरे मनथो विषययकीजे
 ऊचगेरे ॥७॥ सतरसे गुणसठी मिगसरगे, मिगसिर
 सुदी सौन एकादशीरे ॥ शील तणा गुणपद्, श्री-
 गायोरे गायोरे ऊनाऊ आसे उलसीरे ॥८॥ श्रीश्रू-
 लिचद्र ऋषिराय, गातारे गाता मुंह मांग्या पासा
 ढट्या ॥ उदयरतन कहे एम, मननारे मनना मनने-
 रथ सवि फट्यारे ॥९॥

॥ इति श्रीश्रूलिचद्रऋषि नवरसा सम्पूर्णम् ॥९॥

॥ अथ शीयद्व नववाङ् ॥

दोहा—

श्रीनेमिश्वर चरण युग, प्रणसुं ऊठि प्रजात ।
 बावीशम जिन जगगुरु, ब्रह्मचारी विख्यात ॥१॥
 सुन्दर अपछर सारखी, रति समराजकुंवारी । चर
 यौवन में जुगतिसुं, छोड़ी राजुलनारी ॥२॥ ब्रह्म-
 चर्य जिणिपालियो, धरता डुऊर जेह । तेह तणा
 गुण वर्णवुं, जिम पावन हुवे देह ॥ ३ ॥ सूरि
 गुरु जो पोते कहे, रसना सहस वणाई । ब्रह्मच-
 र्यना गुण घणा, तो पिण कह्या न जाई ॥ ४ ॥

गलित पलित काया थई, तोही नमुं कई आस ।
 तरुणपणे जे व्रत धरे, हु वलिहारी तास ॥ ५ ॥
 जोव विमासी जोइतु, विषयमें राची गंवार । थोडा
 सुखने कारणे, मूरख घण उमहारी ॥ ६ ॥ दश
 दृष्टान्ते दोहिलो, लाधो नरनव सार । पालि शीयल
 नव वाडिसुं, सफल करो अत्रतार ॥ ७ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

मनमधु कर मोही रह्यारे ॥ एडेगी ॥

शील सुतरुवर सेविये, व्रत मांही गुरु यो जेहरे ॥
 दंज कदाग्रह ठोक्निने, धरिये तिणिसुं नेहरे ॥ शी०
 ॥ ७ ॥ जिनशासन वन अति जलो, नन्दन वन
 अनुहाररे ॥ जिनवर वनपालक तिहां, करुणा रस
 जंकाररे ॥ शी० ॥ ए ॥ मन ठाणे तरु रोपियो, चीज
 जावना वंजरे ॥ श्रद्धा सारण तिहां वहे, विमल
 विवेक ते अंजरे ॥ शी० ॥ १० ॥ मूल सुदृढ सम-
 किन जलें, खंध नवेनत दाखीरे ॥ साख महाव्रत
 तेहनी, अनुव्रत ते लघु साखी रे ॥ शी० ॥ ११ ॥
 श्रावक साधु तणा घणा, गुण गण पत्र अनेकरे ॥
 मउर कर्म शुज वंधनो, परिमल गुण अनिरेकरे ॥

शी० ॥ १२ ॥ उत्तम सुर सुख फूलमा, शिवसुख
ते फल जाणीरे ॥ जतन करी वृद्ध राखवो, हियके
अति रंग आणीरे ॥ शी० ॥ १३ ॥ उत्तराध्यने
सोदमें, बंनसमाही ठाणरे ॥ कीधी तिणि तरु
पांखनी, ए नव वामी सुजाणरे ॥ शी० ॥ १४ ॥

दोहा—

हिव प्राणी जाणी करी, राखी प्रथम ए वामि ।
जो ए चांजी पेसिसी, प्राणे प्रमदाधामि ॥ १५ ॥
जेहड तेहड खलकती, प्रमदा गय मयमत्त ।
शीलवृद्ध उपाडिसी, वामि विभामी तुरत्त ॥ १६ ॥

॥ हाव १ री ॥ नणद्वारी देशी ॥

जाव धरि नित्य पालिये, गुरु ओ ब्रह्म व्रत सार
हो ॥ नवियण जिणथी शिवसुख पामिये, सुन्दर
तण सिणगार हो ॥ न० ॥ जा० ॥ १७ ॥ स्त्री प-
शु बंरुग जिहां वसे, तिहां रहिवो नहीं वास हो ॥
भ० ॥ एहनी संगति वारिये, व्रत नो करे विणास
हो ॥ न० ॥ जा० ॥ १८ ॥ मंजारी संगति रमें,
कूकर मूसग मोर हो ॥ भ० ॥ कुशल किहांथो
तेहने, पामें दुःख अघोर हो ॥ न० ॥ भा० ॥ १९ ॥

अग्नि कुंभ पासे रह्यो, पिघले घृतनो कुंभ
 हो ॥ ज० ॥ नारी संगति पुरुषनो, रहे किसी प-
 रिवंन हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ २० ॥ सिंह गुफा वा-
 सी जती, रह्यो कोस चित्रशाल हो ॥ ज० ॥ तु-
 रत पड्यो वसी तेहने, देश गयो नेपाल हो ॥
 ज० ॥ भा० ॥ २१ ॥ विकल अकल विण चापका,
 पंखी करता केली हो ॥ ज० ॥ देखी लखणा म-
 हासती. रूखी घणी इण मेली हो ॥ ज० ॥ भा० ॥
 २२ ॥ चित्त चचल पंरुग नरा, वरते तीजे वेद
 हो ॥ भ० ॥ तजी संगति रति तेहनी, कहे जि-
 न हरख उमेद हो ॥ ज० ॥ जा० ॥ २३ ॥

दोहा—

अथवा नारी एकली, भलि न संगति तास । धर्म
 कथा पिण कहेवी नहीं, बेसी तेहने पास ॥ २४ ॥
 तेथी अत्रगुण हुवे घणा, शका पामे लोक । आवे
 अछतो आलसिरी, बीजी वाडि विलोक ॥ २५ ॥

॥ ढाल रे री ॥

॥ रे प्राणी हरी संवेग विचार ॥ एदेशी ॥
 जाति रूप कुल देशनी रे, रमणी कथा कहे

जेह । तेह नो ब्रह्म व्रत किम रहे रे, किम रहे व्रतसुं
 नेह रे ॥ रे प्राणी नारी कथा निवारी, तुंतो बीजी
 वाकी संजारी रे ॥ प्रा० ॥ २६ ॥ चन्द्रमुखी मृग
 लोयणी रे, वेणी जाणी जुजंग । दीप शिखा
 सम नाशिका रे, अधर प्रवाली रंग रे ॥ प्रा० ॥
 २७ ॥ वाणी कोयल जेहवी रे, वारण कुंजो रोज ।
 हंस गमनी कृसहरि कटी रे, कर जुग चरण सरो-
 ज रे ॥ प्रा० ॥ २८ ॥ रमणी रूप इण वरणवे रे,
 आणी विषय मन रंग । मुगध लोक ने रींऊवे रे,
 वाधे अंग अनंग रे ॥ प्रा० ॥ २९ ॥ अपवित्र म-
 लनो कोठिलो रे, कलह काजल नो ठाम । वारह
 श्रोत्र बहे सदा रे, चरम दीवनी नाम रे ॥ प्रा०
 ॥ ३० ॥ देह उदारिक कारमी रे, खिण में जंगुर
 थाय । सप्त धातु रोगा कुली रे, जतन करंता
 जाय रे ॥ प्रा० ॥ ३१ ॥ चक्रीचोथो जाणीये रे,
 देवे दीठो आइ । ते पिण खिण में विणसियो रे,
 रूप अनित्य कहाइ रे ॥ प्रा० ॥ ३२ ॥ नारी कथा
 विकथा कही रे, जिनवर बीजे अंग । अनर्थ दंरु
 अंग सातमें रे, कहे जिन हरख प्रसंग रे ॥ प्रा० ॥ ३३ ॥

दोहा-

ब्रह्मचारी जोगी जती, न करे नारी प्रसंग ।
 एकही आसन वेसतां, थाये व्रतनो जग ॥३४॥
 पावक गाळे लोहने, जो रहे पावक संग ।
 इम जाणीरे प्राणियां, तजि आसन त्रियरंग ॥३५॥

॥ ढाल ४ थी ॥

थे सौदागर लाल, चलण न देसुं ॥ एदेशी ॥
 तीजी वामी द्विवे चित्त विचारो, नारी सहित
 वेसवो निवारो लाल ॥ एकही आसन काम दीपावे,
 चोथा व्रतने दोप लगावे लाल ॥ ती० ॥ ३६ ॥ इम
 वेसंता आसंगो थाइ, आसंगे काया फरसाये लाल ॥
 काया फरस विषय रस जागे, तिणथी अवगुण
 थाये आगे लाल ॥ ती० ॥ ३७ ॥ जोवो श्री सम्भूत
 प्रसिद्धो, तन फरसे नियाणो कीधो लाल ॥ द्वाद-
 शमो चक्रवर्ति अवतरियो, चित्रे प्रतिबोध तेहने
 दियो लाल ॥ ती० ॥ ३८ ॥ तेहने उपदेश लेस
 न लागो, विरतिनका कायर थइ जागो लाल ॥
 सातमी नर्क तणा दुःख सहिया, छी फरसे अ-
 वगुण इम कहिया लाल ॥ ती० ॥ ३९ ॥ काम

विराम वधे दुःख खाणी, नरक तणी सांची सही
 नाणी लाल ॥ एके आसन दूषण जाणी, परिहरि
 निज आत्म हित आणी लाल ॥ ती० ॥ ४० ॥
 माझ बहिन जे बेटी थाये, ते बेसी ने ऊठी जाये
 लाल ॥ कलपे एकण मुहूरत पाछे, वेसे वो जिण
 हरख सु आढे लाल ॥ ती० ॥ ४१ ॥

दोहा—

चित्र लिखित जे पूतली, ते जोहवी नांही ।
 केवल ज्ञानी झमकहे, दशवैकालिक मांही ॥४२॥
 नारी वेद नरपति थयो, चरक कुशील कहाय ।
 लख जव चौथी वाफी तजी, रुलियो रूयीराय ॥४३॥

॥ ढाल ५ मी ॥

मोहन मुंदरी लेगयो ॥ एदेशी ॥

मनहर इन्द्री नारीना, दीठां वाधेविकार ॥ वागुर
 कांमी मृग जणीहो, पाषर च्यउ करतार ॥ सुगुण रे,
 नारी रूप न जोश्ये जोश्ये नहीं धरी राग ॥ सु० ॥ ४४ ॥
 नारीरूपे दीवलो, कामी पुरुष पतंग । जांपे सुखने
 कारणेहो, दाजे अंग सुरंग ॥ सु० ॥ ४५ ॥ मन
 गमता रमता हीये, उर कुच वदन सुरंग । नहर

अहरे जोगी कस्या हो, जोवंता व्रत जंग ॥ सु०
 ॥४६॥ कामणगारी कामिनी, जीत्यो सयल संसार ।
 आखी अणीन को रह्यो हो, सुर नर गया सहुहार ॥
 सु० ॥ ४७ ॥ हाथ पांव ठेव्या हुवें, कान नाक विण
 जेह । तेपिण सो वरसां तणीहो, ब्रह्मचारी तजे
 तेह ॥ सु० ॥ ४८ ॥ रूपे रम्या सारिखी, मीठा
 घोली नार । तो किम जोवे एहवीहो, भग यौ-
 वन व्रत धार ॥ सु० ॥ ४९ ॥ अबला इन्द्री जो-
 वतां, मन थाये वसि प्रेम । राजमति देखी करी
 हो, तुरत रुग्यो रहनेम ॥ सु० ॥ ५० ॥ रूप कूप
 देखी करी, मांदि पमे कामंध । दुःख माने जाणे
 नहीं हो, कहे जिनहरख प्रबंध ॥ सु० ॥ ५१ ॥

दोहा—

संजोगी पासे रहे, व्रतधारी निशदीश । कुशल
 न तेहना व्रत भणी, भांगे विश्वावीश ॥ ५२ ॥
 वसे नहीं कुटि अंतरे, शील तणी हुवे हाणि ।
 मन चचल वसि राखिवा, हीये धरोजिनवाणि ॥ ५३ ॥

॥ ढाल ६ ट्टी ॥

श्रीचन्द्रप्रभु पाहुणो रे ॥ एदेशी ॥

वाडी हिवे सुणी पांचमीरे, शील तणी रखवाल ।

चूरो पकसी तो सहीरे, व्रत थासी विसराजरे ॥
 वा० ॥ ५४ ॥ परियठ जीतने आंतरेरे, नारी रहे
 जिहां रातरे । केलि करे निज कंतसुरे, विरह
 मरोमे गातरे ॥ वा० ॥ ५५ ॥ कोयल जिम कुहके
 लवे रे, गावे मधुरे सादरे । गहमाती राती
 थकीरे, सुरत सरस उनमादरे ॥ वा० ॥ ५६ ॥
 रोवे विरहा कुल थईरे, दाधी दुःख दव जालेरे ।
 दीणे हीणे बोलडरे, काम जगावे बाखरे ॥ वा०
 ॥ ५७ ॥ काम बसे हरु हरु हसेरे, प्रिय भेटो तन
 तापरे । वातकरे तन मन हरे रे, विरहिणी करे
 विलापरे ॥ वा० ॥ ५८ ॥ राग विषय सुणी ऊलसे
 रे, हांसे अनरथ होयरे । राम घरणी हांसा थकी
 रे, रावण बध थयो जोयरे ॥ वा० ॥ ५९ ॥ व्रत-
 धारी नवि सांजलेरे, एहवा विरही वयणरे । कहे
 जिन हरख धीरम टलेरे, चित्त चले सुणि सयणरे
 ॥ वा० ॥ ६० ॥

दोहा—

ठठी वाडे इम कह्यो, चंचल मन म निगाई ।
 खाधो पीधो विलसियो, तिणिसुं चित्तमलाई ॥६१॥

काम भोग सुख प्रार्थ्या, आपे नरक निगोद । पर-
तिखनो कहेवो किसो, विलसे जेह विनोद ॥६२॥

॥ ढाव ७ मी ॥

आजनी हेजो दीसे नाहलो ॥ एदेशी ॥

चर जोवन धन सामग्री लही, पामी अनुपम
जोगोजी । पांचे इन्द्री ने वसी जोगव्या, पांचे
भोग संजोगोजी ॥ ज० ॥ ६३ ॥ ते चितारे
ब्रह्मचारी नहीं, धुर जोगविया सुखोजी । आसी
विसविस साल समोपमा, चीतारथायइ डुक्खो-
जी ॥ ज० ॥ ६४ ॥ सेठ माकंदी अंगज जाणिये,
जिण रक्खीतेण नामोजी । जहू तणी शिक्षा
सहु विसरी, व्यामोहित वसी कामोजी ॥ ज०
॥ ६५ ॥ रयणादेवी सन्मुख जोयो, पूरव प्रीति
संजारोजी । तो तीखी करवाले विंध्यो, नांख्यो
जलधि मजारोजी ॥ ज० ॥ ६६ ॥ जोवो जिन
पालित पंडित थयो, न कीयो तास वेसासोजी ।
मूलगली पिण प्रीति न मन धरी, सुख संजोग
विलासोजी ॥ भ० ॥ ६७ ॥ सेलग जहू ततखिण
उधरयो, मिलायो निज परिवारोजी । कहे जिन

हरख न पूरव कीलिया, संचारे नर नारोजी ॥
भ० ॥ ६७ ॥

दोहा—

खाटा खारा चरचरा, मीठा चोजन जेह । मधुरा
मउल्ल कसायला, रसना सहु रस लेह ॥ ६९ ॥
जेहनी रसना वशी नहीं, चाहे सरस आहार ।
ते पामे दुःख प्राणियां, चउगती रुले संसार ॥ ७० ॥

॥ हाव ७ मी ॥

चरणाली चा मुंरिण चढे ॥ एदेशी ॥

ब्रह्मचारी सांजली वातकी, निज आतम हित
जाणी रे । वाकी म चांजे सातमी, सुणी जिनवरनी
वाणी रे ॥ ब्र० ॥ ७१ ॥ कवल ऊरे उपाकता, घृत
बिंदु सरस आहारोरे । तेह आहार निवारिये,
जिणथी वधे विकारोरे ॥ ब्र० ॥ ७२ ॥ सरस रस—
वती आहारे, दूध दही पकवानोरे । पाप श्रमण
तेहने कढ्यो, उत्तरा ध्ययन मकारोरे ॥ ब्र० ॥ ७३ ॥
चक्रवर्ति नी रसवती, रसिक थयो चूदेवोरे । काम
विटवण तिण लही, वरजी श नितमेवो ॥ ब्र० ॥ ७४ ॥
रसना चजजे लोलपी, लंपट लेण सवादोरे । मगूं

आचारिज परे, पामे कुगति विपादोरे ॥ ब्र० ॥७५॥
 चारित्र ठांकी प्रमादियो, निज सुतनी रज धानीरे ।
 राज रसवती वसिपड्यो, जोइ सेलगमद पानीरे ॥ ब्र०
 ॥ ७६ ॥ सबल आहारे बल बधे, बल उपशमे न वे-
 दोरे । वेदे व्रत खंडित हुवे, कहे जिन हरख उमेदोरे
 ॥ ब्र० ॥ ७७ ॥

ढोडा-

अति आहारथी दुःख हुवे, गले रूप बल गात ।
 आलस नींद प्रमाद घण, दोष अनेक कहात ॥७८॥
 घणे आहारे विसचके, घणोज फाटे पेट । धान अ-
 मामो ओरता, हांकी फाटे नेट ॥७९॥

ढाल ६ मी जंबूघ्नीप मजार ॥ एदेशी ॥

पुरुष कवल घत्रीश, जोजन विधिकही । अठा-
 वीश नारी जणीए । पंरुग नपुंसक कवल चउवीस
 अधिके दूपण होइ ॥ असाता अति घणीए ॥८०॥
 ब्रह्मव्रत धर नरनारी थाये, तेहने जणोदरीये गुण
 घणाए । जीमे जासक जेह, तेहने गुण नहीं अति-
 चार ब्रह्मव्रत तणाए ॥ ८१ ॥ जोइ कुंरुरीक मुणिंद,
 सहस वरस लगी, तपकरी करि काया दहीए ।

तिणि जागो चारित्र, आयो राजमें अति मात्रा रस-
वती लहीए ॥ ७२ ॥ मेवाने मिष्टान, विंजन नव
नत्रा । शालि दालि घृत लुचिकाए, भोजन करी
जरपूर सूतो निशी समे, हुई तास विसूचिकाए ॥ ७३ ॥
वेदन सही अपार, आरति रूद्रमई । मरिगयो ते
सातमीए, कहे जिन हरख प्रमाण ओछो जीमीयेए
वाकी कही ए आठमीए ॥ ७४ ॥

दोहा—

नवगी वाकी विचारीने, पालि सदा निरदोख ।
पामसी ततखीए प्राणियां, अविचल पदवी मोख
॥ ७४ ॥ अंगविचुषा ते करे, जे संजोगी होइ । व्रत
धारी तन सोजवे, तिहां कारण नवि कोइ ॥ ७६ ॥

॥ ढाल १० मी ॥

वीरा बाहुबल गजथकी उतरो ॥ एदेशी ॥
शोजा न करे देहनी, न करे तन सिणगार ।
उगंटणा पीठी वली, न करे किणही वारो “ सुणि
चेतन चेतन सुणि तुं तों मोंरी विनती, तोंनें सी-
ख कहुं हितकारी ” ॥ सु० ॥ ७७ ॥ उन्हा ताड़ा
नीरसुं न करै अंग अघोल । केशर चंदन कुंकुमें,

खांते न करे खोलो ॥ सु० ॥ ७७ ॥ घण मोलाने
 ऊजला, न करे वस्त्र वणाव । घाते काम महाव-
 ली, चोथा व्रतने घावो ॥ सु० ॥ ७८ ॥ कांकण कुं-
 कन्न मुंदडी, माला मोतीहार पहिरे नहीं सोचा-
 नणी, जे आये व्रत धारो ॥ सु० ॥ ७९ ॥ काम
 दीपन जिनवर कह्या, नूपण दूपण एह । अंग वि-
 नूपा टालित्री, कहे जिन हरख सनेहो ॥ सु० ८० ॥

॥ ढाल ११ मी ॥

आपसवारथ जगसहूरे ॥ एदेशी ॥

श्री वीर दोइ दस परपदा में, उपदिश्यो इम
 शील । जे पालिसी थल नव वाक्सुं ते लहसी हो
 शिव संपति लील ॥ ८१ ॥ शील सदा तमे सेव-
 ज्योरे, फल जेहनाहो अति सरस अखीण । आ-
 ठ करम अरियण इणीरे. ते पामेहो ततखीण सु
 प्रवीण ॥ शी० ॥ ८२ ॥ जलजलण अरि करी केस-
 री, भयजावे सघला चांज । सुर असुर नर से-
 वा करे, मन वंठित हो सीजे सहु काज ॥ शी० ॥
 ॥ ८३ ॥ जिनचुवन निपावे नवो, कंचनतणो नर
 कोइ । सोवन तणी कोइ कोनी देइ, शीलसमव

रु हो तोही पुण्य न होइ ॥ शी० ॥ ए५ ॥ ना-
रीने दूषण नरथकी, तिम नारीथी नर दोष । ए
वाडी बिहुं ने सारीखी,पालवी हो मन धरीसंतोष
॥शी०॥ए६॥ निधि नयण सुर शशी१७१ए चाद्रपद
वदी बीज । आलस्य छांकी, जिनहरख दृढव्रत पा-
लिजो, व्रतधारी हो जुगती नव वाडी ॥शी०॥ए७॥
इति श्री ब्रह्मचर्यव्रत विषेशीयलनववारु संपूर्ण-
म् ॥ ए३ ॥

॥ अथ श्रीआलोयण स्तवन ॥

दोहा-

आदिश्वर पहिलो अरिहंत, जय भंजण सामी
जगवंत । युगला धरम निवारण हार, मन वंठित
दोलत दातार ॥ १ ॥ चौरासी लख जोनि मजार,
कीधा पाप अनंती वार । ते जिनवर तुं जाणे सही,
तो पिण आलोवुं मुख कही ॥ २ ॥ पूरव पाप त-
णे परकार, पाम्यो नीच कुले अवतार । काज अ-
काज कीया जेतला, जव भवना दाखुं तेतला ॥३॥
जल चर थल चर पंखी जीव, मारया में पामंता
रीव । रात दिवस आहेके रम्यो, मृग मारे बावन

में जन्म्यो ॥ ५ ॥ रिण में हाथ गृही हथियार,
 सुजटा रां कीधा सिंहार । विण अपराधे घाट्या
 घाव, पिण पापी न कियो पछताव ॥ ५ ॥ पुर
 पाटण पर जाट्या गाम, अन दव दीधा ठामो
 ठाम । मील नवे कीधा बहु पाप, सघला जाणे
 तुं मांय वाप ॥ ६ ॥ पेट भरेवा पातक कियो,
 हणता जीव घणुं हरखियो । हिंसा दोष विचारयो
 नही, धवलो तेतो जाण्यो दही ॥ ७ ॥ हंस मोर
 सारस ने चास, रोज हिरण बलि पाड्या पास ।
 चारी करी हाथी जालिया, इण विधि पातिक व-
 हुला किया ॥ ८ ॥ माकरु जूं तावरु नाखिया,
 वीठू पकडी ने राखिया । मकोरा मारथा घीवेल,
 विल में ऊनो पाणी रेल ॥ ९ ॥ माखी ईली ने अलसि-
 या, कीडी गाद दीया गौमिया । सीप कातरा बलि
 चूरेल, वरसाले नाख्या पगवेल ॥ १० ॥ मंजारी
 राखी घर जाण, ऊदर भरता न धरी काण । कुत्ता
 पाली मोटा किया, असती पोषण न विचारिया ॥ ११ ॥

॥ ढाल १ ली ॥

कपूर हुवे अति ऊजलो रे ॥ एदेशी ॥

खांरुण पीसण रांधणे रे, सोवण जीमण ठाम ।
 पडिमणे जल उपरे रे, देहरासर हित काम रे ॥
 जिनवर साँचल एह अरदास (ए आंकणि)
 ॥ १२ ॥ आठे ठामे चन्दुआ रे, वांध्या नहीं रे
 लिगार । शक्ति ठता धन खर्चता रे, आणयो लो-
 भ अपार रे ॥ जि० ॥ १३ ॥ किधी चोरी पारकी
 रे, पाडी धाह अपार । परनी थापण ओलवी रे,
 न धरयो पाप लिगार रे ॥ जि० ॥ १४ ॥ हांसे जय
 क्रोधे करी रे । बोढ्या मृषावाद । परना गुण देखी
 करी रे, आणयो मन विषवाद रे ॥ जि० ॥ १५ ॥
 सारो दिन राते रह्यो रे, पर नारी ने संग । साते
 कुविसन से विया रे, पापी ने परसंग रे ॥ जि० ॥ १६ ॥
 पांचे इन्डी मोकली रे, सूकी जिण तिणठाम ।
 जोले पिण राख्यो नहीं रे, हियके जिनवर नामरे
 ॥ जि० ॥ १७ ॥ ब्रतलेइ चाज्यां वलीरे, न धरी
 गुरुनी काण । समकित शुद्ध न राखियोरे, चित्त
 न धरी जिनवाणरे ॥ जि० ॥ १८ ॥ अन्नद्ध अ-
 थाणा मद जख्यारे, रात्रि भोजन कीध । कंद मू-
 ल टाढ्या नहींरे, अणगल पाणी पीध रे ॥ जि० ॥

॥ १ए ॥ मधु माखण ने मांस नो रे, टालो न कर-
 रथो कोइ । जीज सवादे जीवनेरे, लागे पातिक
 सोइरे ॥ जि० ॥ १० ॥ माले पंखीमारियारे, ईना
 फोड्या कोरु । ते दूषण लागे घणारे, आलोउं क-
 र जोड रे ॥ जि० ॥ ११ ॥ बाल विछोडो मात ने
 रे, पास्यो कर्म विशेष । गाय न मेली वाठकी रे,
 पास्यो पातक देख रे ॥ जि० ॥ १२ ॥

॥ ढाल १ री ॥

सीखण सीखण चेलणा ॥ एदेशी ॥

गाम मुकाते मेलिया, अकराकर कीध । लोच
 करी जन मारिया, कूना आलज दीध ॥ अवधारो
 प्रनु विनती ॥ ए आंकणी ॥ तारो संसार, प-
 रमदयाल कृपाकरो मति राखो विचार ॥ अ० ॥
 ॥ १४ ॥ मोटा रूख ठेदाविया, कोधा आरंज ।
 हाट ह्वेडी कराविया, आप्या मोटाधंभ ॥ अ० ॥
 ॥ १५ ॥ रांगण पास मंकाविया, नीवाह अनेक ।
 घाणी करात्री अतिघणी, राख्यो न विवेक ॥ अ० ॥
 ॥ १६ ॥ निंद्या करता पारकी, टेन रात गमाया,
 भोला माणस चोलव्या, करी कूनी माया ॥

॥ अ० ॥ २७ ॥ लोह राठ वेच्या घणा, न करी
कांइ जयणा । धाहुकार पन्नाविया, दीधा नहीं दे-
णा ॥ अ० ॥ २८ ॥ करसण कूआ वावनी, वलि
सूरुने दाण । पापकरी पोतो जरथो, धरतो मद
माण ॥ अ० ॥ २९ ॥ कूना माप कराविया, की-
धा कूना तोल । घी ने तेल भेला किया, देखी बहु
मोल ॥ अ० ॥ ३० ॥ चानी करतां परतणी, जम-
वारो हारयो । खाधी लांच जिहां तिहां, मन मूल
न वारयो ॥ अ० ॥ ३१ ॥ आपण पौ वखाणियो,
निरगुण तज लाज । मात पिता मान्या नहीं, करतां
निज काज ॥ अ० ॥ ३२ ॥ देव अने गुरु धर्मनी,
न करी कांइ कांण । धरम ठाम पातिक कियो,
न धरी जिन आण ॥ अ० ॥ ३३ ॥ सात क्षेत्रे धन
खरचतां, किधी कृपणाई । आप सवारथ राचते,
केइ बात वणाई ॥ अ० ॥ ३४ ॥ सरवर द्रह जल
सोसिया, लाख वाणिज कीधा । दंत केस रस वि-
णजतां, लाख पातिक लीधा ॥ अ० ॥ ३५ ॥ साजी
साबू ने गूत्री, वलि सोमल खार । कुविणज करतां
किम हुवे, स्वामी बूटक वार ॥ अ० ॥ ३६ ॥ टंक-

ए लूण मोलाविया, आगर में जाय । लिहाला
 लेई वेचतां, किम जयणा थाय ॥ अ० ॥ ३७ ॥
 पुन्य ठाम आवी करी, विकथा परमाद । धर्म
 लेश सुणयो नहीं, कीयो मोटो वाद ॥ अ० ॥ ३८ ॥

॥ ढाल ४ थी ॥

इम अनरथ दंड लगाया रे, पिण थारे सरण
 नाया ॥ वलि सुलिया धान ज लीधा रे, पीसण
 जोया विण दीधा रे ॥ ३९ ॥ काचा फल तोकी खाधा
 रे, पर जीवन जाणी वाधा रे ॥ विषया रस स्वादे
 मातो रे, में काल न जाण्यो जानो रे ॥ ४० ॥ संयम
 लेइ नवि पाट्यो रे, पोतानो जन्म विटाट्यो रे ॥
 लख ज्ञाने दूषण लागा रे, तप करने केइ चागा रे ॥
 ४१ ॥ क्रोधे करी पाप उपाया रे, तप संयम मूल
 गमाया रे ॥ जिण जिणसुं माया मंकी रे, धर्म सेती में
 मति ठंकी रे ॥ ४२ ॥ गुरु पुस्तक विनय न कीधो रे,
 तिण कारज को नवि सिद्धो रे ॥ लोत्ते करी चित्त
 लपटाणो रे, मांखी मधू जेम चराणो रे ॥ ४३ ॥
 पातिक कर परिग्रह संच्या रे, वाते कर जन जन
 वंच्या रे ॥ ते अनरथ मूल न जाण्यो रे, मन कुमति

कदाग्रह ताएयो रे ॥४४॥ जिन मारग मूल न जा-
 एयो रे, जतने करी बांध्यो ताएयो रे ॥ चेला रे मोह्ये
 नडियो रे, तिण पाप अघोरे पडियो रे ॥ ४५ ॥
 विचरंता गोचरी काजे रे, जे दोष कह्या जिनरा-
 जे रे ॥ ते दूषण न टले कोई रे, दिन रात परंत
 रहोई रे ॥ ४६ ॥ मणि मोहरा औषधि मंत्रे रे,
 जडी ज्योतिष पारद तंत्रे रे ॥ जन रज्जी बहु धन
 मेढ्या रे, जूंआरीजूंअट खेढ्या रे ॥ ४७ ॥ चंचल
 इंद्रि नवि दमिया रे, इम आले नरत्नव गमिया रे ॥
 उपशम रस कोइ न आव्यो रे, जिन दरसण
 हिव पठताव्यो रे ॥४८॥ अपणो मत गाढो पोख्यो रे,
 फोगट पापे करी सोख्यो रे ॥ किरिया में मूल न पा-
 ली रे, आलसथी आतमा बाली रे ॥४९॥ तप वे-
 ढ्या ताक्यो ओलो रे, तप करी न सकुं हुं चो-
 लो रे ॥ वलिं सूत्र सिद्धान्त न जणिया रे, दूषण
 टाढ्या के गिणिया रे ॥ ५० ॥ कारज विण परघर
 जाई रे, बैठो परसंग पराई रे ॥ मुनिवर ने परघर
 वारथो रे, मन मांहीं ते न विचारथो रे ॥५१॥ इम
 पातिक जाणी दाख्या रे, छाना में कोई न राख्या

कहेतां जे चित्तानावे रे, जे जीव तुमे चे जावे ॥
 ५२ ॥ तुं त्रिचुवन तारण मिलियो रे, सघलारो
 संशय टलियो ॥ मुऊ आज मनोरथ सिधो रे, में
 जन्म कृतारथ कीधो ॥ ५३ ॥

॥ कलश ॥

इम आदि जिनवर सदा सुखकर सेवता संकट
 टले । कर जोरु करता वले वीनति सकल मन
 ववित फले ॥ जिनराज जगगुरु भांनसी से कमल
 हरपे हित जणी । अरदास एहवी करी सुपरे स-
 फत जव अपणो गिणी ॥ ५४ ॥

॥ इति श्री आलोचण स्तवन सम्पूर्णम् ॥ ५४ ॥

॥ अथ जक्ति मार्गनो कंटक ॥

राग सोरठ-ताल-लावणी-

चादर जीणी रास जीणी ॥ एदेशी ॥

माया काकण दूरे जागी, जिनगुणमा लय लागी
 ॥माया०॥ संत समागम करीने हुंतो, थयो वैरागी रे ॥
 जववृद्धिनो कारण माया, समकी मनथी त्यागी ॥
 माया० ॥१॥ अनंतकालथी साथे रहीने, दुःख आपछे
 नागी रे ॥ संत वचनथी दुःखकरजाणी, कीधी में तो
 आधी ॥ माया० ॥२॥ अज्ञाने जव वनमा जमत,

अयो मोहनो रागी रे ॥ शिवपदकारण सरल पणु
ठे, जोयुं हवे में जागी माया० ॥ ३ ॥

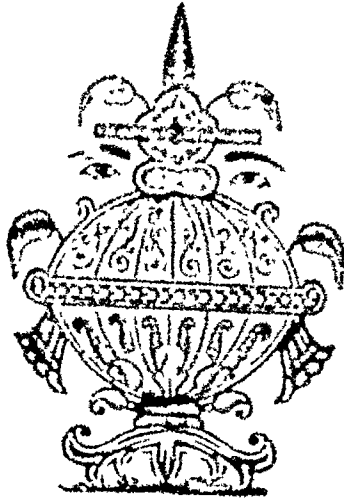
॥ इति पदम् संपूर्णम् ॥ ए० ॥

॥ अथ चक्ति रहितो नो उपाखंन ॥

राग जिंकोटी-ताल पंजाबी ठेको ।

जिन मुखसे प्रचु नामन समयों, तिनमुखमें तेरे
धुलपरी रे ॥ जिन० ॥ धिक तेरो जनम जिवात धिः-
क तेरो धिःक मानुपकी देह धरीरे, जीवित तात
सुवो नहीं तेरो क्यो जनम्यों तुं पाप करीरे ॥ जिन० ॥
१ ॥ प्रचु नाम विन रसना कैसी करो इनकी टुक-
का टुककी रे, जिन नेननसे नाथ न निरखत ति-
न नेननमें लुण जरी रे ॥ जिन० ॥ २ ॥ रत्न पदारथ
जनम मानखो, आवत नहीं सो फेर फरी रे, अब ते
रो दाव बन्यो है मूरख करना होय सो लेने करी-
रे ॥ जिन० ॥ ३ ॥ हाथ पसार कीयो नहीं सुकृत्य
तीरथ सन्मुख दगन जरी रे खीम कहे तुं चूलो
आयो तेरी खाली खेप परी रे ॥ जिन० ॥ ४ ॥

सम्पूर्णम्.



मिलने का पता—

जं० यु० श्रीजिनदत्तसूरि आनन्दचन्द्र पाठशाला.

मगनीराम भभुतसिंह

रतलाम (सी० आई०)

